राधा कृष्ण श्रीमाली

मंत्र शक्ति



D—536

कुछ लोग यह शंका करते हैं कि आज यन्त्र-मन्त्र का प्रभाव क्यों नहीं है ? क्या यन्त्र-विद्या लुप्त है ? इसका उत्तर एक ही है कि यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र की शक्ति लुप्त कैसे हो सकती है ? समुद्र कभी सूख सकता है ? क्या सूरज कभी निस्तेज हो सकता है ? यन्त्र विद्या भी ठीक ऐसी ही है। आवश्यकता है विश्वास की, साधना की, शक्ति की, श्रद्धा की, त्याग की, कठोर ब्रह्मचर्य पालन की। विश्वास रखें, ऐसा होने पर सफलता आपके कदम चूमेगी।

यन्त्र-मन्त्र अलौकिक हैं। यह वह शक्ति है जो मानव की सहज ही में इच्छा पूर्ति करने में समर्थ है। वेदों से उद्भाषित मंत्र असत्य हो सकते हैं, ऐसा कहना मूर्खता नहीं तो और क्या है ? वेद ब्रह्मवाक्य हैं और मंत्र शास्त्र से ही यन्त्र व तन्त्र शास्त्र जाना जाता है। प्रस्तुत पुस्तक निश्चयही इस दिशा में मार्गदर्शक होगी।

डायमण्ड पाकेट बुक्स में
राधाकृष्ण श्रीमाली की अन्य पुस्तकें

वृहद हस्तरेखा
भारतीय ज्योतिष
ज्योतिष सीखिये
ज्योतिष और रत्न
अंक ज्योतिष
तंत्र शक्ति
यंत्र शक्ति

राधाकृष्ण श्रीमाली

'ॐ'

मंत्र शक्ति

प्रकाशक :
डायमण्ड पाकेट बुक्स
2715, दरियागंज (मोती महल के पीछे)
नई दिल्ली-110032

वितरक :
पंजाबी पुस्तक भण्डार
दरीबा कलाँ, दिल्ली-110006

मूल्य : छः रुपये

मुद्रक : बन्धु प्रिंटिंग सर्विस कं०, दिल्ली-32

Mantra Shakti by Radha Krishan Shrimali [redacted]

दो शब्द

स्नेहशील पाठक !

नि:सन्देह आप कोई ऐसी पुस्तक देखने को लालायत थे, उत्सुक थे, जिसमें आपको अपनी सम्पूर्ण समस्याओं का हल सांगोपांग ढंग से मिल सके। ऐसी सामग्री हो जो अपने आप में पूर्ण हो, बोधगम्य हो, तथा सरल व स्वाभाविक हो। जहां मैं लेखक हूं वहीं अभी तक अपने आपको पाठक भी मानता हूं। यत्र-तत्र खूब घूमा-फिरा हूं। बहुत कुछ खोकर बहुत से अधिक पाया भी है। 'पड़्यो अपावन ठौर पे कंचन तजे न कोय' के अनुसार मुझे सीखने का, समझने का जहां भी अवसर मिला, मैंने पाने का अथक प्रयास किया है।

इस युग को 'कलयुग' अर्थात् मशीनी युग की संज्ञा दी जाती है और यह सत्य भी है। आज मनुष्य मशीनों का दास बन गया है। विश्व प्रगति पथ पर बहुत आगे बढ़ गया है। लाखों-लाख मील की दूरी पर स्थित ग्रह लोकों पर जा पहुंचने की हिम्मत कर चुका है। प्रगति के रहस्यों को भेदने का सतत् प्रयास कर रहा है। और आगे और आगे बढ़ने का प्रयास कर रहा है वह। दुःख इस बात का है कि इस प्रगति की होड़ में वह निरन्तर नास्तिकता की ओर भी बढ़ रहा है। ऋषि-महर्षि, दैवज्ञों-पूर्वजों की विद्या तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र शक्ति के प्रति उपेक्षित होता जा रहा है। यह सब कुछ उसे झूठ, व्यर्थ, बकवास, फालतू व निरर्थक-सा लग रहा है। हर कदम पर वह उसकी आलोचना करने से नहीं चूकता। परन्तु मेरा यही कथन है कि आलोचना करने से पूर्व इसकी सत्यता का परीक्षण तो करें, तब आलोचना करें। आलोचना में सत्यता कहां तक है ? एक समय था जब बालक गुरु ग्रह में पढ़ने जाया करता था। धनुर्विद्या में वे निपुण हो जाते थे। रामायण या महाभारत उठा कर देखें। मन्त्र बल पर शत्रु पर

अग्नि बाण या वरुण बाण छोड़े जाते थे। मन्त्र बल से ही विजयश्री प्राप्त करते थे। कितनी प्रगति थी मन्त्र विद्या की। पुष्पक विमान था, इसे कोई नकार सकता है ? क्या मात्र कल्पना थी ? मूलतः मन्त्र-यन्त्र एक श्रेष्ठ विद्या है। अथर्ववेद भरा पड़ा है मन्त्र शक्ति से। मंत्रों में दिव्य शक्ति समाई हुई है। इससे यदि किसी देवता की करुणा प्राप्त की या प्रार्थना की तो इष्ट देवता प्रसन्न होता है। बड़े-बड़े असाध्य कार्य साध्य हो जाते हैं।

यन्त्र-मन्त्र अलौकिक हैं। यह वह शक्ति हैं जो मानव की सहज ही में इच्छा पूर्ति करने में समर्थ हैं। वेदों से उद्भाषित मंत्र असत्य हो सकते हैं, ऐसा कहना मूर्खता नहीं तो और क्या है ? वेद ब्रह्मवाक्य हैं और मन्त्र-शास्त्र से ही यन्त्र व तन्त्र-शास्त्र जाना जाता है।

एक समय वह भी था जब हर घर में वेद ध्वनि गूंजती थी। दिग्दिगन्त में वेदों का, वद मन्त्रों का उद्घोष होता था। पवित्र वातावरण रहता था धूपादि से। यन्त्र व तन्त्रों के माध्यम से हमारे ऋषि-महर्षियों ने स्वयं के जीवन को सुखमय, ऐश्वर्यमय, आनंदमय, पुण्यमय बना लिया था। वे दीर्घायु थे, शतायु थे, स्वस्थ व सबल थे। कालान्तर में बाह्य आक्रमण, घरेलू फूट व यवन अत्याचारों के समय यन्त्र-मन्त्र का लोप होता चला गया। धीरे-धीरे इनके प्रति अविश्वास, अश्रद्धाभाव पनपता गया। यह प्रसन्नता की बात है कि धीरे-धीरे आज पाठक जिज्ञासु बन रहा है।

कुछ लोग यह शंका करते हैं कि आज यन्त्र-मन्त्र का प्रभाव क्यों नहीं है ? क्या यन्त्र विद्या लुप्त है ? इसका उत्तर एक ही है कि यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र की शक्ति लुप्त कैसे हो सकती है ? समुद्र कभी सूख सकता है ? क्या सूरज कभी निस्तेज हो सकता है ? यन्त्र-विद्या भी ठीक ऐसी ही है। आवश्यकता है विश्वास की, साधना की, शक्ति की, श्रद्धा की, त्याग की, कठोर ब्रह्मचर्य पालन की। विश्वास रखें, ऐसा होने पर सफलता आपके कदम चूमेगी।

कर्मभूमि में सफलता मिले, इस हेतु कई एक साक्ष्य हैं, यन्त्र-मन्त्र उनमें सर्वोपरि हैं। तारा-समूहों में मयंक उपमित है। ऐसा कुछ है। मृतों में प्राणों को संचारित करने की संजीवनी शक्ति

मन्त्रों में है। विषधरों का विष उतर जाता है मन्त्रों से। मन्त्र-शक्ति से भूत-प्रेत-पिशाच बोलने लगते हैं।

मेरी जिज्ञासा सदैव यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र में रही है। जैसे-जैसे आयु बढ़ती गई, भ्रमण बढ़ता गया, सीखने की ललक विकसित होती गई, रुचि में मार्जन होता गया। जहां स्वयं दादा-चाचा-ताऊ-पिता बहुत बड़े सिद्ध थे, वहीं ननिहाल पूरा कर्मकाण्डी रहा है। प्रातः-सायं जहां वेद-ध्वनि गूंजती थी, ऐसे वातावरण में पला; बड़ा हुआ, समझा! वही कुछ सार रूप में पाठकों को सौंप रहा हूं।

मैं जानता हूं आज का एक बहुत बड़ा वर्ग इसे पढ़ कर भी नाक-भौं सिकोड़ेगा, कटाक्ष व आलोचना करेगा। पर ऐसे वर्ग से यही कहना है कि एक बार वे प्राण:प्रण से, पूर्ण निष्ठा भाव व श्रद्धा से अनुष्ठान करें और तब अवश्य आलोचना करें, प्रसन्नता होगी।

यन्त्रों में, मन्त्रों में बहुत बड़ी शक्ति है, पर आवश्यकता है तो सद्गुरु की। स्वच्छा से उल्टा-सीधा कार्य करने पर हित की अपेक्षा अहित हो सकता है। अतः जो भी प्रयोग करें वह जान-कार की छत्रछाया में रहकर करें। खोजें और इच्छित की प्राप्ति न हो, मैं इसे नहीं मान सकता। प्रथम दीक्षा फिर शिक्षा और निर्दिष्ट मार्ग पर चलें, सफलता निश्चय ही चेरी बनेगी।

उदारमना भाई सम श्री गुलशन राय का आभार प्रकट करता हूं कि जिनके सद् प्रयत्न से लेखक आपके समक्ष पुस्तक रूप में आ सका। आभार प्रकट करता हूं गुरू व प्रेरणा स्रोत श्री विमल सिन्हा प्रोफेसर हिन्दी विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय व श्री रामसुख फलोदी का, जिनकी इच्छा एवं लेखक को ऊपर उठाने की भावना ने मुझे प्रेरित किया।

आपका

राधाकृष्ण श्रीमाली

ज्योतिष अनुसंधान कार्यालय
सी जी 33, हाई कोर्ट कालोनी
जोधपुर (राज०)
फोन नं० 25625

अनुक्रम

मन्त्रसिद्धि : कुछ आवश्यक अंग	...	9
मन्त्र-यन्त्रादि का वैज्ञानिक रहस्य	...	13
क्या यन्त्रों में शक्ति है ?	...	19
यन्त्र-मन्त्र और तन्त्र	...	27
ग्रह शांति के सरल उपाय	...	30
कुबेर यन्त्र	...	36
मन्त्र चिकित्सक	...	46
गणपति एवं गायत्री मन्त्र	...	55
गणपति मूलमन्त्र, गणेश गायत्री मन्त्र उच्छिष्ट गणेश मन्त्र, गणेश शाबर मन्त्र		
मनपसन्द संतान प्राप्ति के योग	...	59
वशीकरण, आकर्षण और मोहन के तांत्रिक प्रयोग		62
विभिन्न तन्त्र	...	70
आकर्षण तन्त्र, मोहन तन्त्र, नेत्र रक्षा और मन्त्र, सम्पुटित श्रीसूक्तम्, वीसा यन्त्र ।		
प्रेतात्माओं के चमत्कारिक कार्य	...	85
कठिन कार्य की पूर्ति वास्ते अनुष्ठान	...	92
अमोघ दुर्गेश महामन्त्र	...	94
शिवरात्रि: उद्भव और विकास	...	96
यन्त्र-मन्त्र एवं तन्त्र के तत्व	...	103
शिव पूजन	...	109
विभिन्न प्रकार के कौतुक	...	126
वशीकरण मन्त्र और तन्त्र	...	138
मंगल शांति प्रयोग	...	146
दारिद्रय निवारणार्थ लक्ष्मी प्रयोग	...	151
कुछ विशिष्ट साबर मन्त्र	...	155

मंत्र-सिद्धि : कुछ आवश्यक अंग

मन्त्र-सिद्धि कर लेना कोई इतना आसान कार्य नहीं कि जिसके मन में आया वही मन्त्र-सिद्धि कर ले। फलतः तन्त्र-यन्त्र-मन्त्र प्रयोग के लिए बिना गुरु के प्रयास करने के कारण प्रायः विफलता का मुंह देखना पड़ता है। यही कारण है कि आज इस ओर आलोचना हो रही है। यन्त्र-मन्त्र असफल होने लगे हैं। पूर्ण विश्वास, पूर्ण श्रद्धा-आस्था की पृष्ठभूमि पर ही यह सफलता टिकी है। मन्त्र-प्रयोग पर पूर्ण आस्था ही मन्त्र-प्राप्ति हेतु विधिवत रूप से गुरु से शिक्षा ली जानी चाहिए अथवा पुस्तक से मन्त्र प्राप्त करके सिद्धि की जाय यद्यपि गुरु के अभाव में सफलता संदिग्ध ही रहती है। यन्त्र-विज्ञान सम्बन्धी ग्रन्थों में शुभारम्भ हेतु भिन्न-भिन्न समय, नक्षत्र, दिन, वार, काल का उल्लेख है। चैत्र को दीक्षार्थ 'मलमास' माना है।

निम्न समय मन्त्रार्थ शुभ हैं—

तिथि—द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, पूर्णिमा।

दिन—सोमवार, रविवार, गुरुवार एवं शुक्रवार।

नक्षत्र—अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति।

तन्त्र शास्त्र में 18 सिद्धि विद्याओं का वर्णन मिलता है जिनमें 10 महाविद्यायें हैं। इनके मन्त्र ग्रहण करने में कोई विचार नहीं होता। 10 महाविद्याओं को दो भागों में बांट सकते हैं—

(1) काली कुल (2) तारा
(3) भुवनेश्वरी (4) छिन्नमस्ता

श्री कुल के अन्तर्गत

(1) त्रिपुरसुन्दरी (2) भैरवी
(3) छिन्नमस्ता (4) कमला
(5) धूमावती (6) मातंगी

इस प्रकार सब मिलाकर 19 महाविद्याओं के मन्त्रों को प्रत्येक जातक ग्रहण कर सकता है। पात्रता का स्पष्ट संकेत मात्र गुरु दे सकता है। इसीके साथ मन्त्र-यन्त्र-सिद्धि हेतु कुछ अनिवार्य से निम्न नियम हैं—

(1) मन्त्र का प्रथमाक्षर, नाम का प्रथमाक्षर कुलाकुल चक्रानुसार जो आगे स्पष्ट किया है, एक ही कोष्ठक में हो तो मन्त्र साधक के कुल का होता है और साधना सफल होती है।

कुलाकुल चक्र

वायु	अग्नि	भूमि	जल	आकाश
अ आ	इ ई	उ ऊ	ऋ ॠ	ऌ ॡ
क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
ष	क्ष	त्र	स	ह

कुलाकुल चक्र में अपने नाम का प्रथम अक्षर जिस कोष्ठक में हो वह देखें। तदुपरांत मन्त्र के प्रथम अक्षर को देखें, वह किस कोष्ठक में हैं। दोनों अक्षर मित्र तत्त्व के हों तो मन्त्र शुभ है अन्यथा अशुभ या निष्फल।

जल—भूमि = मित्र
वायु—अग्नि = मित्र
वायु—भूमि = शत्रु
जल—अग्नि = शत्रु
आकाश—सबाक = मित्र

(2) **नाम राशि और मन्त्र राशि**—नाम की राशि से मन्त्र की राशि 6/8/12वीं सवथा अशुभ रहती है। 1/5/9 उत्तम। यदि नाम राशि से मन्त्र राशि 3/7/11 हो तो सम मानें।

(3) **गण साधन**—गण तीन प्रकार के हैं—

(1) मनुष्य गण
(2) राक्षस गण
(3) देव गण

(4) **मन्त्र संस्कार**—तन्त्र शास्त्र में 10 संस्कार मन्त्र-साधन के बताये गये हैं। अधिकतम 5 दिन में इन दसों संस्कारों को कर लेना चाहिए। संस्कार निम्न हैं—

1. जनन संस्कार—एक त्रिकोण बनायें। त्रिकोण के तीनों कोणों में 6/6 रेखाएं बनाकर 49 त्रिकोण बनावें जिसका मातृका पूजन करें। तदुपरान्त सम्बन्धित देवता का आह्वान करें और मन्त्र के वर्ण का अलग-अलग पत्र लिखें। यह जनन-संस्कार है।

2. दीपन—इस मन्त्र को 'हंस' का सम्पुट लगाकर 1000 जप करने से दीपन संस्कार होगा।

3. बोधन—मंत्र का बोधन संस्कार करने के लिए 'हूं' बीज का सम्पुट देकर पांच हजार मंत्र जप करना पड़ता है।

4. ताडन—पेट से सम्पुटित 1000 जप।

5. अभिषेक—भोजपत्र पर मन्त्र लिखें और 'ॐ हंस ! ॐ से अभिमन्त्रित कर अभिषेक करें।

6. विमलीकरण—'ॐ यों वौषट् मन्त्र से संपुटित करें 1000 जप।

7. जीवन संस्कार—स्वधावषट् से सम्पुटित 1000 जप।

8. तर्पण—दूध, घी, जल द्वारा 100 तर्पण मूल मन्त्र से करें।

9. गोपन—ह्रीं वीज से सम्पुटित 1000 जप।

10. अप्यायन—ह्रौं बीज से सम्पुटित 1000 जप।

उपरोक्त संस्कार मन्त्र-साधना के आवश्यक अंग हैं जिनका मन्त्र साधना से पूर्व करना आवश्यक है।

(5) **पुरश्चरण**—संस्कार के उपराम्त मन्त्र पुरश्चरण करना

चाहिए। पुरश्चरण के जप, होम, तर्पण, अभिषेक ब्राह्मण भोजन ये 5 आवश्यक अंग माने हैं। जप में पूर्ण जप किया जाता है जितनी संख्या निर्दिष्ट हो। कम या विशेष न करें। जप के बाद निर्दिष्ट संख्या में हवन आवश्यक है।

मन्त्र जाप के साथ देव-पूजा व मन्त्र पूजा की अलग विशेषता है। तन्त्र-ग्रन्थों में पूजन-विधान कुछ भिन्न है। इनमें 5 प्रकार का शोधन किया जाता है। इसे पंच शुद्धयात्मक पूजन कहा जाता है। सर्वप्रथम मन्त्रों से भूमि शोधन, इसके उपरान्त आसन-शोधन, देह-शोधन न्यासादि। तत्पश्चात् द्रव्य देव, मन्त्र शोधन करना होता है। शोधन-संस्कार के लिए विधि विस्तृत है।

अन्त में माला का संस्कार किया जाता है। माला संस्कार के बाद इष्ट की प्राण-प्रतिष्ठा।

यन्त्र उत्कीर्ण करवाने के बाद शुभ मूहर्त में यन्त्र का विधि-विधान से पूजन होना चाहिए तथा नित्य प्रति षोड्षोपचार से पूजन करना सर्वोत्तम रहता है। सर्व प्रथम ऋद्धि-सिद्धि के दाता गणपति का पूजन वांछित है।

मंत्र-यन्त्रादि का वैज्ञानिक रहस्य

दैविक शक्ति से प्रेरित शब्द को ही हम सीधी भाषा में मन्त्र कहते हैं। मन्त्रोच्चारण करने पर एक विशेष ध्वनि कंपन अर्थात् वाईब्रेशन होता है जो स्वयं अपने आप में विशेष शक्ति रखता है। अटूट शक्ति है उसमें।

इस जगत में दो विधाओं का महत्त्व सर्वोपरि है—

(1) अध्यात्मिक (2) भौतिक

भौतिक विज्ञान जहां जड़ प्रधान है वहीं अध्यात्म विज्ञान चैतन्य प्रधान। भौतिक विधा में अनेक भौतिक साधनों की उपलब्धि परम आवश्यक है वहीं अध्यात्म के लिए मात्र कठोर आत्म-नियन्त्रण व साधना की जरूरत है। भौतिक विज्ञान जहां ऐहिक है वहीं अध्यात्म परा !

मन्त्र-विज्ञान का सीधा सम्बन्ध जा जुड़ता है, अध्यात्म विज्ञान से। एक प्रकार से अध्यात्म विद्या का महत्त्वपूर्ण अंग है मन्त्र। हमारे ऋषि-महर्षियों ने, अध्यात्मवादियों ने, दैवज्ञों, वेदज्ञों ने यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र द्वारा चमत्कारिक कार्य किए हैं। आज भी ऐसा सम्भव है। पर आवश्यकता कठोर साधना की है। गांव में आज भी ओझा लोग, सयाने झाड़-फूंक करने वाले जन्तर-मन्तर के रूप में यह कार्य करते हैं।

शब्द और शब्द उच्चारण स्वयं अपने आप में अद्‌भुत शक्ति रखते हैं। जर्मन के एक अध्यात्मवादी ने कहा था—

'अगर ॐ शब्द का जो अ उ एवं म् के संयोग से बना है, एक दीवार के सामने सही ढंग से उच्चारण किया जाय तो दीवार फट सकती है।'

गायत्री मन्त्र का महत्त्व भारतीय वाङ्मय में सर्वोपरि है। इसके शब्द मन्त्र कम्पन में अद्‌भुत अनोखी, अलौकिक शक्ति

निहित है। देववाक्य वेदों में मन्त्रों का अम्बार लगा है। अगर हम विज्ञान की कसौटी पर कसना चाहें तो उच्चरित शब्द ईथर नामक पदार्थ के माध्यम से समस्त ब्रह्माण्ड में व्याप्त हो जाते हैं। मन्त्रों में भी शब्दों की बनावट का विशेष महत्त्व है। भौतिक-विज्ञान में जिस प्रकार यन्त्र रचना का अच्छा महत्त्व है उसी प्रकार मन्त्र शब्दों का अपना अलग महत्त्व है।

अनादि ग्रन्थ वेदों में ऋषि, महर्षि, योगी, यति देवताओं, वेदज्ञों ने ईश्वर की दिव्य मूल सूक्ष्म शक्तियों से सम्बन्ध जोड़कर ऐसे मन्त्रों का निर्माण किया है जिससे मानव मात्र का शुभ हो सके।

मन्त्र दो प्रकार के हैं—(1) वैदिक (2) लौकिक। वैदिक मन्त्र वेदों में वर्णित कहलाते हैं तथा इनकी रचना सृष्टि के पूर्व अर्थात् सृष्टि के आरम्भ में हो गई थीं। वैदिक मन्त्रों में श्रेष्ठतम मन्त्र गायत्री महामन्त्र है। इसका आरम्भ से लाखों लोग लाभ उठाते आ रहे हैं। शारीरिक, मानसिक, आत्मिक, आध्यात्मिक शक्तियों का विकास गायत्री मन्त्र से होता है। कठोर श्रम वैदिक मन्त्रों की सफलता की कुंजी है। आज हम सर्वत्र देखते हैं कि साधक साधना तो करना चाहता है पर श्रम से जी चुराता है। फलतः असफलता का दामन थाम लेता है। भगवान शंकराचार्य, महर्षि दयानन्द, विवेकानन्द, रामतीर्थ आदि महामानवों ने वैदिक मन्त्रों द्वारा ही अपना अखिल विकास किया था।

अन्य प्रकार के मन्त्र लौकिक यन्त्र कहलाते हैं जो जन-जन में व्याप्त हैं, प्रचलित हैं। गुरु गोरखनाथ एवं उनके शिष्य ने वैदिक मन्त्रों को सर्वजन के लिए कठिन साध्य जानकर प्राचीन यन्त्र ग्रन्थों की मदद से साधारण मन्त्रों का निर्माण किया। अज्ञानवश सर्व साधारण ने इन्हें मनचाहे रूप में ढाला एवं उपयोग किया। शाबरनाथ ने कुछ मन्त्रों का नव निर्माण किया जो आज 'शाबर मन्त्र' नाम से प्रचलित हैं। आज भी कई एक लोग 'शाबर-मन्त्रों' की साधना करते पाये जाते हैं। जैन सम्प्रदाय में यतियों ने भी तन्त्र-मन्त्र-यन्त्रों की रचना की है। घण्टाकरण मन्त्र जैन यतियों का प्रमुख मन्त्र है। मारण मन्त्र, मूठ, चौकी, वशीकरण के रूप में मन्त्रों का दुरुपयोग भी आवश्यकता से अधिक किया है।

श्मशान विचरक, अघोरी, वैतालिक, कापालिक यद्यपि लौकिक मन्त्रों व श्मशान सिद्धि की तांत्रिक क्रियाओं द्वारा कई चमत्कारिक कार्य जैसे अदृश्य रूप से वस्तुएं मंगवाना, बाजार बन्द करना, कढ़ाई चढ़ाना, एक वस्तु को दूसरी वस्तु में बदलना, दुर्बल की चेतना शक्ति को अपने अधीन कर मृत सम बना देना जैसे कार्य करते हैं। पर मैंने देखा है ऐसे लोग अन्ततः शांति को प्राप्त नहीं होते एवं अधोगति को प्राप्त होते हैं। सर्व विद्या द्वारा अनेक साधकों ने कालमुख से कई लोगों को खींचा है। मेरे पिताजी का दावा था कि किसी प्रकार के सर्पदंश होने पर मृत्यु से पूर्व कोई उन तक पहुंच जाये तो वे उसे मरने नहीं देते थे। मैंने स्वयं देखा है वे मन्त्र बल से काटने वाले सर्प को बुलाकर काटे स्थान पर पुनः जहर चूसने की क्रिया की सामर्थ्य रखते थे। श्मशान में झाड़ागर, ओझा केवल तांत्रिक क्रिया द्वारा ही प्रेतात्माओं का साक्षात्कार नहीं करते अपितु उनके लिए उनके द्वारा उच्चारित मन्त्रों के कम्पन का भी महत्त्वपूर्ण हाथ है।

मन्त्रों का योगदान सम्मोहन में भी कम नहीं है। अस्तु, आज यत्र-तत्र सर्वत्र जादूगर भी सम्मोहन की क्रिया द्वारा लोगों को मोहित करते हैं, यह मन्त्रों का ही प्रभाव है। सपेरे मन्त्रों का सहारा लेकर सांप, अजगर आदि का खेल करते हैं। मन्त्रों द्वारा कढ़ाई बांधी जाती है, अग्नि प्रज्वलित की जाती है। मन्त्रों द्वारा वृष्टि सम्भव है। मन्त्र बल से मूसलाधार वर्षा को रोका जाता है। तिब्बत, अफ्रीका, भारत, ब्राजील, कोरिया, सिक्किम आदि के निवासी अपने-अपने देशों में प्रचलित मन्त्रों के माध्यम से वृष्टि बन्द भी कर लेते हैं।

'एस्ट्रोलॉजिकल मेग्जीन' में एक लेख छपा था। उसमें उल्लेख था कि लामा लोग मन्त्र-बल द्वारा ओलों की वृष्टि कर सकते हैं, वे लोग आध्यात्मिक अनुभवों को समझ नहीं सकते, वे इसे मात्र भ्रामक बुद्धि वाले लोगों के कार्य कहकर मजाक उड़ा सकते हैं। इसका मूलभूत कारण है उत्तरोत्तर, दिनोंदिन बढ़ता भौतिकवाद और उसका प्रभाव। जब बादलों की गर्जना व ओलों के तूफान आये होते हैं, तिब्बती लामा अपनी धर्म पुस्तक लेकर उसमें से कुछ मन्त्र भी पढ़ते हैं। ओलों से पूर्व जो मेघ-गर्जन होता है,

सर्वप्रथम उन्हें बंन्द करना पड़ता है, तदुपरांत जब सचमुच ओले गिरने लगते हैं तब लामा लोग अपने हाथ में तुरन्त ही ओले लेकर खेत में जाते हैं और जिस दिशा में ओले आते देखते हैं, उधर सरसों के दाने छिड़ककर कुछ मन्त्र पढ़ते हैं। तद्रनन्तर ओलों का गिरना बन्द हो जाता है मन्त्रोच्चार से वायु मण्डल में जो कम्पन होता है वह ओले पर विद्युताघात सदृश कार्य करता है। इंग्लैण्ड की रानी एलिजाबेथ हिमाचल प्रदेश में बसे एक राजा के यहां मेहमान हुई और उसके द्वारा देखे गए लामा के आश्चर्यजनक चमत्कारिक कार्य का उसने इस प्रकार वर्णन किया—"रियासत के महाराजा ने वर्षा में हमें लामाओं का नाच देखने बुलाया। यह नृत्य साधारणतः खुले मैदान में होता है। मैंने महाराजा से पूछा—'क्या लामाओं के सुन्दर वस्त्र वर्षा में खराब नहीं हो जायेंगे ?' महाराजा ने उत्तर दिया—'नहीं, मेरे लामा मन्त्र पढ़कर वर्षा को रोक सकते हैं।'

उस दिन जब मूसलाधार मेंह बरस रहा था—हम वाटरप्रूफ छातों से सुसज्जित होकर घर से निकले। परन्तु जब हम राज-भवन के विशाल आंगन में पहुंचे, जहां नृत्य आरम्भ होने ही वाला था, तो वहां वर्षा की एक बूंद नहीं गिर रही थी। किसी रहस्यमय विधि से वे लोग आंधी-पानी को अपने वश में करने की क्षमता रखते हैं। (ट्रिब्यून 20 जनवरी 1941)

मन्त्र-साधना विश्वबन्धुत्व व विश्व-कल्याणी भावना से ग्रहण करनी चाहिए। मन्त्र-साधना से मानव में अद्भुत दिव्य शक्ति का प्रादुर्भाव होता है। मन्त्रों द्वारा रोगों पर आश्चर्यजनक रूप से नियन्त्रण पाया जाता है।

आत्मा अनेक रहस्यमयी शक्तियां हैं जिन्हें जागृत करने की अनेकानेक विधियां हैं। तन्त्र उनमें से एक विशिष्ट प्रणाली है। तांत्रिक विद्या के साधक को प्रयोगात्मक रूपेण काफी कार्य करना पड़ता है। साथ ही साधक को साहसी, आत्मविश्वासी व निर्भय बनना परमावश्यक है।

तन्त्र-उत्पत्ति भगवान शिव के मुखारविंद से मानी गई है। मूलतः 28 तन्त्र हैं। उदाहरणार्थ यमल, भैरव इत्यादि। स्वयं शिव ने कहा है—

'सप्त सप्त सहस्राणि तन्त्राण्याहुर्वरानने ।'

जन-साधारण तन्त्र का अर्थ टोटके से लेते हैं जिसके कि अद्भुत कार्य प्रायः देखने को मिलते हैं। अशिक्षित समाज में टोने-टोटके कुछ विशेष ही प्रचलित हैं। मुझे वर्षभर पहले की घटना याद आती है। एक विशेष रोग है जिसमें आंख की पलक पर गांठ हो जाती है। इस रोग में एक गांठ मिटती तो दूसरी हो जाती है। इस प्रकार सात गांठें होती हैं। स्कूल में एक चपरासी ने मुझसे कहा—मा'साब ! आप किले की ओर मुंह कर सात बार थूकें गांजणी ठीक हो जाएगी।

बहन छोटी थी लगभग 4-5 माह की। इसने दूध पीना छोड़ दिया। सभी चिंतित ! एक पड़ौसन ने कहा—'अम्माजी, सात जाति की स्त्रियों से थुथकारा डलवाएं, मुन्नी दूध पीने लगेगी।' और सचमुच ऐसा ही हुआ।

कामरूप (आसाम) छत्तीसगढ़ (म० प्र०) में इसका काफी प्रचलन है। तन्त्र साधना के दो मार्ग हैं—(1) दक्षिण मार्ग (2) वाम मार्ग। जहां दक्षिण मार्ग सात्विक मार्ग है, ईश्वरीय शक्तियों को स्व-आत्म तेज द्वारा प्राप्त कर अनुकूलता ग्रहण करते हैं सात्विक गुणों में निरन्तर विकास कर पंचकोष, सप्तप्राण, कुण्डलिनी उपत्रक योगिनी, भैरवादि को जागृत करना ही इस मार्ग का कार्य है। मध्यकाल में गुरु गोरखनाथ, चर्पटनाथ, साबरनाथ आदि ने तांत्रिक साधना में नये-नये संशोधन किए। अपने में एक अलौकिक विद्युत् शक्ति तांत्रिक उत्पन्न करता है और उसीसे कई चमत्कारी कार्य सम्पन्न करता है।

दूसरा आम मार्ग है। मध्यकालीन युग में इसका प्रचार-प्रसार भी खूब ही हुआ। कापालिक, अघोरी, वैतालिक, ओझा आदि इसी मार्ग का अनुसरण करते हैं। कामक्षा देवी का मन्दिर कापालिकों का कभी गढ़ था। सोमनाथ महालय गुजरात में भी

तांत्रिक रहते थे।

वाम मार्गियों का साधना-स्थल श्मशान भूमि होता है। अमावस्या ग्रहण आदि की मध्यरात्रि में श्मशान में बैठकर तांत्रिक साधना करते हैं। कुछ ही परिश्रम से भूत-प्रेत पिशाच-बैताल आदि सिद्ध कर लेते हैं। तदुपरांत उनसे मनचाहा कार्य करवाते हैं। मुख्य कार्य वस्तु मंगवाना, रेत, पत्थर आग की वर्षा करना, वस्तुओं को गायब करना इनका प्रमुख कार्य है। तांत्रिकों को श्मशान में अनेक समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। भयावने, डरावने विकराल, प्रेत या जानवर भयंकर गर्जन, चकाचौंध, प्रकाश, सर्पादि के दर्शन होते हैं। वास्तव में इसीसे तांत्रिकों की परीक्षा होती है। पर-काया-प्रवेश व स्वरूप-परिवर्तन भी तन्त्र-साधना की क्रिया से सम्भव है।

आज आवश्यकता है सात्विक मार्ग अपनाकर तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र को जनोपयोगी बनाने की।

क्या मंत्रों में शक्ति है ?

आज हर कोई व्यक्ति यह प्रश्न करता है कि क्या मंत्रों में शक्ति है ? क्या आप इससे अर्थात् मंत्रों के माध्यम से चमत्कार दिखा सकते हैं ? यह प्रश्न बहुत अधिक आश्चर्यजनक है। क्योंकि समस्त मंत्रों के शास्त्र और आर्यग्रंथ आज्ञार्थक क्रिया लिये हुए हैं। उनमें असत्य, अविश्वसनीय और कृश्य योग्य कुछ भी नहीं है। अब प्रश्न यह रहा कि चमत्कार का इसके लिए मंत्र की सिद्धि करना या मंत्र के चमत्कार दिखलाने के लिए मंत्र सिद्धि करना निम्न श्रेणी की बात ही कही जाएगी। मूल बात यह है कि मंत्र में तन-मन से आस्था होनी चाहिए, अटूट विश्वास होना चाहिए तो चमत्कार तो अवश्य ही प्राप्त हो जायेगा। फिर भी आस्था मंत्र नहीं है। कोई बिना आस्था के भी मंत्र का जाप करे तो उसे सिद्धि मिलकर ही रहेगी। क्या मंत्र जपना आस्था के लिए आवश्यक लक्षण नहीं है ? क्या मंत्र की अपने आप में शक्ति होने के सम्बंध में संशय और प्रश्न आज के भौतिक विज्ञान युग में दिये हैं ? भौतिक विज्ञान मूलतः कारणवादी है और इन्द्रियगम्य ज्ञान पर विश्वास करने वाला है। जड़ विज्ञान में स्थूल और बहिरंग पर विश्वास किया जाता है। जबकि भारतीय विज्ञान चेतन और आस्था पर निर्भर है। इसमें स्थूल व बहिरंग को महत्त्व कतई नहीं दिया गया है। वह अतिन्द्रीय ज्ञान है। भारतीय विज्ञान का अपना ज्ञान व प्रकार है, अपनी परम्पराएं हैं, अपना स्वरूप है और अपना अटूट, गहरा विश्वास है। फिर भी यह दुर्लभ तो है परन्तु असंभव कदापि नहीं है कि उसके रहस्य को कारणवादी विज्ञान की भाषा में समझाया न जा सके और उसके प्रकार को आज की तकनीकी शब्दावली में व्यक्त न किया जा सके। वस्तुतः कारण यह रहा कि कई वर्षों से इस शाखा परम्परा का ह्रास होता रहा और परम्पराएं आज भी क्षीण

होती जा रही हैं। आजकल लुप्तप्राय हैं चुकी है। विज्ञान के चलाये अर्थ सुलभ हवाई जहाज पर विज्ञान सम्मत प्रति उतरों पर तो सन्देह नहीं किया जा सकता है परन्तु मंत्रों पर ऐसा अविश्वास करते हैं, या कि किया जा सकता है। जितना अर्थ वज्ञानिकों ने भिन्न-भिन्न खोजों पर किया है, उसका 100वां भाग भी मंत्रों पर खर्च किया जाता तो स्थिति आज कुछ और ही होती। मंत्रों में जो विभिन्नताएं हैं या त्रुटन है वह यह है कि वह बाजार में प्राप्य नहीं है। यह एक ऐसी साधना है जिसे सभी व्यक्तियों को पूर्ण आस्था से करना पड़ता है। अन्य वस्तु तो मात्र अर्थ के बल पर खरीदी व बेची जा सकती है पर मंत्र वैसे नहीं। उदाहरणार्थ, हर व्यक्ति को जो भूखा हो अलग-अलग भोजन करना पड़ता है। मंत्र का प्रकार कम होने का प्रबल कारण तो कुछ और भी है, और वह है उसका गुप्त रखना और पात्र-कुपात्र का विचार! आज भोजन को निन्दित कहा जा सकता है पर उसको गुप्त रखना आवश्यक है।

मंत्रों में शक्ति है यह अटूट सत्य है। परन्तु मंत्र साधना क्यों और कैसे होती है इस प्रश्न का उत्तर देना मूलभूत आवश्यकता है। हमारे इस भौतिक शरीर में दो शरीर और हैं—(१) वैद्युतिक और (२) मानसिक। अपोलो ११ के यात्रियों के स्वास्थ्य के सम्बंध में जानकारी करने के लिए मीटर लगा दिया जाता है जो उसके शारीरिक विद्युत् प्रभाव की स्थिति की सूचना देता है और उसीके माध्यम से वैज्ञानिक धरती पर बैठकर अपोलो प्राणियों के स्वास्थ्य का हाल या कि वस्तुस्थिति को जान लेता है। अस्तु! हम जो खाते हैं उससे उक्त तीनों शरीरों को पोषण प्राप्त होता है और तीनों का पृथक्-पृथक् एवं संयुक्त कार्य तथा व्यापार है। हमारे स्थूल शरीर के प्रश्न के उतर में हमें यह भली प्रकार जान और मान लेना चाहिए कि आकाश में सूक्ष्म रूप में अन्य तत्व भी तो हैं। इन अन्यान्य तत्त्वों में आकाश भी गौण रूप से विद्यमान है। यह समस्त संसार जो भिन्न-भिन्न रूप और आकृति में दिखलाई पड़ता है वह मूलभूत इन्हीं पांच तत्त्वों की माया है। उनका अनुपात बिभिन्न प्रकार की आकृतियों, स्वभाव और गुणावगुण धर्म का कारण बनता है। इन तत्त्वों के प्रतीक अथवा तन्मात्रा जिस स्थूल में प्रजनन और संहार,

आकर्षण और विकर्षण का कारण बनती है। भारत में या भारतीय वाङ्मय में शब्द को ब्रह्म का प्रतीक माना जाता है। यहां तक कि ब्रह्म का गुणात्मक शरीर शब्द ही तो है। इस संसार में यदि शब्द को हटा दिया जाय तो मानव समाज मूक ही नहीं अपितु सम्पूर्ण जड़-चेतन और चैतन्यता स्थिर हो जायेगी और स्थिरता से उतक्रान्ति होगी जो महाविनाश का प्रतीक है। मंत्र मार्ग भी है और लक्ष्य भी। यह गुणात्मक सत्ता से चलकर गुणात्मक तीन अवस्थाओं में पहुंच जाता है और उस समय शब्द का सुस्पष्ट और प्रत्यक्ष दर्शन होता है। जागतिक सफलता और चमत्कार के लिए मंत्र का प्रयोग किया जाता है। हमारा शरीर ही नहीं, मन-मस्तिष्क भी इन तत्त्वों का अनुपात हमारे शरीरों फिजिकल, अष्ट्रल और साईकोलोजिकल रूप को भी प्रभावित करता है। मंत्रों में इन तत्त्वों को उत्कृष्ट और शान्त करने की शूक्ष्म व्यवस्था है (जैसी विधि आयुर्वेद में वात, पित्त कफ के शमनउद्दीपन के द्वारा रोग-निवारण में प्रचलित है।)

मंत्र मशीन से अधिक निर्दोष सबल और सरल है। एक बार सिद्ध करने पर इसे जहां चाहें प्रयोग में लाया जा सकता है और वह पूर्णरूपेण कार्य करता भी है।

भारत में आज भी अंधविश्वास से लेकर बड़े से बड़े रोग तक का या मनोभावों तक का इलाज करने वाले मंत्र विशेषज्ञ हैं। टिड्डी दल में एक टिड्डी को लेकर मंत्र द्वारा उसका मुख बांधने से सारे टिड्डीदल का मुख बन्द कर देने वाले आज भी मिल जायेंगे। सर्प के काटने पर मंत्र विधि से सर्प को बुलाना सामान्य बात है। मारण-मोहन-वशीकरण उच्चाटन आदि आज भी किये जाते हैं और यह कटु सत्य है। परन्तु मंत्रों में ऐसा क्यों होता है? इसका विश्लेषण करने की आवश्यकता न तो किसीने अनुभव की और न ही किसीने समझी। ऐसा सोचा भी नहीं कि ऐसा क्यों और कैसे होता है? यद्यपि आज जापान में इस ओर बहुत कुछ कार्य हो रहा है।

मंत्र की शुद्ध भावना शब्द हैं। इससे शब्द की ऊर्जा और भावना-शक्ति परस्पर गणित होकर कार्य करती है। शब्द किंवा ध्वनि को अनुपृष्ठ एवं अनुरदेध्य तरंगें विद्युत् की प्रतीरोधगामिनी तरंगों के साथ जब एक रूप हो जाती हैं तो मंत्र जागृत और

सिद्ध हो जाता है। मंत्र को सतत जपने से यही स्थिति आती है मंत्र साधना से। मंत्र का जप पहले साधक को मन; व्यवहार में नितान्त निर्मल करता है और निर्मल तन मन वाले व्यक्ति की तरंगें सबल, दीर्घ और इच्छित दिशा में गमन करने लगती है। इसलिए उसका मंत्र सभी भौतिक कार्यों को सिद्ध कर देता है।

सिद्धि कैसे मिले ?

आज जन-साधारण में यह चर्चा सुनने में आती है कि सिद्धियां प्राप्त नहीं होतीं और यह बहुत हद तक सही भी है? इसका मुख्य कारण हम लोगों के संस्कार, शिक्षा, आचार-व्यवहार ब्रह्मचर्य, रहन-सहन इत्यादि है। सबसे प्रथम संस्कारों को ही लीजिये कि माता-पिता जन्मज़ात कुमारों के जिनके कि हर प्रकार से सभी संस्कार होने की आवश्यकता है, वर्तमान समय की नई हवा से प्रभावित होने के कारण तथा अधार्मिक शिक्षा के प्रभाव में बहे होने के कारण किसी भी प्रकार के संस्कार करने में उन्हें कोई रुचि नहीं है। इससे वे जन्मजात ब्राह्मण कुमार भी असंस्कारी शुद्रवत् रह जाते हैं। जैसा कि स्मृतियों में स्पष्ट लिखा है—"जन्मना जायते शूद्रो, संस्कारात् द्विज् उच्यते।' जब वे असंस्कृत रहे गये तो फिर मंत्र दीक्षा के वे अधिकारी तो हो ही नहीं सकते। परन्तु फिर भी आचार्य लोग स्वदक्षिणा के लोभ में या धन से प्लावित होकर ब्राह्मणतत्त्व का दोष-परिहार किये बिना ही कालातिक्रमण हो जाने पर भी जैसे-तैसे उन्हें उपवीती बना ही देते हैं और बात-ही-बात में दीक्षित भी कर देते हैं। फलत: ब्राह्मण कुमार उपवीत को गले में इसलिए रख लेते हैं कि वह ब्राह्मण का प्रतीक चिह्न है परन्तु मैला हो जाने पर उसे गले से निकालकर साबुन से धोकर सुखा देते हैं। इतना ही नहीं सर्दी के दिनों में तो कई लोग ब्रह्मसूत्र की ब्रह्मगांठ को सुखाने में खूंटी पर लटका लेते है भूले भटके जब याद आ जाये तो गले में डाल लेते हैं। स्पष्ट है कि इस प्रकार उस ब्रह्मसूत्र का क्या महत्त्व रह जायेगा? केवल दिखाऊ यज्ञोपवीत उन द्विज पुत्रों के गले में यदाकदा पड़ा रहता है। इसके बाद ही विवाह-संस्कार भी जैसे-तैसे सम्पन्न हो ही जाते हैं। इसके अतिरिक्त

जितने भी संस्कार हैं उनसे पलायन। और कहीं-कहीं मौजूद है भी, इसे नकारा नहीं जा सकता। तो विधि-विधान में और बिना विधि में क्या फर्क रहा ?

यह तो हुई संस्कारों की वस्तुस्थिति। आज के युग में स्कूलों व कॉलिजों का अधिकांश भाग दुर्गुणों से पीड़ित है। उनमें अधिकांश जूते पहिने चाट आदि खाना, पेन्ट इत्यादि पहने खड़े-खड़े लघु शंका आदि करना आरम्भ में ही बालक सीख लेते हैं। जहां तक गुरु के सम्मान का प्रश्न है उसकी कल्पना भी व्यर्थ है। गुरु वर्ग को मारना-पीटना एक फैशन-सा हो गया है इससे बढ़कर शिक्षा का और क्या ह्रास हो सकता है ? फिर गुरुमुख उच्चरित हो भी तो कहां से ?

अब आचार-व्यवहार का भी भाव यह है कि जहां भारत वर्ष में—"आचारो प्रथमो धर्मः !" माना जाता था वहां स्नान आचमनादि का यह हाल है कि समय पर भूलकर भी कोई शय्या त्याग नहीं करता, उठते ही आजकल के लोगों को चाय और नाश्ता चाहिए जिसके बिना यह कहते सुना गया है कि चाय बिना स्फूर्ति उपलब्ध नहीं होती यानि कि स्फूर्ति का टॉनिक चाय है। अब उनके कथनानुसार दूध के गुण तो मारे ही जाते हैं। चाय पीते ही यह सिद्ध होता है कि चाय इत्यादि पीकर ही शौचादि से निवृत्त होने के लिए कदम उठते हैं तथा निवृत होकर समाचार-पत्र पढ़ने के लिए बैठ जाते हैं। स्मृति, वेद, पुराणों का पठन-पाठन इसके आगे समाप्तप्राय हो गया है। समय मिलते ही गर्मी में तो स्नान इत्यादि करेंगे परन्तु सर्दी हुई तो मुंह-हाथ तथा सिर पर जो लम्बी जटा रूपी बाल हैं उन्हें धो लेंगे। मेरा एक मित्र इसीको डाईक्लीनिंग होना कहता है। उसके बाद भोजन। इस प्रकार नित्य कृत्य में अन्यान्य कर्म रह जाते हैं। संध्याबन्दन तो कल्पना की बात हो गई है। इसी प्रकार अन्य कुकृत्यों के कारण आचार समाप्त हो गये हैं।

सत्य का नाम-निशान नहीं रहा। हम हर पल में छोटी-छोटी बातों में भी झूठ बोलने से नहीं कतराते। असत्य भाषण, कटु भाषण, निन्दित भाषण, परनिन्दा, छिद्रान्वेषण आदि कर्म करने में नहीं चूकते हैं। फिर धर्म शास्त्रानुसार सिद्धि हो तो कैसे ?

ब्रह्मचर्य की तो पराकाष्ठा विपरीत रूप में दिखाई देती है।

आज का बालक कल का युवा सभी सिगरेट पीना, पान खाना, तड़कीले भड़कीले वस्त्र पहनना आदि दुर्गुणों से व्याप्त है। कुसंगति में पड़कर भावी जीवन पर कतई ध्यान न देकर अपरिपक्व अवस्था में नाना प्रकार की बीमारियों के शिकार होकर असमय ही काल के ग्रास हो जाते हैं।

रहन-सहन भी आजकल अपरिग्रही के बजाय परिग्रही बनता जा रहा है। जिधर देखिये छात्र के आस-पास बनावटीपन दिखेगा। पतलून, पाजामा, कमीज, कोट, कुर्ता, बुशर्ट आदि दिखेगा। सत्य तो यह है कि लड़के और लड़की में भेद करना असंभव है। दूसरी ओर असहनशीलता छात्रों में घर कर गई है। इसका असर कुटुम्ब और परिवार पर भी दिखाई देता है।

पाठक ही बतायें ऐसी विपन्न अवस्था में सिद्धि हो तो कैसे हो ? इसके लिए हमें अपने धर्मशास्त्रों के अनुसार जन्मजात बच्चों के संस्कार तो तत्-तत् साक्षीय गृह सुविधानुसार करने चाहिए और प्राचीन परिपाटी के अनुसार गुरूकुलों का संचालन हो जिनमें राजनीति की शिक्षा भी हो परन्तु प्राथमिकता धार्मिक और सांस्कारिक शिक्षा की हो ताकि धर्म क्या है ? इसका भली प्रकार भान हो सके और नित्य नियमपूर्वक संस्कारिक शिक्षा-दीक्षा दी जाय ताकि वे गुरुकुल से निवृत्त होकर घर जाने पर नियमों का उल्लंघन न कर सकें। जब वे धर्माचरण में निवृत होकर संध्या इत्यादि कर्म करते रहेंगे तो उन्हें सिद्धियां अवश्यमेव प्राप्त होंगी और उन्हें गुरु-दीक्षा से मंत्र रहस्य इत्यादि भी ज्ञात हो सकेगें।

दुर्गा-सिद्धि कैसे हो ?

जगज्जननी कभी भी पुत्र की उपेक्षा नहीं करती जैसा कि अपराध-क्षमा प्रार्थना स्तोत्र में कहा है—

न मंत्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥1॥
विधेरज्ञानेन दविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत्।

तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥2॥
पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहव: सन्ति सरला:
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुत: ।
मदीयो यं त्याग: समुचितमिदं नो तव शिवे,
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥3॥
जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥4॥
परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि ।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि किं यामि शरणम् ॥5॥
श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातंको रंको विहरति चिरं कोटिकनकै: ।
तवापर्णे कर्णे बिशति मनुवर्णे फलमिदं
जन: को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥6॥
चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपति: ।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥7॥
न मोक्षस्याकांक्षा भवविभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुन: ।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी-रुद्राणी शिव-शिव भवानीति जपत: ॥8॥
नाराधितासि विधिना विविधोपचारै:
किं रूक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभि: ।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
धृत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥9॥
आपत्सु मग्न: स्मरणं त्वदीयं
करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि ।

नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः
क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥10॥
जगदम्ब विचित्रमत्र किं
परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि ।
अपराधपरम्परापरं
न हि माता समुपेक्षते सुतम् ॥11॥
मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि ।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ॥12॥

किन्तु यदि वह उपेक्षा नहीं करती तो हमें भी अपने कर्तव्य के प्रति इतिश्री नहीं कर देनी चाहिए। हम मां को मां मानकर पुकारें नहीं तो उपेक्षा ही होगी। यदि अनन्य भाव से मां को मां कहकर पुकारेंगे तो "सर्वस्यार्तिहरे देवी:" मां अवश्यमेव हमारे भी योगक्षम का ख्याल करेगी। अतः अनन्य भाव से दुर्गा सप्तशती का पाठ करे। दुर्गा सप्तशती मार्कण्डेय पुराण का अध्याय 81 से 93 तक का एक अंश हैं। इस अंश को कात्यायनी तंत्र के अनुसार मंत्र-शक्ति प्राप्त है। मंत्र में अक्षर ही होते हैं और उन अक्षरों में ईश्वरीय सत्ता नीहित है। इसलिए नाना प्रकार के अक्षरों के संयोग से मंत्र शास्त्र निर्मित है और आज भी उनके प्रत्यक्ष चमत्कार देखने में आते हैं। यदि किसीको इस विषय में शंका हो तो वह किसी सदगुरु से दीक्षा लेकर विधि-विधान से परिपूर्ण होकर किसी भी मंत्र को कसोटी पर कस सकता है। ऐसा न हो कि वह विधि-विधान की अवहेलना कर दे जैसे कि एक पुरुष विधि को जपते हुए भी कि डाकघर से टिकट लेकर लिफाफे पर चिपका कर पत्र भेजा जाता है परन्तु लिफाफे के अन्दर टिकट रख कर "लेटर बोक्स" में डाल दे तो उस लिफाफे की क्या स्थिति होगी यानि लेटर बॉक्स खोलने वाला ही अपने जेब के हवाले करेगा। इससे उसके लिफाफे भेजने की क्रिया में फर्क आ जायेगा और लिफाफा यथास्थान पहुंचने में असमर्थ सिद्ध होगा। इस प्रकार का ज्ञान मूलतः रखने की आवश्यकता है, जो क्रिया-पद्धतियों में छापा है।

यंत्र-मंत्र और तंत्र

शक्ति के सहारे ही जगत् की सृष्टि होती है। पालन और संहार भी शक्ति से ही होता है। वे तीनों शक्तियां अर्थात् सृजन शक्ति, पालन शक्ति और संहार शक्ति वास्तव में एक ही शक्ति की प्रकाशिका शक्ति है। काल और कार्य के अनुसार अपना रूप प्रकट करती रहती है। सृष्टि की जरूरत हुई तो सृजन शक्ति के रूप में दीख पड़ती है। पालन की जरूरत हुई तो पालन शक्ति के रूप में प्रकट हो जाती है तथा संहार शक्ति की आवश्यकता हुई तो संहार शक्ति के रूप में प्रकट हो जाती है। इन्हें भक्त लोग अर्थात् आस्तिक जन ब्रह्मा, विष्णु, महेश के रूप में जानते हैं। कुछ लोग दुर्गा, काली, और सरस्वती के रूप में इनकी आराधना करते हैं। तांत्रिक लोग यंत्र-मंत्र और तंत्र के रूप में देखते हैं और इनसे कार्यसिद्धि करते हैं।

इस पर अगर गहरी नजर डालें तो स्पष्ट हो जायेगा कि यंत्र-मंत्र और तंत्र उक्त तीनों ही शक्तियां हैं। जिन्हें हम कभी ब्रह्मा, विष्णु और महेश के कभी काली, दुर्गा, सरस्वती और कभी मंत्र-मंत्र और यंत्र के रूप में प्रकट हुआ पाते है। इसका मूल भाग यह है कि संसार की समस्त शक्तियां इन तीनों में निहित हैं। इसलिए यह कहना अतिश्योक्ति नहीं कि मंत्र-तंत्र और यंत्र सिर्फ भारतवर्ष के लिए ही है अपितु वह अखिल विश्व के लिए है। इसलिए यह स्पष्ट रूप से स्मरण रखना चाहिए कि मंत्र-तंत्र और यंत्र तीनों विश्व के उत्पादन, पालक और संहारक हैं। इस लिए तांत्रिक लोग इस त्रिवर्ण शक्ति को मातृ शक्ति के रूप में पुकारते हैं। तांत्रिक लोग इस मात्रिक शक्ति की तुलना गाय से करते हैं या महा शक्ति की तुलना गाय से की जा सकती है। गायें विश्व ही माताएं कही गई हैं—"गावो विश्वस्य मातरः" अर्थात् गायें अखिल विश्व की माताएं हैं। किसी एक गाय को

यह नहीं कहा जा सकता कि इसके दूध को पीकर भारतवासी ही बलिष्ठ हो सकता है अमेरिकावासी नहीं। उसी तरह अमेरिका की गाय को देखकर यह नहीं कहा जा सकता कि इस गाय के दूध को पीकर अमेरिकावासी ही बलवान हो सकता है भारत-वासी नहीं। इसी प्रकार तंत्र, मंत्र और यंत्र भी सम्पूर्ण विश्व की माताएं हैं।

यह निर्विवाद सत्य है कि मंत्र, तंत्र और यत्र से विश्व के प्राणी में सृजन शक्ति पैदा होती है, पालन करने की क्षमता उत्पन्न होती है और आवश्यकता पड़ने पर संहार करने की शक्ति भी मिलती रहती है।

तंत्र, मंत्र और यंत्र संसार की सारी शक्ति अपने में निहित रखते हैं किन्तु देखने वालों को इनकी शक्ति की पहिचान किसी प्रकार नहीं हो पाती। गाय को जिस प्रकार देखकर कोई भी यह नहीं कह सकता है कि इसके घृत में एक ऐसी शक्ति है जिससे इसकी कमजोरी तो दूर हो जावेगी। संसार के जो प्राणी इसके घी का प्रयोग करेंगे, उपयोग में लायेंगे-खायेंगे उन सब का शरीर बलवान होगा। इतना ही नहीं अपितु मानसिक शक्ति से भी वह परि-पुष्ट होगा। सारांश यह है कि तंत्र, मंत्र और यंत्र को ऊपरी रूप से किसीको भी उसकी भीतरी शक्ति का परिचय वास्तविक रूप में नहीं मिल सकता जिस तरह गाय की भीतरी शक्ति का परिचय किसीको गाय के देखने से नहीं मिल पाता। तंत्र, मंत्र और यंत्र साधना द्वारा प्रकट होते हैं। साधना से ही साधक को मंत्र, तंत्र, और यंत्र की आंतरिक शक्ति प्रकट करनी पड़ती है। साधक अपनी साधना से ही मंत्रों को सिद्ध कर सिद्धि प्राप्त करता है। अपनी क्रियाओं द्वारा मंतों का जप और पाठ करके सिद्धि प्राप्त करता है। उसी प्रकार साधक तंत्र और यंत्र को अपनी साधना से ही शक्तिवान बनाता है और उनसे सिद्धि प्राप्त करता है। जिस प्रकार गाय का पालन अपनी क्रिया-प्रक्रिया द्वारा गाय की सेवा करके इससे दूध प्राप्त करता है फिर उस दूध से क्रियाओं द्वारा घृत, मक्खन आदि प्राप्त करता है। उसी प्रकार साधक तंत्र-मंत्र से शक्ति पाता है जिससे वह स्वयं तो चमत्कृत होता ही है बल्कि संसार को भी चमत्कृत कर देता है। यंत्र की शक्तियां भी अद्‌भुत है। (यंत्र उसे कहते हैं जिसमें संसार की शक्तियां नियन्त्रित

रहती हैं।) इसलिए तांत्रिकों के यंत्र षट्कोण आदि होते है। जिसमें मंत्र नियंत्रित रहते है और उन्हें आवश्यकता पड़ने पर क्रियाओं द्वारा प्रकट कर उनसे कार्य सिद्ध किया जाता है। किन्तु वैज्ञानिकों का यंत्र शक्तियों से परिपूर्ण रहता है। वे उससे जब चाहते है कार्य परिपूर्ण कर सकते हैं। वैज्ञानिकों के यंत्र की करामात क्या है? यह सभी विश्व के लोग समझ चुके हैं परन्तु तांत्रिकों का यंत्र इससे कुछ भिन्न होता है। उसका प्रकट रूप दीख नहीं पड़ता। वह तो तांत्रिकों की संकीर्णता की दीवार में छेद है। मंत्रों की कुछ शक्ति उदारचेत्ता लोगों द्वारा प्रकट रूप में कभी-कभी देखी भी जाती है। किन्तु बहुधा यंत्र, मंत्र और तंत्र संकीर्ण विचार के साधकों द्वारा गुप्त रखते-रखते अब लुप्त होने लग गये हैं।

मंत्र और तंत्र विश्व की शक्ति धारण करते हैं। विश्व के कल्याण के लिए, विश्व के मानव अपनी साधनाओं द्वारा इससे लाभान्वित होते रहते हैं और आगे भी होते ही रहेंगे। विश्व का बीज मंत्र तंत्र और यंत्र में ही सम्मिलित है। यह इसका संकेत है। मार्कण्डेय पुराण में दुर्गा सप्तसती में मिलता है :—

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या,
विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्,
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः॥

अर्थात् हे देवि, तू ही अन्नत शक्ति है। सम्पूर्ण विश्व का बीज तू ही है, विश्व की परमाया तूं ही है। तुमने ही समस्त संसार को अपनी शक्ति में मोहित कर रखा है। तुम्हारे प्रसन्न हो जाने पर ही इस पृथ्वी पर प्राणियों को सांसारिक बंधनों से मुक्ति मिल जाती है इसलिए तू ही इस संसार में मुक्ति का कारण भी है।

इसका मूल अर्थ यह हुआ कि मंत्र-तंत्र और यंत्र की उपासना से, साधना से और प्रयोग से पूरे विश्व का कल्याण होता है। मंत्र तंत्र और यंत्र की शक्ति विश्व जननी शक्ति है। इसलिए भारतीय इसे अनन्तवीर्या वैष्णवी शक्ति कहते हैं।

ग्रह-शान्ति क सरल उपाय

ज्योतिषी बन्धुओं के समक्ष यह समस्या आती है कि वे कोई सरल उपाय बतायें। ग्रह पीड़ा निवारण हेतु निर्धन व मध्यमवर्ग के व्यक्ति असमन्जस में पड़ जाते है, उन्हें हीरा, नीलम माणिक्य व पन्ना इत्यादि महंगे नग धारण करने को कहा जाता है। ज्योतिष शास्त्र देव विद्या है इसलिए इसका क्षत्र समुद्र की भांति अथाह व अपरिमित है। हमें ज्योतिष के अनेकों ग्रन्थों में ग्रहों की पीड़ा निवारण हेतु रटे-रटाये रत्न धारण के उपाय मिलते हैं जो पुरातन ग्रंथों से लिये गये हैं परन्तु पुरातन व आधुनिक युग में अन्तर आन पड़ा है इसलिए आजकल जरूरत है कि अनुभव-सिद्ध व व्यावहारिक उपाय जनता व दुखी जनों के सम्मुख प्रकट किये जायें। हम यहां क्रमश: प्रत्येक ग्रह के लिए अपने अनुभव में आए सरल दान व उपाय प्रकट करते हैं :—

सूर्य

सूर्य चूंकि राजा है इसलिए देवों के राजा भगवान विष्णु की पूजा कष्ट निवारण के लिए की जाय। रविवार को हरिवंशपुराण या सत्यनारायण की कथा का पाठ, गायत्री मंत्र का जाप नियमित संकल्प करके 11, 11 या श्रद्धायुसार करे। दान की वस्तुओं में गेहूं, गुड़, ताम्बा सोना सूर्य के लिए दिए जाते हैं। यदि कोई व्यक्ति सोना माणिक्य नहीं पहन सकता तो उसे शुद्ध ताम्बे की अंगूठी पर सूर्य का चिन्ह बनवाकर अनामिका अगुली में रविवार को धारण करनी चाहिए। यदि सूर्य कष्टदायक हैं तो वह कुफल देता है। सरकारी नौकरी न लगना, सरकारी काम द्वारा हानि, सरकार द्वारा दंड दिया जाना, आंखों में कष्ट, दिल का दौरा, पेट में अग्नि, हड्डियों व शरीर में गर्मी, रक्त-विकार इत्यादि दुष्फल प्रकट होते हैं।

चन्द्रमा

चन्द्रमा स्त्री स्वरूप माना गया है। भोले बाबा शंकर ने इसे मस्तक पर धारण किया है। इसलिए चन्द्रमा का आराध्यदेव शिव ही है। अब चूंकि चन्दमा स्त्रीग्रह है अर्धांगिनी का आधे शरीर पर राज होता है इसलिए सोमवार के दिन शिव पार्वती की पूजा चन्द्रमा के कष्ट निवारण में लाभदायक है, सोमवार को शिव चालीसा व 'नामामीशमीशन निर्वाण रूपं' का पाठ संकल्प ग्रहण करें 11, 21 या श्रद्धानुसार करें। चन्द्रमा की दान की वस्तुओं में चांदी, मोती, सीप, शंख, दूध, चावल, दही, घी, श्वेत वस्तुएं इत्यादि आती हैं। चन्द्रमा के अशुभ होने से जातक का मस्तिष्क निर्बल, चर्मरोग, माता बीमार व माता से सम्बन्ध श्रेष्ठ नहीं, जल व केमिकल्स से शरीर को कष्ट, आत्मविश्वास की कमी इत्यादि बुरे फल प्राप्त होते हैं। चांदी धातु को दरिया या पवित्र नदियों में बहाने से भी चन्द्रमा शांत होता है। श्मशान भूमि या जंगल में स्थित कुएं का पानी अपने घर में रखने से भी चन्द्रमा शांत होता है। जो लोग मोती व चांदी ग्रहण नहीं कर सकते उन्हें सीपियों की माला गले में धारण करनी चाहिए। परन्तु यह ध्यान रहे कि सीपियां खण्डित न हों। सोमवार को या एकादशी पूर्णिमा को शुद्ध गंगाजल से धोकर यह माला धारण करने से चन्द्रमा शांत होता है।

मंगल

मंगल सेनापति है। यह सबसे क्रूर ग्रह है। मंगल ही वह ग्रह है जो दुघटनाएं, लड़ाई चोट व ऑपरेशन करवाता है। इसका रंग लाल है। सूर्ख रंग शक्ति का रंग है। यही कारण है कि दुर्गा, काली व जितनी भी देवियां शक्तिस्वरूप हैं उन्हें लाल सिन्दूर, लाल चोला, नारियल (बलि स्वरूप भेंट) लाल कपड़े में लपेट कर चढ़ाई जाती है। हिन्दुओं में धार्मिक अनुष्ठानों में कलावा (मौली) भी इसी शक्ति स्वरूप लाल रंग का होता है। अब चूंकि मंगल सेनापति है ये गुण पराक्रमदाता, भूत प्रत नाशक भक्तप्रवर हनुमानजी में मिलते हैं इसलिए मंगल के कष्टनिवारण हेतु हनुमानजी का इष्ट धारण करना चाहिए। मंगलवार को 'हनुमान चालीसा' का पाठ संकल्प ग्रहण करके कम-से-कम

11, 21 या श्रद्धानुसार करें। मंगल का दूसरा उपाय यह है कि मंगलवार को रात्रि 10 बजे से रामचरित मानस का 'सुन्दर काण्ड' का पाठ संकल्प ग्रहण करके निश्चित दिन तक करे। समाप्ति पर लड्डूओं का भोग लगाकर लड्डूओं का ही प्रसाद बांटें। मंगल की दान की वस्तुएं सोना, मूंगा, रक्त वस्त्र, केशर, लाल चन्दन, कस्तूरी, ताम्बा, तन्दूर की मीठी रोटी, बताशा, इत्यादि हैं। मंगल दोष युक्त होने पर रक्त सम्बन्धी बीमारियां, बवासीर, ब्लडप्रेशर, मंदाग्नि ऑपरेशन, दूर्घटना, लड़ाई या शस्त्र से घाव लगना इत्यादि रोग हो जाते हैं। जो लोग मूंगा भी धारण नहीं कर सकते उन्हें ताम्बे की अंगूठी बनवाकर उस पर मंगल का चिन्ह खुदवाकर मंगलवार को पहननी चाहिए। मंगल का सबसे अच्छा उपाय 'सुन्दर काण्ड' का पाठ है।

बुध

बुध युवराज है। सुकुमार है। इसके आराध्यदेव श्रीकृष्णजी हैं। बुध कष्ट निवारण हेतु श्री कृष्ण पूजा व गीता पाठ का संकल्प धारण करके अपनी शक्ति अनुसार करना चाहिए। इस की दान की वस्तुओं में क्रमश: मूंग व अन्य दाल, हरे फल, मटर, परमल, सेम, सब्जियां हरे वस्त्र, पन्ना पीतल आदि आते हैं।

जब बुध कष्ट दे रहा हो तो पीतल धातु की पत्ती या पैसे (10 पैसे का पीला सिक्का या 20 पैसे का सिक्का) में छेद कर दरिया या पवित्र नदी में बहा दें। दूसरा अत्यन्त प्रभावशाली उपाय यह है कि बुधवार को हरी चादर या कपड़ा शंकर भगवान पर चढ़ाकर तेल का दीपक जलाएं तो बुध शांत होता है। बुध यदि कष्टदायक है तो हृदय सम्बन्धी रोग, उल्टी आना, वाणी में तुतलाहटपन व्यापार में हानि, गणित में कमजोर आदि दुष्फल प्राप्त होते हैं।

बृहस्पति

गुरु ग्रह के नाम की महत्ता यही है कि यह ग्रहों में सुरगुरु हैं। इसके आराध्य देव ब्रह्मा जी हैं। कष्ट निवारण हेतु ब्रह्माजी की पूजा करनी चाहिए। केले व पीपल के वृक्ष की पूजा से भी हमें गुरु ग्रह के शान्त करने में सहायता मिलती है। अतः जिसका

गुरू ग्रह निर्बल है वे ब्रह्मा की पूजा करें। पीपल पर बृहस्पतिवार को जल या दूध चढ़ाकर दीपक जलाकर पीली वस्तुएं चढ़ावें। केले व पीपल के वृक्ष लगाना भी एक उत्तम उपाय गुरु का है। गुरु की दान की वस्तुएं चने की दाल, पीली सरसों, हल्दी, पीत वस्त्र व पीला रंग, पुस्तक, पीले फल, पीपल और केला है। गुरु के दोष युक्त होने से वायुरोग, प्लीहा, फोड़ा, फुंसी, मोटापा, गुर्दा व तिल्ली का रोग, इत्यादि हो जाते हैं। सन्तान में देरी भी गुरु के दूषित होने से हो जाती है। यदि गुरु ग्रह पाप ग्रहों से दृष्ट पापग्रह से युक्त हो तो गुरु ग्रह जहां-जहां दृष्टि डाल रहा है उन-उन भावों से सम्बंधित फलों में तपस्या (देरी) कराएगा।

शुक्र

शुक्र श्रृंगारिक गुरु है। संगीत, भोग-विलास, श्रृंगार सब पर शुक्र का ही आधिपत्य है। इसके आराध्यदेव कार्तिवीर्यार्जुन हैं। कुछ इसके आराध्यदेव लक्ष्मी को मानते हैं। परन्तु अनुभव में कार्तीवीर्याजुन ही इसके आराध्यदेव हैं। इसकी दान की वस्तुओं में सफेद-चन्दन, दही, चीनी, सुगन्धित द्रव्य, चावल, मिश्री, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, श्वेत घोड़ा, चरी ज्वार इत्यादि आते हैं। शुक्र के दोष युक्त होने पर प्रमेह, कर्ण रोग, वीर्य-विकार, नपुंसकता व सेक्स सम्बन्धित कुटेब पड़ जाना इत्यादि रोग हो जाते हैं।

चूंकि शुक्र स्त्रियों व जनता का प्रतिनिधित्व भी करता है इसलिए जिस व्यक्ति का शुक्र खराब हो उन्हें घोड़े (श्वेत) या सफेद गाय को चुरी-चुरी ज्वार खिलानी चाहिए या जनता की सामाजिक सेवा करनी चाहिए। जिसमें समाज के सदस्यों व मोहल्ले के सदस्यों की कठिनाइयों में सहायता करना है। इसी प्रकार स्त्रियों से नम्र व आदरपूर्ण व्यवहार करके उनकी सहायता करनी चाहिए।

राहु

राहु का समवर्ण है। राक्षस प्रवृत्ति है। मां वैष्णो देवी की कथा से यह ज्ञात होता है कि जब भैरव बली मां का पीछा करते-करते उसके निकट पहुंच गया तो मां ने अपनी शक्ति से पहाड़

में गुफा बना ली और वहीं भैरव का सिर अलग कर दिया। धड़ मां की गुफा के दरवाजे पर ही रह गया, सिर कुछ दूरी पर जाकर गिरा। अन्तिम समय में मां से क्षमा मांगने पर मां ने आशीर्वाद दिया कि जाओ मेरे दर्शनों को जो भक्त आएगा यदि जाती बार तुम्हारे दर्शन नहीं करेगा तो उसकी यात्रा सफल नहीं होगी। भैरव का सिर राहु व नीचे का हिस्सा केतु कहलाया। इसी प्रकार एक अन्य कथा में समुद्र मंथन के समय लक्ष्मी द्वारा अमृत बांटे जाने पर एक राक्षस (जो देवताओं की पक्ति में बैठ गया था) ने धोखा देकर अमृत पान कर लिया। जब विष्णु महाराज ने सुदर्शन चक्र से उस राक्षस का सिर काटा तो अमृत पान कर लेने से उस राक्षस ने अमरत्व प्राप्त कर लिया। उसका सिर राहु व धड़ केतु के नाम से प्रसिद्ध हुए। दूसरी कथा राहु केतु के अस्तित्व के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण व उपयुक्त जान पड़ती है।

राहु की दान की वस्तुओं में तिल, सरसों काली, नील वस्त्र, कृष्ण पुष्प, कम्बल, नारियल, कोयले, खोटे सिक्के, चाबी वाले, खिलौने इत्यादि आते हैं। सन्तानहीन व्यक्ति; एक आंख से काने माता के दाग वाले विष्टा और मकान की छत, अचानक काम आने वाले का भी सम्बन्ध राहु से आता है।

राहु का मुख्य उपाय नारियल को दरिया, नदी इत्यादि में बहाने से अनिष्ट नष्ट हो जाता है। यहां नारियल चूंकि राहु का प्रतिनिधित्व करता है, नारियल पर दो आंखें व मुख सिर की ओर स्पष्ट होती हैं। यही कारण है कि देवियों पर भेंट (बलि) के रूप में नारियल अवश्य चढ़ाया जाता है।

दूसरा उपाय राहु के लिए यह है कि यदि कहीं पर किसीने रास्ता बन्द कर दिया है तो राहु पीड़ित व्यक्ति अपने प्रयत्नों से उस रास्ते को खुलवाए या कोई रास्ता बनवाए। यदि रास्ता बना है तो उसे पक्का करवा दे।

केतु

यह भी राक्षस प्रवृत्ति व राहु का निचला हिस्सा है। राहु शनि के साथ समानता रखता है तो केतु मंगल के साथ। इसके आराध्य देव गणपति जी हैं। गणपति आराध्यदेव उपयुक्त इसलिए है क्योंकि गणपति के धड़ में हाथी का सिर लगा दिया था।

इसकी दान की वस्तुएं कुत्ता, दो रंगा कम्बल, लट्टू, फिरकी, बान, पतंग घास-फूस की झोंपड़ी, झण्डा, कपिला गाय इत्यादि आते हैं।

काले कुत्त को शनिवार को खाना खिलाने से केतु ग्रह से पीड़ा निवारण की जा सकती है। किसी धर्म मन्दिर या सामाजिक धार्मिक संस्था को कम्बल दान करने से भी केतु शान्त हो जाता है। किसी धार्मिक संस्था में झण्डा चढ़ाने से भी केतु शांत हो जाता है।

रत्न धारण करने के लिए मुख्य नियम याद रखना चाहिए कि जिस ग्रह पर क्रूर या पापक ग्रह की दृष्टि पड़ रही है उसे रत्न धारण करने व जो ग्रह क्रूर दृष्टि डाल रहा है उसे पूजा मंत्र व्रत इत्यादि द्वारा शान्त किया जावे तभी तो हमें पूर्ण फल रत्न धारण व जाप का मिलता है।

सूर्य का दान ज्ञानी ब्राह्माण को रविवार को दोपहरे में दे। चन्द्रमा का दान सोमवार, पूर्णिमा, एकादशी को नवयौवना स्त्री को, मंगल का दान मंगलवार को क्षत्रिय नवयुवक को दोपहर के समय दे। बुध का दान किसी अहीर की कन्या को बुधवार को शाम को दे। बृहस्पति का दान किसी ब्राह्माण ज्योतिषी कर्म-काण्डी ब्राह्मण को गुरूवार को प्रातः समय दे। शुक्र का दान शुक्रवार को सायं किसी सुन्दर नैन-नक्श वाली नवयौवना स्त्री को दे। शनि का दान शनिवार को बूढ़ निर्धन अपाहिज व्यक्ति को संध्या समय दे। राहु का दान किसी कोढ़ी को शाम को दे और केतु का किसी जटाधारी नवयुवक साधु को दे।

कुबेर यन्त्र

मेरे जीवन में अनेक ऐसे अवसर आए हैं जब मुझे इस कुबेर यन्त्र का प्रयोग करने का अवसर मिला है। उन अनेक घटनाओं में से एक घटना भूल ही नहीं सकता हूं। घटना इस प्रकार है---

मेरे एक परम स्नेही मित्र श्रीहरि मित्र ही नहीं आज भाई के समान हैं और मां भगवती की कृपा से स्वयं बम्बई में एक अच्छे न्यायाधीश हैं। चार वर्ष पूर्व उनके जीवन में एक ऐसी घटना आई, एक ऐसी विपत्ति से उन्हें गुजरना पड़ा कि वे कुबेर से कंगाल हो गए। एक प्रकार से स्वयं न्यायाधीश होकर आत्म-हत्या पर उतारू हो गए। जीवन हार चुके थे। हुआ इस प्रकार कि उस विपत्ति काल में उनके यहां कोई एक सिद्ध महात्मा जो स्वयं अच्छे ज्योतिषी थे या होंगे। उनका काफी नाम सुनकर श्रीहरि भूखा सिपाही बनकर उनके पास जा पहुंचे। विपत्ति सुनकर महात्मा ने उन्हें कुबेर यन्त्र बनाकर दिया तथा मन्त्र जाप का आदेश दिया। परन्तु दुर्भाग्य से कुबेर यन्त्र जहां अशुद्ध बना हुआ था वहां मन्त्र में भी अशुद्धि थी। फलस्वरूप वे और अधिक रसा-तल में जा पहुंचे। उन्हीं दिनों एक पत्रिका में मेरा लेख धन-प्राप्ति-यन्त्र एक अनूठा प्रयोग छपा था उसी पत्रिका के सम्पादक द्वारा पता ज्ञात कर मुझ तक आ पहुंचे।

खैर ! मैं पूर्व योजना अनुसार उनके यहां जा पहुंचा। यन्त्र को देखा तो सारी समस्या का कारण ध्यान में आ गया। अन्ततः मैंने पुनः कुबेर यन्त्र बनाकर उन्हें दिया। वे आज ईश्वर की दया से बिरले ही भाग्यशाली लोगों में से एक हैं।

कुबेर देवताओं के कोषाधिपति माने जाते रहे हैं। उनकी साधना मानवेतर प्राणियों ने, देवताओं तक ने भी की है। शास्त्रों के अनुसार दारिद्रयहीन भाग्यदोष-निवारण, आर्थिक उन्नति और विषमताओं को दूर करने के लिए कुबेर यन्त्र-मन्त्र आश्चर्यजनक

रूप से फलदायी है। इतना ही नहीं इसपर शंका करना अपने आपको ठगने के समान है।

भारत-भ्रमण के दौरान कुछ ही लोगों के यहां मैंने इस महा दुर्लभ यन्त्र को देखा है। आज उसी यन्त्र-मन्त्र को मैं पाठकों के सेवार्थ यहां दे रहा हूं। कुबेर यन्त्र के सम्बन्ध में मैं कुछ कहूं उससे पूर्व इस बात को स्पष्ट करना चाहूंगा कि मुझे यह यन्त्र किस प्रकार प्राप्त हुआ। इससे पाठक भली प्रकार समझ पायें कि यन्त्र कितना सत्य है।

बहुत समय पूर्व की बात है। एक दिन मैं अपने कार्यालय में बैठा हुआ था कि यकायक ऐसा लगा कि बाहर जोर की आंधी चल रही है और उसी हाहाकार के मध्य में कोई जोर-जोर से पुकार-पुकारकर मुझे बुला रहा है। इधर यह आवाज आ रही है, उधर मैं भीतर-ही-भीतर डर भी रहा हूं। मन-मस्तिष्क में एक अद्‌भुत हलचल मच गई। काम रुक गया। चारों ओर देखा तो पाया कोई नहीं है! रात हुई और कार्य बन्द कर भयभीत भाव से मैं सो गया। न तन का होश था न मन का। स्वप्नावस्था थी या जाग्रतावस्था, कह नहीं सकता परन्तु इतना अवश्य है कि कोई मुझे उठा रहा है, झंझोड़-झंझोड़कर जगा रहा है। हड़बड़ाकर आंख खोली तो देखा आंखों के सामने एक दिव्य रूप लिए पुरुष खड़ा है। सर्वांगसुन्दर, अतिसुन्दर मदभरे नेत्र, उन्नत ललाट, महातेजस्वी मुखमण्डल, गौरांग, दिव्य रूप लिए सफेद धवल लम्बी दाढ़ी, सनसमान धौले केस। पीतवस्त्र धारण किए दिव्यरूप बोल पड़े—

'घबरा मत! उठ!! मेरे संग चल! मैं तुझे वह दूंगा जो किसीने नहीं दिया! उठ और मेरे पीछे-पीछे चला चल।'

मैं किंकर्त्तव्यविमूढ़ चल पड़ा। न तन का होश था न मन का। सचमुच मैं अपने आपे में नहीं था। दूर, बहुत दूर चलता चला गया। अंततः नदी किनारे बाबा रुके तो मैं भी रुक गया। बाबा ने कहा—'बैठ!'

मैं जमीन पर बैठ गया तब उन्होंने अपने पास से कुबेर यन्त्र मुझे दिया और सम्पूर्ण विधि-विधान बताकर कहा—

'जा! आज से तू अपने हर कार्य में सफल होगा। इसका अधिकाधिक प्रचार-प्रसार करना। हर वह व्यक्ति जो इसका

विधि-विधान से प्रयोग करेगा वह अपने उद्देश्य में सफल होगा। इस जन्म में सम्पूर्ण सुख व ऐश्वर्य भोगते हुए अन्त में मोक्ष पद को प्राप्त करेगा। उत्तम स्वास्थ्य, सुपुत्रवान और महाभाग्यवान लक्ष्मी पुत्र होगा।

मैं सुनता रहा! यकायक बाबा की आवाज आनी बन्द हो गई। नजर उठाकर देखा तो बाबा गायब थे।

मैं यकायक अनमना-सा हो गया और उठकर चल पड़ा। उदास-सा जैसे-तैसे घर पहुंचा। वह दिन है और आज का दिन है, मुझे तो कोई अभाव नहीं। सचमुच भाग्यशाली हूं मैं। सन्तान, पत्नी, स्वास्थ्य, माता-पिता, बहन, ऐश्वर्य-भोग, सुख, सब प्रकार से मैं प्रसन्न हूं।

उसके बाद मैंने कई एक व्यक्तियों से इसका अनुष्ठान करवाया एवं यन्त्र तैयार करवाया है। वे सभी देवकृपा से सुखी और प्रसन्न हैं। मुझे विश्वास है कि पाठक इसका उपयोग कर हाथों हाथ सफलता प्राप्त करेंगे। सफलता अर्जित करने पर लेखक को पत्र लिखना नहीं भूलेंगे ऐसा विश्वास है।

भारतीय ग्रन्थों में कुबेर को धन का देवता माना गया है। और देवताओं में भी कुबेर को सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त है—सर्वेगुणा-कांचनम् आश्रयन्ति।

यह यन्त्र-मन्त्र प्रामाणिक होने के साथ-साथ प्रत्येक सद्गृहस्थ के लिए परम उपयोगी है। इस मन्त्र का जाप पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है। यदि इतना सम्भव न हो तो किसी शुभ मुहुर्त पर किसी सुयोग्य विद्वान् से भी कुबेर मन्त्र के जाप करवाये जा सकते हैं।

विधान

घर में शुद्ध स्वच्छ पूजा-स्थान में मां भगवती लक्ष्मी का चित्र स्थापित कर लेना चाहिए। उसीके साथ अपने इष्ट एवं गुरु का चित्र भी स्थापित होना परमावश्यक है। इसके बाद लक्ष्मी का सुगंधित द्रव्य लेकर षोड्षोपचार से पूजा करके लक्ष्मी का विष्णु सहित आह्वान करना चाहिए। इसके साथ ही उसके पास कुबेर यन्त्र की स्थापना कर लेना चाहिए। कुबेर यन्त्र अपने आप में पूर्णतः गोपनीय रहा है। यद्यपि अनेक इतर ग्रन्थों में और कई

तन्त्र-मन्त्र सम्बन्धी पुस्तकों में कुबेर यन्त्र-मन्त्र का वर्णन आया है परन्तु इसका सही रूप से अंकन मुझे कहीं प्राप्त नहीं हुआ है। मैं स्वयं एक लम्बे समय से इसकी खोज में था, खोज में हूं, परन्तु ऐसा देखने से नहीं मिला। इस यन्त्र के बारे में तो यहां तक कहा गया है कि पिता को चाहिए कि वह अपने पुत्र को भी कुबेर यन्त्र का ज्ञान न दे। गुरु को भी चाहिए कि वह अपने जीवन में अपने अत्यधिक निकट अत्यन्त प्रिय शिष्य को भी खूब सोच-समझकर इस यन्त्र का ज्ञान दे। इन सारे तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि यह यन्त्र अत्यन्त गोपनीय रहा है और आज तक प्रामाणिक रूप से न तो इसका प्रकाशन हुआ है और न ही इसके बारे में प्रामाणिकता से साधु-सन्तों को, महात्माओं को ज्ञान ही है। अटकलबाजी के सहारे से ही वे इसके बारे में कुछ-न-कुछ कह देते हैं।

यन्त्र अत्यन्त्र प्रभावशाली और लक्ष्मीदायक माना गया है। देवताओं तक ने, तांत्रिकों और मन्त्र-विशेषज्ञों ने तथा प्रकांड ज्योतिर्विदों ने इस यन्त्र की भूरि-भूरि सराहना की है। प्राचीन सयय में जितने भी गुरुकुल, आश्रम और महात्माओं के निवास-स्थल थे उन सब जगह पूर्ण विधि-विधान से कुबेर यन्त्र की स्थापना अवश्य होती थी, जिससे वे आश्रम धन-धान्य से समृद्ध रहते थे। हजारों शिष्यों का भरण-पोषण होता था और वे आश्रम राजाओं से भी ज्यादा समृद्ध माने जाते थे, उनके मूल में कुबेर यन्त्र का ही प्रभाव था।

कहते हैं कि, और कहते ही नहीं अपितु सत्य है कि लंकाधिपति रावण ने महादेव से कुबेर यन्त्र प्राप्त किया था। उसीके फलस्वरूप उनका राज्य पूर्ण समृद्ध, वैभवपूर्ण हो सका था। लंका सोने की लंका बन गई थी।

राजस्थान में जोधपुर से लगभग सवा सौ किलोमीटर दूर फलौदी नामक नगर में एक अत्यन्त विद्वान् ब्राह्मणपुत्र अपने आश्रम में जिसे बगीची कहा जाता है, रहते थे। जाति से वे पालीवाल ब्राह्मण थे। उनके दोनों हाथ नहीं थे। वे वेदपाठ के साथ-साथ उनके स्वर पांव से लिया करते थे। मेरे गुरु ने स्वयं उन्हीं से वेदाध्ययन किया था। उनके आश्रम में भी कुबेर यन्त्र रहा है। समाज के किसी व्यक्ति से एक पैसा भी भिक्षा, दान, सहायता या पुरस्कार के रूप में न लेने पर भी उनके यहां अक्षय वैभव

बरसता था।

ठीक इसी प्रकार फलोदी से 7 किलोमीटर दूर एक छोटा-सा स्थान लोंडियां नाम से है। वहां भगवान शंकर के मन्दिर में शिवलिंग के साथ ही भूमिगत कुबेर यन्त्र है। जनश्रुति है कि अत्यन्त सामान्य गांव में भी वहां के पण्डित पुजारी के यहां वैभव बरसता है तथा उस शिवमन्दिर की महिमा इतनी निराली है कि वहां शिवादि का किया गया पूजन कभी निष्फल नहीं होता।

अपने जीवन में मैंने ऐसे अनेक अनुभव किए हैं जिनसे ज्ञात होता है कि यह यन्त्र अपने आप में कितना अधिक प्रभावपूर्ण है। इस यन्त्र की विशेषता यह है कि यह जीवन में पूर्ण समृद्धि देने में सहायक है। जिस सद्गृहस्थ के घर में यह यन्त्र स्थापित होगा उसके जीवन में किसी भी प्रकार का कोई अभाव रह ही नहीं सकता।

राजस्थान में भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष में बाबा रामदेव का बहुत बड़ा मेला लगता है। इस मेले में लगभग चार-पांच लाख व्यक्ति हर वर्ष आते हैं। मैंने स्वयं यहां पिछले वर्ष प्रज्ञानन्द जी महाराज का चमत्कार देखा है जिन्होंने सैकड़ों लोगों को भोजन करवाया है। एक सामान्य-सी कुटिया में वे स्वयं बैठ गए और खाद्य-सामग्री देते रहे। सभी लोग आश्चर्यचकित थे कि महात्मा के पास कोई-न-कोई अलौकिक साधना-शक्ति है जिसके बल पर वे इतने लोगों को भोजन कराने में समर्थ हो सके हैं। जबकि वे नितांत एक कौपीन लपेटे हुए रहते थे। हां उनकी बगल में एक छोटा-सा झोला अवश्य पड़ा रहता है और उस झोले में से वे खाद्य-सामग्री निकाल-निकालकर लोगों को खिलाते रहते हैं।

इस समय मैं स्वयं अपने पिताजी के साथ हुई एक घटना को सुनाने का लोभ-संवरण नहीं कर पा रहा हूं। मेरे पिताजी का विवाह होना तय हो चुका था। बारात लड़की वालों के यहां पहुंच चुकी थी। पुराने समय में जैसा कि हुआ करता था, घी के सत्यता की जांच पंच लोग किया करते थे। किन्हीं कारणों से पंचों के एवं पिताजी के मध्य पारस्परिक मतभेद चला करता था। फलस्वरूप पंचों ने असली घी को नकली सिद्ध कर दिया। बारातियों का मुंह फीका पड़ गया। वे किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गए। अंत में पिताजी ने अपनी विद्या को ठीक काम में लिया और कह दिया कि आप

लोग शांति से बैठ जाएं। समय पर भोजन स्वतः तैयार हो जाएगा। स्वयं पंचों को पैसे देकर असली घी के डिब्बे मंगवा लिए गए। डिब्बे पड़े-के-पड़े रह गए। भोजन के समय उन्होंने कुबेर मंत्र का जाप किया और मोतीचूर के लड्डुओं से भरे हुए परात रसोईघर से बाहर ला-लाकर लोगों को तृप्त किया। लोगों के खूब पीछे पड़ने पर दुर्लभता से उन्होंने अपने भेद को खोला कि मुझे कुबेर सिद्ध है। अस्तु।

आबू के आगे एक बहुत बड़ा आश्रम है जिसे दत्तात्रेय आश्रम कहा जाता है। गहन गम्भीर पेड़ों के मध्य पहाड़ी स्थल पर यह आश्रम है। वहां पर एक साधू फकीर रहा करते थे। जनसामान्य उन्हें औगढ़ बाबा नाम से पुकारा करते थे। वे नितांत नंगे, अलमस्त रहने वाले जीव थे। उनके पास मात्र एक झोला रहता था। वे अपने भक्तों को प्रसन्न होकर मनचाही वस्तु उस झोले में से निकाल-निकालकर देते रहते थे और उनके जीवन में कभी भी आर्थिक अभाव नहीं रहता था। 1978 के आरम्भ में ही उनका नश्वर शरीर पलायन कर गया। मृत्यु से पूर्व रात्रि को स्वप्नावस्था में उन्होंने मुझ अर्थसंत लेखक को बुलाया और अपना कुबेर यन्त्र निकालकर देते हुए कहा कि मैं अपने जीवन की सम्पूर्णनिधि जो आज तक प्राप्त कर सका हूं उसकी तह में कुबेर यंत्र ही है वही मैं तुम्हें अपना प्रिय से प्रियतर समझते हुए दे रहा हूं। इसके साथ ही यह विश्वास करता हूं कि तुम अपने जीवन में इसका दुरुपयोग नहीं करोगे। मेरे मन में तुम्हारे प्रति अत्यन्त उच्च भावना है इसी कारण मैं तुम्हें यह कुबेर यंत्र देता हूं। वास्तव में इस कलिकाल में यह एक अमोघ अस्त्र है जो सिद्धिदायक लक्ष्मीकारक है।

सन् 1980 की बात है। एक सेठ के यहां मुझे लक्ष्मी पूजन का निमंत्रण मिला। यद्यपि आवश्यकता से अधिक मैं यव्स्त था परन्तु सेठ हरिराम के निमंत्रण को मैं ठुकरा नहीं सका। उनके आग्रह को मानकर व्यस्त होते हुए भी दीपावली की रात्रि को लक्ष्मी पूजन करवाने का पूर्ण आश्वासन और स्वीकृति दे दी।

पूजागृह में बैठते ही सेठ ने तिजोरी में से निकालकर तीन यंत्र मेरे सामने रखे और बताया कि पिछली चार पीढ़ियों से ये यंत्र हमारे यहां हर दीपावली की रात को पूजे जाते हैं। मेरे

दादा के दादा ने एक सिद्ध महात्मा से भक्ति पूर्वक ये यंत्र प्राप्त किए थे। तब से नित्य प्रातः इन यन्त्रों के दर्शन कर लेता हूं और दीपावली की रात को षोडपोचार से विधि-विधान पूर्वक इनका पूजन कर पुनः तिजोरी में रख देता हूं। यही परम्परा हमारे यहां चली आ रही है। पण्डितजी! आज मैं जो कुछ भी हूं इसीके फलस्वरूप हूं। मैंने जब ध्यानपूर्वक अवलोकन किया तो पाया कि उनमें एक कुबेर यंत्र था, दूसरा श्री यंत्र और तीसरा यंत्र सिद्ध-विशा था।

वास्तव में ही कुबेर यंत्र अपने आप में यंत्रराज कहलाता है तो अतिश्योक्ति नहीं है और पूरे तंत्र-मंत्र सम्बन्धी ग्रन्थों में इस यंत्र को सबसे अधिक महत्त्व दिया गया है। यह अलग बात है कि यह यंत्र अपने आप में गोपनीय रहा है और सामान्य जन को सुलभ नहीं हो पाया है।

कुबेर यंत्र धातु निर्मित होना चाहिए यथासंभव चांदी या ताम्र पत्र पर निर्मित हो तो सर्वोत्तम रहता है। यंत्र का निर्माण गुरुपक्ष या रवि पक्ष अथवा विजयकाल में होना चाहिए। यंत्र निर्माण के बाद विधि-विधानपूर्वक प्राण-प्रतिष्ठा करके यंत्र को चैतन्य रूप में लाया जाना चाहिए। ऐसा करने पर यह यंत्र पूर्ण प्रभावी होता है। इस यंत्र के लिए अब किसी जटिल विधि-विधान की आवश्यकता नहीं रहती। सद्‌गृहस्थ को चाहिए कि इस यंत्र को पूर्वतः पश्चिम दिशा में शुद्ध स्थान पर स्थापित कर लेना चाहिए तथा नित्य प्रति प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होकर धुले वस्त्र पहनकर यंत्र राज के दर्शन करने चाहिए तथा यंत्र के सामने घी का दीपक व अगरबत्ती जलानी चाहिए। यह यंत्र जिसके घर में होता है या जिसके पास रहे उसीको विशेष फलदायक होता है। इस यंत्र के प्रभाव से पूर्ण समृद्धि, वैभव, शुभ सौभाग्य एवं अष्ट सिद्धि नव निद्धि की प्राप्ति होती है।

इस प्रकार यंत्र-सिद्धि हो जाने पर सात लाख जप एवं उसका दशवां भाग यज्ञ करने पर कुबेर यंत्र चैतन्य हो जाता है।

यन्त्र का विधान

सर्वप्रथम इस यंत्र का निर्माण किसी सुपात्र या अच्छे वर्ण

वाले व्यक्ति से गुरुपक्ष या रविपक्ष अथवा नवरात्रि या दिवाली अथवा विजयकाल में ही उत्कीर्ण करवाना चाहिए। फिर इस यंत्र का षोड्षोपचार से पूजन कर प्राण-प्रतिष्ठा की जानी चाहिए। प्राण-प्रतिष्ठा के पश्चात् विनियोग किया जाना चाहिए। प्राण-प्रतिष्ठा के लिए अच्छे कर्मकांडी सुयोग्य ब्राह्मण से सहायता ली जा सकती है।

विनियोग

अस्य कुबेर मन्त्रस्य विश्रवा ऋषि, बृहती छंदः, शिवमित्र धनेश्वर देवता, दारिद्रय विनाशने पूर्णसमृद्धि सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ध्यान

मनुजबाहुविमान वरस्थितं गरुडरत्ननिभं निधिनायकम्।
विवसखं मुकुटादिविभूषितं वरगदे दधतं भज तुंदिलम्॥

विरोचन

इसके बाद करन्यास और अंगन्यास करना चाहिए। तथा सर्वतोभद्र मण्डल बनाकर उसपर इस यन्त्र को स्थापित करना चाहिए। उसके सामने ग्यारह दीपक लगाकर यन्त्र पर दुग्धधारा देते हुए निम्न मन्त्र से अभिषेक करना चाहिए।

सर्वतोभदचक्र लकड़ी के फटे पर सफेद वस्त्र बिछाकर उसपर चित्रानुसार 18 खंड पूर्व से पश्चिम और 18 ही खण्ड उत्तर से दक्षिण बनाकर उन्हें पांच प्रकार के अनाज से भरना चाहिए। इतना ध्यान रहना चाहिए कि अनाज की ढेरी गोल और ऊपर उठी हुई होनी चाहिए। ये पांच अनाज इस प्रकार हैं—1. चावल 2. मूंग 3. उड़द 4. मसूर की दाल 5. चने की दाल। अथवा चावलों को ही पांच प्रकार के रंगों से रंगकर बनाया जा सकता है। रंग सफेद, लाल, हरा, पीला और काला होना चाहिए। इस चक्र को बनाने के बाद उत्तर दिशा में सर्प का आकार उड़द से बना लें तथा चक्र के चारों ओर सफेद, लाल और काली तीन-तीन मेखलाएं बनाकर चारों किनारों पर शंख, चक्र, गदा और पद्म के आकार बनाकर उसकी प्राण-प्रतिष्ठा करनी चाहिए।

स	स	ह	ला	ला	ला	ला	ला	स	स	ला	ला	ला	ला	ला	ह	स	स
स	का	ह	ह	ला	ला	ला	स	स	स	स	ला	ला	ला	ह	ह	का	स
ह	ह	का	ह	ह	ला	स	स	स	स	स	स	ल	ह	ह	का	ह	ह
ला	ह	ह	का	ह	ह	स	स	स	स	स	स	ह	ह	का	ह	ह	ला
ला	ला	ह	ह	का	ह	ह	स	स	स	स	ह	ह	का	ह	ह	ला	ला
ला	ला	ला	ह	ह	का	ह	ह	स	स	ह	ह	का	ह	ह	ल	ला	ला
ला	ला	स	स	ह	ह	ला	ला	धृ	ला	ला	ला	ह	ह	स	स	ला	ला
ला	स	स	स	स	ह	ला	स	स	स	स	स	ह	स	स	स	स	ला
स	स	स	स	स	स	ला	स	पी	पी	स	स	स	स	स	स	स	स
स	स	स	स	स	स	ला	स	पी	पी	स	स	स	स	स	स	स	स
ला	स	स	स	स	ह	ला	स	स	स	स	स	ह	स	स	स	स	ला
ला	ला	स	स	ह	ह	ला	ला	ला	ला	ला	ला	ह	ह	स	स	ला	ला
ला	ला	ला	ह	ह	का	ह	ह	स	स	ह	ह	का	ह	ह	ला	ला	ला
ला	ला	ह	ह	का	ह	ह	स	स	स	स	ह	ह	का	ह	ह	ला	ला
ला	ह	ह	का	ह	ह	स	स	स	स	स	स	ह	ह	का	ह	ह	ला
ह	ह	का	ह	ह	ला	स	सं	स	स	स	स	ला	ह	ह	का	ह	ह
स	का	ह	ह	ला	लौ	लौ	स	स	स	स	लौ	ला	ला	ह	ह	का	स
स	स	ह	ला	ला	ला	ला	ला	स	स	ला	ला	ला	ला	ला	ह	स	स

सर्वतो भद्र चक्र

मन्त्र

ॐ श्रीं ॐ ह्रीं श्री ह्रीं क्लीं श्रीं क्लीं वित्तेश्वराय नमः ।

इसके बाद में दस हजार पुष्पों से अभिषेक कर पुष्पांजलि देनी चाहिए और उस यन्त्र पर अधोलिखित मन्त्र का सात लाख जाप किया जाना चाहिए और तब दसवां भाग यज्ञाहुति देने पर यन्त्र सिद्ध होता है ।

कुबेर मन्त्र

ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्यादिपतये धनधान्य-समृद्धि मे देहि दापय स्वाहा ।

आहुति के लिए शुद्ध घी का उपयोग करना चाहिए । आर्थिक उन्नति, व्यापार-वृद्धि सुख सौभाग्य और सम्पूर्ण ऐश्वर्य के साथ कार्य सिद्धि के लिए इससे श्रेष्ठ कोई यन्त्र, मन्त्र अथवा तन्त्र नहीं है।

इस यन्त्र की मूलभूत विशेषता यह है कि इसका नित्य पूजन भी आवश्यक नहीं है अपितु इसका मात्र दर्शन ही पर्याप्त है । यह यन्त्र घर में पूजास्थान पर, फैक्टरी में वर्कशाप में कहीं भी या उद्योग स्थान पर स्थापित किया जा सकता है । इसके साथ हीं मैं सन्त तुलसी के शब्दों में यह कहना चाहूंगा कि—'सकल पदारथ है जग माहीं, भाग्यहीन नर पावत नाहीं ।' अतः इस प्रकार का यन्त्र महाभाग्यशाली व्यक्ति ही अपने घर में स्थापित कर पाते हैं । जीवन में जीवन की सम्पूर्ण श्रेष्ठता ऐश्वर्य लक्ष्मी प्राप्ति, दिब्यता पद प्राप्ति, सुख सौभाग्य व्यवसाय वृद्धि, अष्ट सिद्धि नव-निद्धि, आर्थिक विकास, सन्तान सुख, उत्तम स्वास्थ्य, आयु वृद्धि और समस्त भौतिक सुख देने में यन्त्र पूर्णतया समर्थ है ।

मन्त्र चिकित्सक

वाल्मीकि रामायण में मन्त्र के द्वारा किसी पीड़ित व्यक्ति की चिकित्सा करने का उल्लेख मिलता है कि मन्त्र के द्वारा भी दर्द या बीमारी दूर की जाती है। इसका उदाहरण निम्नलिखित है।

राम-रावण युद्ध में मेघनाद द्वारा लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर वानर सुषेण (बालि का श्वसुर) ने सुग्रीव से कहा था कि प्राचीन काल में देवासुर संग्राम हुआ था। उसमें दानवों ने कुछ देवों को मार दिया था और कुछ को मूर्च्छित कर दिया था। तब वृहस्पति ने उनकी मन्त्र और औषधियों से चिकित्सा की थी। उन औषधियों का नाम **संजीवकरणी** और **विशल्यकरणी** है। ये क्षीरसागर के पास पर्वत पर मिलती हैं। इनको सम्पाती व पनस आदि जानते हैं। इनको लाने के लिए शीघ्र भेजो। संजीवकरणी का कार्य मूर्च्छा दूर करना है, तथा दूसरी विशल्यकरणी का आघातजन्य वेदना को दूर करना है। देवासुर संग्राम में हजारों देवों का मरण होता था, परन्तु वृहस्पति ने उनको कभी जिंदा नहीं किया। इसके विपरीत दैत्य गुरु शंकराचार्य दैत्य दानवों को पुन: संजीवित कर दिया करते थे। यह वर्णन महाभारत व मत्स्यपुराण में मिलता है।

देवासुर संग्राम में जिन असुरों को देवता मार देते थे उनको शुक्राचार्य संजीवनी विद्या के बल से पुनरुज्जीवित कर लेते थे। वे दैत्य दानव फिर युद्ध करने लग जाते। असुर जिन देवताओं को संग्राम में मार देते थे उनको वृहस्पति पुन: जीवित नहीं करते थे क्योंकि जिस संजीविनी विद्या को शुक्राचार्य जानते थे उसको वृहस्पति नहीं जानते थे। संजीविनी विष के ज्ञाता संसार में भगवान शिव, ऋषि भृगु और भृगु के पुत्र शुक्राचार्य तीन ही महापुरुष थे। इनके अलावा यहां तक कि ब्रह्मा, विष्णु और इन्द्र भी नहीं जानते थे। शुक्राचार्य ने संजीविनी विद्या भगवान शिव से सीखी

थी। एक बार विष्णु भगवान ने ऋषि भृगु की पत्नी दिव्या का चक्र से सिर काट दिया था तो ऋषि भृगु ने सिर को जोड़कर दिव्या को पुनर्जीवित कर दिया था।

कर्म और मन्त्र गन्धर्वों के अधीन है

जिनका चित्त और मन चलायमान नहीं होता है वे दूसरों के चित्त और मन को अपनी ओर खींच लेते हैं। यहां पर मन मित्र है। क्योंकि यहां द्रष्टा का मन और चित्त गन्धर्वों की इंद्रियों को अपनी ओर खींच लेते हैं। या आकर्षित करके जोड़ लेते हैं। तब गन्धर्व यहां उत्थान लेकर या द्रष्टा के साथ मिलकर उसे निवृत मार्ग की ओर ले जाकर पंच गतियों की सहायता से ब्रह्मा के सामने लाकर रखता है।

इन्द्रियां विकसित से संकुचित की ओर जाने की सदा इच्छा रखती हैं क्योंकि इन्द्रियों में विद्युत् का प्रवाह रहने से वे सदा चंचल रहती हैं वहां वैश्विक किरणें इन्द्रियों को संकुचित (प्रवृत्ति) की ओर जाने से रोकती हैं फिर भी इन्द्रियों में वेग अधिक होने से यदि वे वैश्विक किरणों से लड़ सकती है तो वैश्विक किरणें इन्द्रियों को संकुचित की ओर जाने का मार्ग सरल बनाती हैं। गर्भ में जाने वाला जीव संकुचित में प्रवेश करके बाहर (विकसित) की ओर आने की इच्छा करता है। तब तिरछी किरणें उन्हें बाहर आने का मार्ग बन्द कर देती हैं। यदि गर्भ में ही बालक की मृत्यु हो जाती है तो वहां तिरछी किरणें कुछ भी कार्य नहीं करतीं, बल्कि माता की वैश्विक उर्मियां ही मृत शिशु को बाहर फेंकने का कार्य करती हैं। यहां से इसके भेद हो गए हैं।

जीव प्राण तथा आत्मा संजीवनी (सूर्य) तथा अमृत (चन्द्रमा) दोनों मार्गों से प्राप्त होता है। जीव प्राण और आत्मा का जब चित्त और मन से सम्बन्ध होता है तब संजीवनी विद्या और अमृत विद्या (तत्त्व) का काम शेष हो जाता है और वहां से सप्त रंगों का कार्य प्रारम्भ होता है। सप्त रंग शरीरस्थ सप्त छिद्रों पर काम करते हैं। अधिकार रखते हैं। एक-एक रंग का अलग-अलग सातों ग्रह सप्तऋषि के साथ सहायक या बाधक दोनों रूप में कार्य करते हैं। सप्तऋषि केवल साधक सहायक ही होते हैं जबकि ग्रह दोनों होते हैं। तभी कुण्डली देखकर बताया जाता

है कि अमुक रंग का पत्थर या मणि सोने, चांदी या लोहे की अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण से शरीर में स्थित सप्त छिद्रों की, जहां रंगों की कमी होती है वह कमी पूरी हो जाती है। सूर्य चन्द्र की रश्मियों द्वारा काला रंग गुदा पर, सफेद रंग लिंग पर, लाल रंग मुंह पर तथा हरा रंग नाक में, नीला रंग कान में, पीला रंग नेत्र पर, तथा भूरा रंग ब्रह्म रंध्र पर काम करता है। जन्म लेते समय उपरोक्त रंगों की मात्रा माता-पिता के संभोग के समय वर्तमान तत्त्वों की मात्रा के अनुसार प्रत्येक सन्तान को अलग-अलग प्राप्त होती है। इसलिए ज्योतिष के अनुसार गर्भाधान के मुहूर्त का विचार किया जाता है। क्योंकि सूर्य के सातों रंगों पर सात ग्रह तथा राहु-केतु के साथ नवग्रह, गुलिक, प्राधपद ययादि तत्त्वों की उचित मात्रा में स्थिति को बताते हैं। इसलिए एक ही माता-पिता की प्रत्येक सन्तान भिन्न-भिन्न आकृति तथा स्वभाव की होती है। संभोग के समय अधोवायु, खांसी, छींक तथा क्रोध से बचने तथा पर्दा करने का विधान रखा गया है। संभोग के तुरन्त बाद अधिक ठंड या अधिक गर्मी और तेज वायु से बचने का आदेश दिया गया है। संभोग इन्द्रियों के साथ अइन्द्रियों को भी मिलाना चाहिए। विकसित इन्द्रियां ही एक-दूसरे से मिल सकती हैं। इसलिए ये उस समय (संभोग के समय) मधुर ध्वनि उच्चारण करना मुख का, प्रेम तथा गंध लेना नाक का, श्रवण (शब्द) कान का और दर्शन नेत्र का स्वाभाविक कर्म हो जाता है। जिसके शरीर में तिरछी किरणें नही होती हैं उसे उपरोक्त चारों कर्म नहीं हो सकते हैं। इन बातों का ध्यान देने से ही 'आत्मा वै जायते पुत्रः' के सिद्धांत से पूर्वज पूर्ण पुत्र की प्राप्ति करते थे।

मृत्यु के समय छः रंग एक साथ मिलकर सातवें भूरे रंग को अदृश्य बना देते हैं। जिससे एक अदृश्य ज्योति बाहर निकल जाती है। सातों रंगों का शुद्ध रूप तथा उचित मात्रा में मिश्रण न होने से ज्योति दिखाई नहीं देती है। सातों रंगों का शुद्ध रूप जिस छिद्र में रंगों की कमी होती है उसी छिद्र से आत्मा बाहर निकल जाती है। यही आत्मा जब गुदा या लिंग से बाहर निकलती है तो श्वेत तथा काले रंग का आभास होता है। इसलिए आत्मा अशुद्ध अग्नि के रूप से जीव बाहर निकल जाता है। जब मध्य भाग

नाक, मुख से लाल रंग या हरे रंग का अभाव होने पर प्राणवायु के रूप में बाहर निकल जाता है। यही जब ऊपर आंख, कान पर पीले या नीले रंग का अभाव होने पर चन्द्र से सम्बन्ध स्थापित करके तेज बाहर निकल जाता है और यही छः रंग एक साथ मिलकर जब सातवें 'रंग' भूरे रंग को अदृश्य करते हुए ब्रह्मांड को फाड़कर बाहर निकालती है। तब उस समय आत्मा प्रकाश (सूर्य) के रूप में बाहर निकल जाती है।

चूंकि सूर्य में विद्युत् नहीं है, फिर भी अपने में निहित तत्त्वों के मिश्रण तथा अणुओं के विस्फोट और रासायनिक परिवर्तन के द्वारा किरणों के रूप से रंगों से (माध्यम से) विद्युत् को उत्पन्न करता है। जो कि सूर्य से ऊपर, नीचे तथा दोनों ओर समान रूप से कार्य करती है। वहां सूर्य से ऊपर जब विद्युत् काम करती है तब चित (रंगों सहित) के साथ मिलकर तथा जब नीचे काम करती है तब मन (रंग सहित) के साथ मिलकर सूर्य से ऊपर तथा नीचे जो विद्युत् हैं वह दस महाविद्याओं के रूप में कार्य करती है। इनमें से पांच विद्याएं चित पर तथा पांच विद्याएं मन पर कार्य करती हैं। संजीवनी और अमृत का सार यही है कि हमारा सम्बन्ध दस महाविद्याओं से ही है क्योंकि महाविद्याओं का सम्बन्ध केवल आत्मा (ब्रह्मा) से ही है। आत्मा ब्रह्म शरीर के अन्दर तथा बाहर चार कोष हैं जिनका नाम अग्नि, तेज, वायु और आकाश है। इसलिए सर्वप्रथम मुख (अग्नि) उसके ऊपर वायु (नाक) तब तेज (नेत्र) तथा बाद में आकाश (कान) का स्थान रखा गया है। इनकी बाहरी कोषों की शुद्धि, यज्ञ तथा हवन करने से तथा भीतरी कोषों की शुद्धि जप, ध्यान, दर्शन और समाधि के द्वारा होती है जिससे अमृत विद्या की प्राप्ति, ब्रह्म का दर्शन होता है। संक्षेप में जीवन के कार्य तथा मन्त्र यही हैं।

उपरोक्त विवरण में सूर्य पक्ष में **'चन्द्रमा मनसो जातः'** है वहां मन्त्र में कफ—वायु प्रकृति तथा 'विद्युत् ही मन है' में पित वायु मन है। पहले में वायु से गर्म तथा कफ से ठण्डा और दूसरे में पित से गर्म और वायु से ठण्डा रहता है। जिसमें विद्युत् की मात्रा अधिक होती है वह अधिक क्रोधी होता है। लेकिन यही विद्युत् जब तेज से (दुर्गा से) सम्बन्ध स्थापित करके क्रोध करता है तो उस क्रोध से हानि के बदले लाभ होता है। यहां तेज रंगों

का परिवर्तित रूप है तथा उस क्रोध में जिससे दूसरे का नुकसान होता है विद्युत् किरणों से सम्बन्ध करता है। कफ—वायु प्रकृति वाले मन से सम्बन्धित मानव शांत प्रकृति के होते हैं। फिर भी जब इन्हें क्रोध आ जाता है तब क्षमा करना नहीं जानते। यहां वायु की प्रकृति गर्म होने से देर से क्रोध आता है तथा देर तक स्थायी रहता है। इनमें बदले की भावना प्रबल रहती है। विद्युत् में कफ नहीं होता।

सूर्य सर्वप्रथम इन्द्रियों को संजीवनी देते हैं। यह संजीवनी जब मन से सम्बन्ध करती है तब वह संघर्ष द्वारा शत्रु को परास्त कर देती है। उदाहरणतः नृसिंहावतार है। यहां प्रह्लाद ने अपने (पिता) से लड़कर भगवान को प्राप्त किया था। कर्मेन्द्रियां अपने में पूर्ण शक्ति भर लेने के बाद ज्ञानेन्द्रियों में शक्ति भरती हैं। उसके बाद यह शक्ति मन, बुद्धि तथा अहंकार को प्राप्त होती है। इस शक्ति से परिपूर्ण मानव ही सम्राट् (क्षत्रिय) बनता है। इसी तरह अमृत शक्ति सर्वप्रथम आत्मा द्वारा (चन्द्रमा निजरूप दर्शन द्वारा) ज्ञानेन्द्रियों से भरने के बाद कर्मेन्द्रियों को देती है। बाद में मन, बुद्धि और अहंकार को प्राप्त होती है। अमृत से परिपूर्ण होने पर इन्द्रियां प्रेम द्वारा शत्रु को परास्त करती हैं। उदाहरण के लिए—मोहिनी रूप। मोहिनी के प्रति प्रेम (विद्युत् रूप) से राक्षसों के मन में मोह उत्पन्न हुआ है। इसी प्रेम के कारण उन्हें मोह हुआ जिसके वश में होकर राक्षस अमृत पाने से वंचित रह गए। इसी तरह अमृत से परिपूर्ण मानव बुद्धिमान (वेश्या भोगी) होता है। इसी तरह से जिसे अमृत और संजीवनी प्राप्त करने की इच्छा नहीं होती है, वह केवल अमृत और संजीवनी प्राप्त करने के लिए कर्म को करता है। कर्म करते-करते ज्ञानेन्द्रियां तथा कर्मेन्द्रियां मन, बुद्धि और अहंकार दोनों पक्षों में परिपूर्ण हो जाते हैं। पूर्ण होने पर वह अपनी आत्मा को आवरण रहित देखते हैं। इस तरह इस आत्मा को प्राप्त करने वाला ब्राह्मण है। ऐसा आत्मधनी मानव अमृत तथा संजीवनी के साथ भ्रष्ट मानवों की रक्षा करता है। सूर्य से संजीवनी प्राप्त कर सम्राट् बनने वाला मानव दोष रहित आत्मा का दर्शन कर आत्म-शक्ति प्राप्त करता है तथा उसके वश में नवनिधियां रहती हैं। इस प्रकार आत्मा से अमृत शक्ति प्राप्त करके अष्ट सिद्धियों

को प्राप्त करता है। जिन्हें संजीवनी तथा अमृत के कर्म से ही प्रेम है ऐसा इच्छा रहित मानव ऋद्धि-सिद्धि को छोड़कर शुद्ध आत्मा का दर्शन करता है। ऐसा योगी अमृत और संजीवनी के पथिकों का पथ-प्रदर्शक है। ऐसे योगी का अस्त्र एकता, प्रेम और पुरुषार्थ (भाग्योदय) है। इसलिए गीता में कहा गया है कि—

'योगीनामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्वतः'

कार्य-सिद्धि के लिए रामायण की चौपाइयों को ही लीजिए या शिव, हनुमान, गणेश, सरस्वती, भैरव, सूर्य, गायत्री, विष्णु या लक्ष्मी के स्तोत्र मंत्र अथवा दुर्गा सप्तशती का सम्पूर्ण पाठ मन्त्र।

इसी प्रकार तन्त्र में काली, तारा, षोड्शी, त्रिपुर सुन्दरी, भुवनेश्वरी त्रिपुर भैरवी, धूमावती, बगला मुखी, मातंगी, कुमारी, दुर्गा, शिव, गणेश सूर्य, विष्णु आदि तन्त्रों के साथ ही श्री घंटा-कर्ण महावीर माणिभद्र मंत्र तंत्र को भूला नहीं जा सकता।

श्री घण्टाकर्ण और माणिभद्र के ये पृथक-पृथक स्तुत्य देव हैं। इनकी तुलना क्षेत्रपाल, भैरव और हनुमान जैसे देशों के सदृश की गई है वास्तव में इनकी मान्त्रिक दोनों शक्तियां इतनी शीघ्र प्रभावशाली हैं जिसे देख स्वयं साधक भी आश्चर्यचकित हो उठता है।

जैन धर्म में इनका अत्यधिक प्रचलन है। इनकी उत्पति और इतिहास क्या है इसकी जानकारी मुझे नहीं है। फिर मैंने इनकी शक्ति का कुछ प्रत्यक्ष अनुभव किया और वे वास्तव में प्रभावित किए बिना नही रहती हैं।

एक विशाल घण्टे के मध्य भाग में धनुष पर तीर चढ़ाए हुए तरकस और ढाल को पीठ पर धारण किए कमर की बायीं ओर छुरियां तथा दाहिनी ओर खड्ग और भुजाओं पर घण्टे का भुज-बन्ध पहले सौम्य एवं शान्त प्रकृति के साथ हर वीरत्व की विलक्षण आभा लिए प्रतिमा प्रतिमस चित्र को घटाकर्ण महावीर के नाम से जाना जाता है।

ऐरावत पर बैठे हुए जिसका मुंह यक्ष कूर्म के सदृश, छः हाथों में क्रमशः दाहिनी ओर से श्रीफल, अंकुश और आशीर्वाद

देते हुए बायें हाथों में गदा लिए, सर्प धारण किए डमरू बजाते हुए प्रतिमा चित्र श्री माणिभद्र के नाम से जाना जाता है।

श्री घण्टाकर्ण महावीर का मंत्र-तंत्र तीन अध्यायों में विभक्त है तथा श्री माणिभद्र का एक ही लघु अध्याय है अतः सबसे पहले श्री मणिभद्र की आराधना करनी चाहिए।

श्री माणिभद्रजी के सात मन्त्र हैं और उनकी अलग-अलग विधियों के साथ ही प्रत्येक मन्त्र के अलग-अलग प्रभाव हैं। क्रमशः मोतीझरा रोग, माणिभद्र साधना, शुभाशुभ जानने के लिए शाकिनी निग्रह करण भूत-प्रेत निवारण, मणिभद्र प्रत्यक्षीरस एवं वांछित कार्य सफलता के लिए मंत्र और विधि इस प्रकार है :

(1) मोतीझरा का रोग दूर करने के लिए

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं नव पद ह्री श्री माणिभद्राय नमः।

इस मन्त्र को 1008 बार जप करने से या ॐ ऐं श्रीं क्लीं माणिभद्राय स्वाहा, इस मन्त्र से 108 बार पंचामृत से हवन करने से मोतीझरा ज्वर दूर हो जाता है। पंचामृत यज्ञ में घृत, शर्करा और मधु की मात्रा अधिक रहनी चाहिए।

(2) माणिभद्र साधना

ॐ ह्रीं श्री भगवते श्रीं माणिभद्राय ह्रीं श्री कण-कण क्ली कण फट्-फट् स्वाहा॥

पूर्ण तिथि गुरुवार को भूमि को गोमय से लीप करके लाल वस्त्र पहिनें, माणिभद्र का कलश रूप में आवाहन करें, तथा प्रवाल की माला से पूर्व दिशा में मुंह रखकर 1008 बार जप करके 108 बार पंचामृत से हवन करें। यह अनुष्ठान विजय मुहूर्त में 21 दिन तक करना चाहिए।

(3) शुभाशुभ जानने के लिए

ॐ क्लीं क्लीं क्लीं माणिभद्र चेटकाय सर्वसिद्धिकराय मम स्वप्ने (असुके) दर्शय स्वाहा।

आम की लकड़ी की बनी चौकी पर चावल के स्वस्तिक का

निर्माण करे तथा उस पर श्रीफल रखें। माणिभद्र की तस्वीर या कलश स्थापना करके पूजा करें। पूजा समय में लाल पुष्पों का प्रयोग करें तथा सात दिन तक अखंड दीप रखें। इस अनुष्ठान में एक भुक्त व्रत रखना आवश्यक है तथा भोजन अपने विश्वस्त पुरुष के द्वारा ही बनाया गया हो। यह अनुष्ठान शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरुवार से आरम्भ करे तथा प्रतिदिन रात्रि के 9 बजे पश्चात् करना चाहिए। 11 माला प्रतिदिन करने से शुभाशुभ का परिणाम स्वप्न में प्राप्त होता है।

(4) शाकिनी निग्रहकरण

ॐ नमो भगवते माणिभद्राय क्षेत्रपालाय कृष्ण रूपाय चतुर्भुजाय जिन शासन भक्ताय नव भाग सहस्र वलाय किन्नर किं पुरूष गंधंव यक्ष, राक्षस, भूत-प्रेत पिशाच सर्वं शाकिनीनां निग्रहं कुरु पात्रं रक्ष रक्ष स्वाहा ।।

तृतीय मन्त्र की विधि के अनुसार ही काली चौदस को 1008 बार इस मन्त्र से जल अभिमान्त्रिक करके पिलावे। यह विधि 7 से 21 दिन तक भी की जा सकती है।

(5) भूत-प्रेत निवारण

ॐ माणिभ्रद्राय कपिल रुद्राय अनन्त शाकिनी सर्वाय नव नाग सहस्र बलाय किन्नर किं पुरूष गर्धव यक्ष, राक्षस, भूत-प्रत पिशाच सर्व शाकिनीनां निग्रहं कुरु-कुरु पात्रं रक्ष-रक्ष स्वाहा।

विधि : इस मन्त्र को 1008 बार जल अभिमन्त्रित कर पिलाए। यह विधि 7 से 21 दिन तक का जा सकती है परन्तु इस विधि का दिन कृष्ण चौदस होनी चाहिए।

(6) माणिभद्र प्रत्यक्ष साधना

ॐ आं को हां ह्रीं स्वीं स्वरं क्ली बल ऐं·सिद्धि ॐ नमो भगवते श्री माणिभद्राय क्षेत्रपालाय कृष्ण वर्णाय चतुर्भुजाय जिन शासक भक्ताय ह्रिलि मिलि किलि किलि चक्षुर्मयाय ठः ठः ठः स्वाहा।

इस मन्त्र का सवा लाख जप करे, दशांक्ष से हवन करने से माणिभद्र प्रत्यक्ष प्रभाव देते हैं।

(7) वांछित कार्य लाभ

ॐ ओं हों क्रों क्ष्वी क्ली ब्लू द्रां ड़ी ॐ नमो भगवते माणि-भद्राय कृष्ण रूपाय चतुर्भुजाय जिन शासन भक्ताय हिलि हिलि मिलि मिलि किलि किलि पक्ष कूर्म स्वाहा ॥

इसकी विधि छठी विधि के समान ही है।

जप या अनुष्ठान करते समय स्वच्छता का ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है। एकान्त स्थान में गोमेय से भूमि शुद्ध करके साधक पूर्व या उत्तर दिशा की ओर अपना मुंह करके बैठे।

ब्रह्मचर्य का पूर्णतः पालन करते हुए पंच केश रखें। पूजा में लाल सिन्दूर, लाल कनेर के पुष्पों का उपयोग करें तथा मूंगे की माला पर ही जप करें। जप सम्पूर्ण होने के बाद उत्तर पूजन एवं सविधि आरती अवश्य करें। साथ ही इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि स्त्रीवर्ग पूजा स्थान में प्रवेश न कर पाए।

गणपति एवं गायत्री मंत्र

इस अध्याय में हम आपको गणपति एवं गायत्री उपासना पद्धति एवं मन्त्र साधना के बारे में कुछ बतायेंगे।

(1) गणपति मूल मन्त्र

ॐ गं गणपतये नमः ।।

गणेशजी का यह मूल मन्त्र है। गणेशजी की उपासना उत्तराभिमुख होकर करनी चाहिए। गणेश पूजन में रक्त पुष्प (कनेर) घी, सिन्दूर, दीप, धूप, सिन्दूर एवं लड्डू ये मुख्य-मुख्य 5 वस्तुएं हैं। गणेशजी की मूर्ति के लिए श्वेत अर्क की जड़ से बनी हुई साधक के अंगूठे के बराबर की मूर्ति अच्छी है। वह न प्राप्त हो सके तो रक्त चन्दन की बनी हुई मूर्ति, यह भी न प्राप्त हो सके तो चांदी की मूर्ति होनी चाहिए। यह मूर्ति भी न बन सके तो श्वेत वस्त्र पहने हुए गणेशजी का चित्र लेना चाहिए। रक्त वर्ण का आसन एवं रक्त वर्णों को धारण करना चाहिए। सभी गणेश मन्त्रों की साधना उपरोक्त विवरण अनुसार ही करें।

गणेश मूल मन्त्र लिखा है। उससे पूजन आदि करें और रोजाना 108 माला जपने का संकल्प करें। इस मन्त्र का ऐसा चमत्कार है कि जिस दिन से 108 माला जपने का संकल्प किया जाता है उसी दिन से जातक के भाग्य चक्र का घूमना शुरू हो जाता है। एक आसन पर बैठकर न हो सके तो कोई हानिवाली बात नहीं है। अगर मान लो कुछ रह जाए तो रात को पूरा कर लेना चाहिए। साधक के कार्य की सिद्धि होगी। सुख-समृद्धि की प्राप्ति एवं संकटनाश होता है।

अतः इस मन्त्र के जप करने से साधक का भाग्य चमक जाता है। कठिन कार्य आसान हो जाते हैं।

2. गणेश गायत्री मन्त्र

ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो: दन्ति प्रचोदयात् ॥

इस गणेश गायत्री मन्त्र का सवा लाख का अनुष्ठान होता है। एक गणेश चौथ से दूसरी गणेश चौथ तक सवा लाख जप करना चाहिए। दूसरी चौथ को दशांश होम, ब्रह्माण भोजन आदि कराना चाहिए। हवन आदि कार्यो में विद्वान् ब्रह्मनिष्ठ ब्रह्माण को चुनना चाहिए। ज्योतिषी बन्धुओं के लिए एवं सही भविष्य बताने के लिए यह मन्त्र उत्तम है। एक रक्त वस्त्र चौकी भी बिछा कर सवा सेर घेड़का अष्टदल कमल बनावें। गणेशजी के चित्र के सम्मुख प्रात:काल तपादि कार्य करें, माला प्रवाल या रूद्राक्ष की लेनी चाहिए। रात्रि को साधना-स्थान पर सोना चाहिए।

उपरोक्त मन्त्र प्रभावशाली एवं अनुभवसिद्ध है। इस मन्त्र के द्वारा एक ज्योतिषी ने स्वप्न सिद्धि प्राप्त कर ली थी। परन्तु उन्होंने इसका गलत उपयोग किया जिसके परिणामस्वरूप बाद में दुखी जीवन बिताने लगे। अस्तु साधक को अपने को मिली हुई सिद्धि का दुरुपयोग एवं प्रदर्शन नहीं करना चाहिए।

उपरोक्त मन्त्र के साधना-काल में कभी-कभी कान में विचित्र प्रकार की आवाज सुनाई देती है। सो साधक को डरना नहीं चाहिए, यह मन्त्र-सिद्धि के लक्षण हैं।

इस मन्त्र का किसी गलत जैसे सट्टे या अन्य सार्वजनिक अहित के धन्धे में प्रयोग कभी नहीं करना चाहिए। इसका परिणाम साधक को स्वयं भोगना पड़ता है।

3. उच्छिष्ठ गणेश मन्त्र

ॐ ह्रींग हस्तिपिशाची लिखे स्वाहा।

इस मन्त्र का उल्लेख मन्त्र महोदधि में है। उच्छिष्ठ का अर्थ

जूठा से है। इसका अर्थ यह हुआ कि इस मन्त्र की उपासना जूठे मुंह से की जाती है। इस जूठे मुंह के बारे में विद्वानों में मत-भेद है। लंकापति रावण ने तो मांस खाकर जूठा मुंह करके जप किए थे। सामान्य साधक को मूंगफली या सूखा मेवा खाकर मुंह जूठा बनाकर जप करने चाहिए।

उपरोक्त मन्त्र 16 हजार बार जप करने से ही सिद्ध हो जाता है। इस मंन्त्र में विशेष नियम आदि नहीं है। उप-रोक्त मन्त्र से साधक की सभी मनोकामनाएं सिद्ध होती हैं। ग्रहण काल में भोजपत्र पर असगंध की स्याही से बनार की कलम से मन्त्र लिखना चाहिए। फिर तावीज में डाल कर गले में धारण करना चाहिए तो साधक शिव तुल्य हो जाता है।

4. गणेश शाबर मन्त्र

शाबर मन्त्रों की उत्पत्ति नाथ पंथ के आदि प्रवर्तक मत्स्येन्द्र नाथ एवं गोरखनाथ गिने जाते हैं। शाबर मन्त्रों की उत्पति के रहस्य एवं प्रभाव के बारे में आगे फिर वर्णन करेंगे। नीचे है गणेशजी का उल्लेखनीय शाबर मन्त्र :—

ॐ गं गणपतये जहसं बुलाऊं तहां आप दस कोष आगे जा, दस कोष पीछे जा, दस कोष दाहिने जा, दस कोष बायें जा, महागुरू की आज्ञा मान, सिद्ध दे आन जो न आवे तो प्रस्तुत है पार्वती की आन। ॐ फट स्वाहा।

दीवाली या ग्रहण की रात को जप शुरू करें। रोज माला गणपति के एकान्त मन्दिर में या केतकी पेड़ के सम्मुख पूर्वाभिमुख बैठकर जप करें। पांच लड्डू रखें। हर लड्डू पर घी सिन्दूर मिलाकर टीका करें और लाल कनेर के पुष्प चढ़ावें। ऐसा हर रोज करना चाहिए। धूप दीप भी करें। 21 दिन तक जपानुपाठ करना चाहिए। 21 दिन में गणेशजी स्वप्न में या प्रत्यक्ष आकर साधक की मनोकामना पूर्ण करते हैं। इस मन्त्र के अन्य उपभोग

होते हैं।

वशीकरण के लिए भी गणेशजी के शाबर मन्त्र हैं। लेकिन आजकल के स्वार्थी व लोभी जमाने में इसका बताना हानिकारक सिद्ध होगा। अत: वह लिखना व्यर्थ है।

अन्य जो गणेशजी के मन्त्र व यन्त्र हैं जिनकी पूजा होती है उनका उल्लेख निम्नलिखित है।

(अ) **शक्ति गणेष मन्त्र—ॐ** ह्रीं ग्रीं ह्रीं।

(ब) **गणेश बीज मन्त्र**—ॐ गं।

(स) **त्रैलोक्य मोहन मन्त्र**—ॐ वक्रतुण्डैकदंष्ट्रा क्लीं श्रीं गं गणपतये वर वरद सर्वजन मे वशमानय स्वाहा।

(द) **हरिद्रा गणपति मन्त्र**—ॐ हुं गं ग्लौं हरिद्रा गणपतये वरद सर्वजन हृदय स्तभन-स्तभन स्वाहा।

(च) **विघ्नेश्वर मन्त्र—ॐ** श्री ॐ ह्री श्री क्ली श्री क्लीं विघ्नेश्वरायनम:।

(छ) ॐ वक्रतुण्डाय हुं।

आदि मन्त्र श्री गणेशजी के हैं। "कलौ चण्ड विनायक" तांत्रिक सूत्र के अनुसार कलियुग में गणेशजी एवं देवी की उपासना शीघ्र फलदायी है लेकिन अनुभवी तांत्रिक का मार्गदर्शन आवश्यक है।

अत: गणेश गायत्री मन्त्र साधक के लिए अत्यन्त चमत्कारी फलदायी होते हैं।

मनपसन्द संतान-प्राप्ति के योग

सन्तान योग :—किस मनुष्य के कैसी सन्तान होगी इसका पता भी लगाया जा सकता है। जन्मकुण्डली में चलित, नवमांश, कारकांश के द्वारा जन्म योग है या नहीं, इसका पता लगाना भी असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है।

सन्तान सुख का विचार करने के लिए त्रिकोन (1-5-9) स्थान, द्वितीय स्थान एकादश स्थान (2-11) से सन्तान सम्बन्धी विचार करना चाहिए।

प्रथम भाग :—देह भवन यानी शरीर स्थान (पुष्टि शक्ति) यह सन्तान के वास्ते महत्त्वपूर्ण साधन है, जिससे प्रथम देह स्थान का बल होना देखना चाहिए। उसके बाद द्वितीय स्थान जहां कुटुम्ब वृद्धि या वंश वृद्धि का विचार करना चाहिए उसके बाद पंचमस्थान से सन्तान-सूख का विचार किया जाता है। पांचवें-स्थान से पांचवे यानि नवम स्थान याने भाग्य स्थान और आखिर में ग्याहरवां स्थान याने लाभ स्थान, पांचवें स्थान से सामने बैठे हुए ग्रह महत्त्वपूर्ण असर करते हैं।

यहां पाचों स्थान के साथ पुत्रकारक गुरु का भी विचार करना चाहिए।

सप्तमांश, नवमांश, कारकांश, यह कुण्डली में जन्म के इन पांचों स्थानों के स्वामी की क्या परिस्थिति हैं उसका ध्यान होने के बाद सन्तान सम्बन्धी जातक को योग्य मार्गदर्शन देना चाहिए।

ग्रह और सन्तान :—सूर्य, मंगल, गुरु, पुत्र का ग्रह होते हैं। चन्द्र स्त्री ग्रह है। बुध, शुक्र, शनि कुण्डली में बलवान होने पर पुत्र या पुत्री का सुख या कहीं पर दोनों का सन्तान सुख देते हैं।

सूर्य की राशि सिंह अल्प प्रसव राशि है और सूर्य जब

ग्यारहव स्थान में रहकर पांचव स्थान के सामने होता है तो एक पुत्र से ज्यादा का योग नहीं बनता है। कभी-कभी वंश-वृद्धि में बाधा उत्पन्न करता है।

परन्तु सूर्य से ज्यादा-से-ज्यादा एक पुत्र का सुख होगा। जब चन्द्र की राशि कर्क उसके स्वामी के साथ 'चन्द्र कन्या प्रजावान' इस श्लोक शब्द का असर ज्यादा होगा। पांचवें कर्क मीन राशि वालों को कन्या संतान ज्यादा होती है। पांचवें स्थान में कर्क राशि में चन्द्र को ग्यारहवें स्थान से शनि सीधी दृष्टि से देखता है तो ऐसे जातक को सात लड़कियां होती हैं। सिर्फ एक पुत्र होता है। वह भी अल्प आयु वाला होता है। पांचवें स्थान में चन्द्र वालों के कन्या अधिक होती है। परन्तु चन्द्रराशि जन्म में न हो तो परिणाम उल्टा भी हो सकता है। धन लग्न की कुण्डली में पांचवें स्थान में चन्द्र से पुत्र सुख ज्यादा होता है। शनि पुत्र सुख नहीं देता।

एक जातक के पांचवें स्थान में मेष चन्द्रमा, मंगल तीसरे, पांच पुत्र हुए। परन्तु लड़की एक भी नहीं हुई। इसके विपरीत एक जातक के ऐसे ही योग में पांचवे चन्द्रमा, तीसरे शनि, मंगल लग्न गुरु बारहवें स्थान में हैं। पहले एक-दो बार गर्भ स्राव, फिर पुत्री और पुत्र दोनों सन्तान, शल्य क्रिया से बाहर हुए। जब मेष के चन्द्र के साथ शनि, मंगल नवमें, सात पुत्र, एक पुत्री है। जब ऐसे ही योग वाली मेष का चन्द्र तीसरे मंगल, 12 वें गुरु शुक्र अष्टम में सन्तान सुख ही नहीं है, यानि लग्न में चन्द्र सिंह का, शनि, मंगल, राहु की पांचवें स्थान पर दृष्टि से एक पुत्र चार पुत्री हुई।

कम संन्तान योग :—पुत्र के सुख का अभाव तब होता है जब पंचमेश पंचम स्थान धन दूषित बनते हैं। पंचम स्थान पर शनि, मंगल की दृष्टि होती है। या पंचमेश व्यय-स्थान में हो,

या पंचम और धन स्थान में पाप ग्रहों के कारण अशुभ योग हो तो सन्तान में पुत्र सुख नहीं मिलता है। सन्तान सुख में कन्या सुख मिलता है।

मनपसन्द सन्तान

स्त्री के ऋतु दर्शन के सोलह रात तक ऋतुकाल होता है। उसमें ही गर्भ धारण हो सकता है। उसमें पहली चार रातें ऋतु-दान के वास्ते निषिद्ध हैं। क्योंकि दम्पति के आरोग्य को पहली चार रातों के संयोग से रोग पैदा करते है। वह समय अनेक रोगों के उपद्रव को बढ़ाने वाला होता है। ऐसा शास्त्र कहते हैं। और विद्वानों ने इसका त्याग करने को कहा है।

इससे पहले चार रातें त्याग करने के बाद 12 रातों में ऋतुदान में पुत्र या पुत्री की प्राप्ति होती है। वे की रात में ऋतुदान से पुत्र ए की रात में ऋतुदान से पुत्री होती है। यह शास्त्र में है। चौथी रात से सोलह रात याने कुल तेरह, पांचवी से गिनने से 12 रात तक ऋतु दान से जो सन्तान पैदा होती है उसका वर्णन निम्नलिखित है।

चौथी रात में ऋतुदान से कम आयु वाला पुत्र होगा। पंचम रात से पुत्री, छठी रात से वंश वृद्धि करने वाला पुत्र, सातवीं रात को बन्ध्या पुत्री, आठवीं रात से पुत्र, नवम रात से पुत्री, दसवीं रात से श्रेष्ठ पुत्र, ग्याहरवीं रात से सौन्दर्यवती पुत्री, बारहवीं रात से श्रेष्ठ गुणवान पुत्र, तेरहवीं रात से चिन्ता वर्द्धक कन्या, चौदहवीं रात से सदगुणी बलवान पुत्र, पन्द्रवीं रात से लक्ष्मी समान पुत्री, सोलहवीं रात से सर्वज्ञ पुत्र होता है। इसके बाद की रातों के संयोग से पुत्र (सन्तानें) नहीं होती हैं।

वशीकरण, आकर्षण और मोहन के तांत्रिक प्रयोग

वशीकरण, आकर्षण और सम्मोहन ये तीनों प्रयोग एक ही प्रकार के होते हैं। यानि कि इस सभी का लक्ष्य चाहने वाले व्यक्ति को अपनी तरफ आर्कषित करना होता है। परन्तु इन तीनों में भी अन्तर पाया है। वशीकरण तन्त्र चाहने वाले व्यक्ति को अपनी ओर पूर्णरूप से वश में कर लेता है परन्तु दूसरा तन्त्र जो कि आकर्षण होता है यह केवल चाहने वाले व्यक्ति को ही आर्कषित कर सकता है तथा मोहन तो केवल मोहित ही करने में सफल होता है। आकर्षण और मोहन वशीकरण की भूमिका ही हैं, यह जरूरी नहीं है कि आकर्षण और मोहन के बाद वह वशीकरण हो ही जाय। हां इससे वशीकरण में मदद जरूर मिल जाती है।

अध्याय में जो आगे वशीकरण, आकर्षण और मोहन सम्बन्धी अनेक तांत्रिक प्रयोगों का उल्लेख किया गया है। इनमें मुख्य सभी वशीकरण, स्त्री वशीकरण, पुरुष वशीकरण, राजा वशीकरण, सर्वजन वशीकरण तथा पशु-पक्षी वशीकरण है।

हालांकि इन तन्त्रों के लिए किसी प्रकार के मन्त्र जप की आवश्यकता नहीं है, फिर भी यदि इनके साधन से पूर्व एतत् संबंधी मन्त्र को भी जप कर सिद्ध कर लिया जाय तो साधन में सरलता से सफलता प्राप्त हो जाती है। इन मन्त्रों को प्राप्त करने के लिए महा इन्द्रजाल के दूसरे खण्ड 'मन्त्र-सिद्धि' का अध्ययन कर लेना चाहिए।

अतः इन तन्त्रों का प्रयोग करने से पूर्व मन्त्र सिद्धि का ज्ञान प्राप्त कर लेना लाभदायक होता है।

वशीकरण तन्त्र

1. पुष्य नक्षत्र में काले धतूरे की कील को लाकर रविवार

के दिन जिस स्त्री को छुवा दी जाय, वह कन्या हो तो भी सात रात्रि की अवधि में वशीभूत हो जाता है।

2. रजस्वला स्त्री के रक्त में गोरोचन मिलाकर मस्तक पर तिलक करके जिसकी ओर देखा जाय वह वशीभूत हो जाता है।

3. रात्रि के समय अपना वीर्य हाथ में लेकर बायीं अंगुली से जिस स्त्री के पांव के अंगूठे में लगा दिया जाय, वह वशीभूत हो जाती है।

4. चन्दन और बरगद की जड़ को पानी में पीसकर समभाग विभूति (भस्म) मिलाकर मस्तक पर तिलक लगाने से देखने वाले सब लोग वशीभूत हो जाते हैं।

5. चन्द्रग्रहण के समय सफेद सरफाको की जड़ को विधि-पूर्वक उखाड़कर पानी के साथ पीसें तथा उसका आंख में अंजन करें तो देखने वाले सभी लोग वशीभूत हो जाते हैं।

6. पुष्य नक्षत्र में पथसगा की जड़, रुद्रवन्ती और जव की मूल इन सबको लेकर कुंवारी कन्या के हाथ से काते हुए सूत में बांधकर पुरुष के दायें और स्त्री के बायें हाथ में बांधने से देखने वाले सभी लोग बशीभूत हो जाते हैं।

7. अपामार्ग, भांगरा, लाजवन्ती और सहदेई इन सबको पीसकर तिलक लगाने से मनुष्य सब लोगों को वश में कर लेता है।

8. चन्दन, रोरी, गोरोचन तथा कपूर इनको घोटकर लगाने से राजागण वशीभूत हो जाते हैं।

9. पुष्य नक्षत्र में अपामार्ग (चिरचिटा) के बीज लेकर उन्हें भोजन तथा पानी के साथ राजा को सेवन कराने से राजा वशी-भूत हो जाता है।

10. मुस्ता की जड़ को चन्दन में मिलाकर तिलक करने से जो भी व्यक्ति उसे देखता है वह वश में हो जाता है।

11. मुस्ता की जड़ को मुंह में रखकर जिसके नाम का उच्चारण किया जाय वह वशीभूत हो जाता है।

12. गधे के सिर की हड्डी को मनुष्य के कपाल में रखकर घमरा के अर्क में एक-एक बत्ती रंग कर तथा कपाल में तेल भर-कर उक्त बत्तियों को जलाकर तेल पावे। उस काजल को आंखों में लगाकर जिसकी ओर देखा जाय वह वश में हो जाता है।

13. पुष्य नक्षत्र में धतूरे का पुष्प तथा मूल नक्षत्र में धतूरे की जड़ लेकर इनमें से समभाग गोरोचन तथा कपूर मिलाकर मस्तक पर तिलक करके जिस स्त्री का नाम लिया जाय वह वशीभूत हो जाती है।

14. बेलपत्र और मातुलुंग को बकरी के दूध में घिसकर तिलक करने से श्रेष्ठ वशीकरण होता है।

15. मैंथुन के बाद बायें हाथ से अपने वीर्य को स्त्री के तलवे में लगा देने से स्त्री सदैव के लिए वशीभूत हो जाती है।

16. मैनसिल, गोरोचन और मुस्ता की जड़ को पानी में पीसकर तिलक करे तथा जिसका नाम ले, वह देखते-ही-देखते वशीभूत हो जाती है।

17. भरणी अथवा पुष्य नक्षत्र में चम्पा की कली लाकर हाथ में बांधने से सभी लोग वशीभूत हो जाते हैं। उक्त नक्षत्रों में यदि सुदर्शन की जड़ लाकर बांधी जाय तो उसका भी वशीकरण के कारण प्रभाव होता है।

18. उदुंबर की जड़ का ललाट पर तिलक लगाने से उत्तम वशीकरण होता है।

19. सैंधा नमक, शहद एवं कबूतर की बीठ इनको एकत्र पीसकर शिश्न (लिंग) पर लेप करके जिसके साथ मैथुन किया जाए वह सदैव के लिए वशीभूत हो जाती है।

20. घीग्वार के कन्द में भांग के बीज पीसकर तिलक करने से श्रेष्ठ वशीकरण होता है।

21. यह एक अत्यन्त श्रेष्ठ विधि है कि छुईमुई, चिरचिरे की जटा, बहेड़ा, अपराजिता तथा चसण्डाली (लता) इन सबको एकत्र कर दूध के साथ पीसकर कीच जैसा गाड़ा लेप कर दें। फिर उस लेप की एक पट्ट वस्त्र पर लेप करके उसकी बत्ती बनावें। उसके बाद बत्ती को पदमनाल के भीतर सूत्र द्वारा वेष्टित करें। इसके बाद एक वर्ण की गाय के दूध से घी निकालकर उक्त घी में उस बत्ती को गीला करके दीपक जलाएं तथा उस दीपक की लौ से काजल पारें।

काजल पारने का कार्य कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि में भैरवी की पूजा करने के उपरान्त करना चाहिए।

इसके बाद इस काजल को आंखों में लगाकर जिस स्त्री को

आप चाहते हैं उसके सामने जाने से वह वशीभूत हो जाएगी।

22. गोरोचन, कुरैंवा, पारा तथा कश्मीरी केसर—इन सभी को धतूरे के रस में घोटकर शिश्न पर लेप करके जिस स्त्री के साथ मैथुन किया जाए वह अत्यंन्त वशीभूत हो जाती है।

23. उल्लू के मांस में बकरे का मांस मिलाकर एक रत्ती प्रमाण पानी के साथ जिसे दिया जाए वह दास होकर चरणों में आ गिरता है।

24. तगर, कूठ, हरताल और केसर इनको सम भाग में लेकर अनामिका अंगुली के रक्त में पीसकर मस्तक पर तिलक लगाने से देखने वाले सब लोग वशीभूत हो जाते हैं।

25. नदी के किनारे के झाड़, वृक्ष की जड़ लाकर पुष्य नक्षत्र वाले दिन उसमें कूड़े की छान मिलावें तथा चूर्ण कर लें, फिर इन दोनों को बराबर श्मशान की राख मिलाकर जिस व्यक्ति के ऊपर इसे डाला जाएगा वही वश में हो जाएगा।

26. सैंधा नमक, कपूर एवं शहद को पीसकर मैथुन किया जाए तो स्त्री वश में हो जाती है।

27. पुष्य नक्षत्र में पुनर्नवा की जड़ को लाकर दायीं भुजा में बांधने से सब लोग वशीभूत हो जाते हैं।

28. कहीं से सियार की खाल और सांभर के सींग का एक टुकड़ा लाकर दोनों को धूप में सुखाकर कूट-पीसकर एक दिल कर ले। फिर उसमें केसर और कपूर डालकर सबको मिला दे। इस चूर्ण का थोड़ा-सा अंश पानी में डालकर जिस स्त्री को पिला दिया जाए वह वशीभूत हो जाती है।

29. रविवार के दिन काले धतुरे के पंचाग को लाकर उसे पीसकर कपूर, कुंकुम रोचन मिलाकर तिलक लगाने से अभिलषित स्त्री वशीभूत हो जाती है।

30. गाय का दांत और मनुष्य का दांत इन दोनों को तेल में पीसकर शरीर पर मलने से स्त्रियां वश में आ सकती हैं।

31. मनुष्य की खोपड़ी लाकर उसमें धतूरे के बीज रखें। उसके पश्चात् उसमें शहद और कपूर मिलाकर पीस लें। इस लेप का तिलक करने से अभिलषित स्त्री देखने से वशीभूत हो जाती है।

32. शनिवार के दिन जब घनिष्ठा नक्षत्र हो उस दिन बबूल की जड़ को लाकर, जिस स्त्री के मस्तक पर डाला जाय वह वश

में आ जाती है।

33· भोजपत्र के ऊपर लाल चन्दन से शत्रु का नाम लिखकर शहद में डुबा देने से शत्रु वशीभूत हो जाता है।

34· हाथ और पांव के नखूनों की भस्म बनाकर जिस स्त्री को खाने-पीने की वस्तुओं में दे दिया जाय वह वश में हो जाती है।

35· चिता की भस्म, कूठ, वच, तगर और कुंकुम—इन सबको एक साथ पीसकर स्त्री के मस्तक पर और पुरुष के पांव के नीचे डालने से वह वशीभूत हो जाते है।

36· शनिवार के दिन स्त्री के बायें पांव के नीचे से धूल लाकर उसकी पुतली बनाये तथा उस पुतली में अपना यानि उसी स्त्री का केस भी लगा दे। उसके पश्चात् उस पुतली की योनि में अपना वीर्य डालकर नीले वस्त्र से लपेटकर उसे सिन्दूर से पोत ले। उसके बाद उस पुतली को उक्त अभिलषित स्त्री के द्वार पर गाड़ दे। जब वह स्त्री उस स्थान को लांघकर जाएगी, उसी समय वह तन-मन-धन से वशीभूत हो जाएगी।

37· तगर, कूठ और तामलीस पत्र को मिलाकर पीस ले। उस चूर्ण को बत्ती में भरकर बत्ती को सरसों के तेल के दीपक में डालकर जिस रविवार को पुष्य नक्षत्र तथा अमावस्या हो उस दिन आधी रात को उक्त दीपक जलाकर मनुष्य की खोपड़ी में काजल पाड़े। उस काजल को आंखों में डालकर जिसे देखा जाय वही वश में हो जाता है।

38· हल्दी, गोमूत्र, घी, सरसों और पान के रस को एकत्र पीसकर शरीर पर मलने से स्त्रियां वशीभूत होती हैं।

39· जो स्त्री पहली बार रजस्वला हुई हो उसके कपड़े को लाकर बत्ती बनाकर अण्डी के तेल के दीपक में रखकर जलाये और काजल पाड़े। उस काजल को डिब्बी में भरकर रख ले। जब स्वाति नक्षत्र आए उस समय उस काजल को अपने वक्ष पर लगाकर जिस स्त्री के शरीर पर रेखा खींच दी जाएगी वह वशीभूत होकर निकट चली आएगी।

40· बिरोजे की जड़ और धतूरे के बीज को प्याज के साथ महीन पीसकर जिसे सुंघाया जाय वह वश में हो जाता है।

41· काकजंघा, तगर, केसर और मेनसिल—इनको समभाग

में लेकर चूर्ण बनाकर स्त्री के मस्तक पर डाल देने से वशीकरण होता है।

42. मेढासिंगी, बच, राल, खस, चन्दन और छोटी इलायची इन सबको सम (बराबर) भाग में लेकर कूट-छान लें। फिर पहनने से वस्त्रों में इस धूप की धुनी दे दें। सब स्त्री-पुरुष वशीभूत होते हैं।

43. पुष्य नक्षत्र की अंधेरी रात्रि में संध्या के समय दीपक जलाकर उसकी लौ से काजल पाड़े। उस काजल में मोर की बीट, हरताल और सुहागा मिलाकर जिसके मस्तक पर डाल दिया जाय वह वशीभूत रहेगा।

44. उल्लू की पीठ की पिछली हड्डी को लाकर उसे चन्दन के साथ घिसे, उसमें केसर, कस्तूरी तथा कुंकुम भी मिलाकर तिलक करे तो स्त्री वश में हो जाती है।

45. मसलती के फूल को रेशमी वस्त्र में लपेटकर बत्ती बनाएं और मंगलवार या शुक्रवार के दिन मनुष्य की खोपड़ी में अण्डी का तेल भरकर उक्त बत्ती डालकर दीपक जलाएं तथा मनुष्य की खोपड़ी में ही काजल पारकर आंखों में लगाएं तो देखने मात्र से ही स्त्री वश में हो जाती है।

46. रविवार के दिन सवेरा होने से दो पहर पहले ही उठकर श्मशान में जाए। अपने दोनों हाथ पीछे की ओर करके एक लकड़ी को उठा लावे। उस लकड़ी को किसी एकांत स्थान में रखकर पूजन करे। इस तरह इक्कीस दिन तक पूजन करता रहे। तत्पश्चात् बढ़ई के घर उस लकड़ी को ले जाकर सात टुकड़े करवाये। इसमें से एक टुकड़े को शत्रु के घर गाड़ दे तथा शेष टुकड़ों को नदी में बहा दे। इस तरह करने से शत्रु वश में आ जाता है।

47. आर्द्रा नक्षत्र में किसी तालाब में घुसकर एक डुबकी लगाकर, थोड़ी-सी मिट्टी निकाल लावे। उस मिट्टी को जिस स्त्री के मस्तक पर डाला जाएगा वह वशीभूत हो जाएगी।

48. मंगलवार के दिन अपने लिंग के छिद्र में लौंग रखकर बुधवार को निकाल लें। इस लौंग को पान में रखकर जिस स्त्री को खिला दिया जाए वह वशीभूत हो जाती है।

49. पुष्य नक्षत्र वाले दिन सुदर्शन की जड़ को उखाड़कर

कपूर और तुलसी के पत्ते पीसकर वस्त्र पर लेप करे। फिर विष्णु क्रांता के बीज के तेल में उक्त वस्त्र की बत्ती बनाकर दीपक जलाकर काजल पाड़े। उस काजल को आंखों में लगाकर राजा के निकट जाये तो राजा वशीभूत हो जाएगा।

50. पुष्य नक्षत्र में धोबी के पांव के नीचे की धूल को लाकर रख लें। फिर रविवार के दिन संध्या के समय जिस स्त्री के मस्तक पर उस धूल को डाला जाएगा वह वशीभूत हो जाएगी।

51. सफेद सरसों, तुलसी, धतूरा, औंगा और तिल का तेल इन सबको एकत्र कर खूब महीन पीसकर जो स्त्री अपने शरीर पर लेप करती है उसका पति तन-मन से वश में हो जाता है।

52. गोरोचन, योनि का रक्त और केले का रस इन्हें संयुक्त करके जो स्त्री अपने मस्तक पर तिलक करे वह अपने पति को वशीभूत कर लेती है।

53. माघ मास में बुधवार के दिन अष्टमी तिथि और स्वाति नक्षत्र होने पर पीले आक को न्यौत आए। फिर दूसरी बार जाकर उसकी कोंपल तोड़ लाए। इस कोंपल को जिस स्त्री के सिर पर डाला जाएगा वह वश में हो जाएगी।

54. सुदर्शन की जड़ को भुजा में बांधकर राजा के पास जाने पर राजा वश में हो जाता है।

55. पुष्य नक्षत्र में सिंही की जड़ को उखाड़ लाए। उसे कमर में बांधकर राजा के पास जाए तो राजा वश में हो जाएगा।

56. रविवार अथवा मंगलवार के दिन स्त्री अपने पांव के जूते के बराबर आटा तोलकर उस आटे की चार रोटियां बनाकर जिस पुरुष को खिलावे वह पुरुष वश में हो जाता है।

57. स्त्री जिन दिनों रजस्वला हो उन दिनों चार लौंग लेकर उन्हें अपनी भग में भिगोवे। तत्पश्चात् उन लौंगों को पीस-कर जिस पुरुष के मस्तक पर डाले वह उस स्त्री के सदैव वश में रहता है।

58. उल्लू के मांस को छाया में सुखाकर चूर्ण कर लें। उस चूर्ण को जिस स्त्री के मस्तक पर डाला जाय वह वशीभूत हो जाती है।

59. पुष्य नक्षत्र में अपामार्ग के बीज लाकर खाने-पीने की

किसी वस्तु के साथ राजा को खिला देने से राजा वश में हो जाता है।

60. काले धतूरे के पुष्प को पुष्य नक्षत्र में लाये। भरणी नक्षत्र में उसका फल लाए। विशाखा नक्षत्र में उसकी शाखा लाए। हस्त नक्षत्र में पत्ते लाएं तथा मूल नक्षत्र में जड़ लाए। फिर उसे समान मात्रा में कपूर कुकुंम और गोरोचन के साथ पीसकर तिलक करने से अभिलषित स्त्री को वशीभूत किया जा सकता है।

61. पुष्य नक्षत्र वाले रविवार को अपामार्ग का बीज लेकर भोजन अथवा जल में मिलाकर राजा को खिला दे तो राजा वशीभूत हो जाएगा।

62. पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में किसी बगीचे में जाकर अनार तोड़ लाएं। उस अनार को धूप देकर अपनी दायीं भुजा में बांधकर राजसभा में जाए तो राजा वशीभूत हो जाएगा।

63. मालती के फूलों को सरसों के तेल में डालकर पका लें। उस तेल को अपने गुप्तांगों में जो स्त्री मैथुन करती है वह अपने पति को वश में कर लेती है।

64. मंगलवार के दिन जब अमावस्या हो उस दिन नित्य-कर्म से निवृत्त हो पवित्रतापूर्वक वन में जाकर उत्तर की ओर मुंह करके खड़ा हो तथा अपामार्ग के वृक्ष को देखे। फिर उसी स्थान पर ब्राह्मण को बुलवाकर उस वृक्ष की विधिपूर्वक पूजा करे तथा ब्राह्मण को 16 मासा स्वर्ण का दान दे। उसके पश्चात् उस ब्राह्मण के द्वारा अपामार्ग के बीज लेकर अपने घर चला आए। मार्ग में किसी से कुछ न बोले। फिर उन बीजों को साफ करके भगवान का स्मरण कर किसी भी विधि से कम-से-कम एक बीज राजा को खिला दे तो वह राजा जीवन-भर वश में रहता है।

विभिन्न तन्त्र

(i) आकर्षण-तन्त्र

आकर्षण करने के लिए निम्नलिखित तन्त्रों का प्रयोग करना चाहिए।

1. स्त्री के बायें पांव के नीचे कीं मिट्टी लाकर गिरगिट के खून में छानकर उसकी एक पुतली बनाए। पुतली के वक्ष पर उस स्त्री का नाम लिखे। उस पुतली को पेशाब करने की जगह में गाड़कर उसके ऊपर प्रतिदिन पेशाब करता रहे तो पुतली पर जिस स्त्री का नाम लिखा होगा वह सहस्र कोस दूर से भी आकर्षित होकर समीप चली आती है।

2. होली के दिन होली को न्यौतकर उसकी एक लकड़ी लाकर धूप दीप से पूजन करे। उसके पश्चात् धोबी के घर जाकर उसकी भट्टी के नीचे उस लकड़ी को जलाकर कोयला कर ले। उस कोयले को हस्त नक्षत्र आने पर कूट-पीसकर चूर्ण बनाकर रख ले। फिर जिस स्त्री के मस्तक पर उक्त चूर्ण को डाला जाएगा वह आकर्षित होकर समीप चली आएगी।

3. पंचमी तिथि को हुर की जड़ खोद लावे। उसका चूर्ण करके पान में रखकर जिसे खिला दिया जाय वह आकर्षित होकर समीप चला आता है।

4. दीपावली के दिन से एक दिन पूर्व एक मीटर की कुंडी लावे। उसमें एक रुपया रखकर प्रतिदिन पूजन करता रहे। फिर नली काटकर लावे और उसमें कूड़े की छाल बिछाकर रखे। तदुपरान्त जिस दिन स्त्री रजस्वला हो उस दिन उसका रक्त तथा श्मशान की भस्म लाकर सबको एक में मिलाकर चूर्ण कर ले, इस चूर्ण को जिस स्त्री के सिर पर डाला जाय वह आकर्षित होकर पास आ जाती है।

5. अश्लेषा नक्षत्र में देवदारु की बांभी लकड़ी लाकर बकरे

के मूत्र में भिगोकर, कूट-पीसकर सुखा ले। जिसका आकर्षण करना हो उसके मस्तक पर इस चूर्ण को डालने से अभिलाषा पूर्ण हो जाती है।

(ii) मोहन तन्त्र

वशीकरण के साधनों के उपरान्त अब मोहन क्रिया के साधनों का वर्णन किया जाता है। इनमें स्त्री-पुरुष राजा आदि को मोहित करने वाले विविध तांत्रिक प्रयोग हैं। साधक को चाहिए कि वह अपनी इच्छानुसार उपयुक्त साधन का चुनाव कर उसका प्रयोग करे।

1. जीरा, कुटकी, सफेद आक की जड़ और नागरमोथा—इन सबको रुधिर में पीसकर तिलक लगाकर जिस अभिलषित स्त्री के पास जाय, वह देखते ही मोहित हो जाय।

2. चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन चीते के पेड़ को न्यौत आवे। फिर नौमी के दिन उसे लाकर धूप, दीप देकर अपने पास रखे तो सब लोग मोहित हो जाते हैं।

3. केसर, मैनसिल, गोरोचन और पत्रज इन्हें पानी में पीस कर तिलक लगाकर जिस सभा में जाए वह सम्पूर्ण सभा मोहित हो जाती है।

4. नीलकमल, गूगल और अगर—सबको समभाग लेकर अपने सब अंगों में धूनी दे तो उसे देखते ही राजकुल के सभी लोग मोहित हो जाते हैं।

5. रविवार के दिन तुलसी के बीजों को सहदेई के रस में पीसकर तिलक करने से अभिलषित स्त्री देखते ही मोहित हो जाती है।

6. खंजन की बीठ व मरे हुए जुगनू को पीसकर टिकिया बना ले। फिर उसे पृथ्वा में गाड़कर फूंक दे। जब जल जाए तब उस भस्म को अपने शरीर में लगाये तो देखने वाले सभी मोहित हो जाते हैं।

7. इन्दोरनि, चिनावरी और मेनसिल—इन सबको समभाग लेकर जौकुट करके अपने अंग में धूप देने से देखने वाला व्यक्ति मोहित होता है।

8. बसदाम का पचांग तथा सफेद घुंघची—इन दोनों को

एक साथ पीसकर मस्तक पर तिलक करने से देखने वाले सभी स्त्री पुरुष मोहित हो जाते हैं।

9. राई, सिरसिम और शखसहली को कूट-पीसकर सफेद गाय के दूध में मिलाकर शरीर पर लेप करके गर्म जल में स्नान करे उसके बाद मस्तक पर केसर का तिलक लगाकर राजसभा में जाय तो सब लोग उसपर मोहित हो जाते हैं।

10. कडुवी तुम्बी के बीजों के तेल में रेशमी वस्त्र की बत्ती बनाकर दीपक में जलाये और उसका काजल पाड़े। उस काजल को आंखों में आंजने से सब लोग मोहित होते हैं।

11. धतूरे के पंचांग का चूर्ण कर उसे भस के तथा सर्प के रुधिर में मिलाकर संध्या के समय अपने शरीर पर धूप देने से जो देखता है वही मोहित हो जाता है।

12. ओदुम्बर के फूल की बत्ती बनाकर मक्खन भरे दीपक में जलाकर रात्रि में काजल पारने और उस काजल को आंखों में लगाने से सब लोग मोहित हो जाते हैं।

13. पांचों प्रकार के फल से तिलक करने से सब लोग मोहित हो जाते हैं।

14. काकड़ा सिंगी, वच, कूठ और चन्दन को जौकुट कर अपने शरीर और वस्त्रों पर धूप देने से देखने वाला व्यक्ति मोहित हो जाता है।

15. छछूंदर काले सर्प का फन तथा बिच्छू के डंक को एकत्र कर संध्या के समय अपने अंग में धूप देने वाला व्यक्ति मोहित हो जाता है।

(iii) नेत्र रक्षा और मंत्र

आजकल के आधुनिक युग में आंख के मुकाबले कोई वस्तु मूल्यवान नहीं है। आंख के बगैर व्यक्ति की जिन्दगी नरक के समान है। वह कुछ देख नहीं सकता कुछ देखे बिना वह कह भी कुछ नहीं सकता। अतः उसके लिए जिन्दगी पूरी करना एक प्रकार की सजा पूरी करने के समान है।

नयन नहीं तो चैन नहीं—यह कहावत बिल्कुल सही है। नेत्र के अभाव में व्यक्ति अपने दैविक, दैहिक व धार्मिक कुछ भी कर्म नहीं कर सकता। इसलिए इसकी हिफाजत करना हर व्यक्ति

का प्रथम कर्तव्य बन गया। इसकी रक्षा के लिए ऋषियों ने मन्त्रों का भी उपयोग किया। आज का आधुनिक युग चाहे तन्त्र, मन्त्र पर विश्वास न करे किन्तु जो लोग इस पर विश्वास करते हैं उनको इससे लाभ हुआ है और हो रहा है। मन्त्र पर विश्वास करने वालों की संख्या भारत में आज भी कम नहीं है। भारत में सूर्योपस्थान, सूर्योपासना सूर्यार्घ्य, सृष्टिकाल से आज तक अबाधगति से प्रचलित है। लोकचक्षु कहकर प्रतिदिन भारत-वासी नेत्रों के रक्षक तथा ज्योति प्रदान करने वाले सूर्य की प्रार्थना आराधना करते हैं। ऋषियों ने अपनी आंखों की रक्षा तथा उसके रोगों के विनाश के लिए दवाएं न कर प्रतिदिन—

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्तात्।

कह कर भगवान सूर्य की प्रतिदिन प्रातःकालीन प्रार्थना की। इसलिए ऋषियों को दिव्य दृष्टि मिली। उन्हें संसार के भूत, भविष्य व वर्तमान का द्रष्टा कहा गया।

पुराने वेदों के अन्दर एक श्लोक मिलता है इसके अनुसार—

ऋषियः द्रष्टारः भवन्ति।

कहकर उन्हें प्रतिष्ठा दी है। इसका कारण सिर्फ सूर्य की उपासना है। पुराने जमाने में अपनी आंखों की सुरक्षा के लिए निर्मित मन्त्रों का ही व्यवहार देखा जाता है दवाओं का नहीं। जगत का एक नेत्र सूर्य को ही माना गया है, उसी की आंखों से जगत नयनवान हुआ। ऐसा पुराने जमाने के लोगों ने कहा है। इसलिए पुराने जमाने में प्रातःकाल सूर्य के दर्शन करते समय निम्न श्लोक कहते हैं।

"नमः सवित्रे जगदेकचक्षुषे।"

अर्थात् जगत के एक मात्र नेत्र भगवान सूर्य को नमस्कार है। इसका अर्थ यह है कि उसी की आंख से सारे संसार के नेत्र को ज्योति मिलती है इसलिए प्रातःकाल में ही सूर्य की वन्दना का विधान है। जगत की ज्योति देने वाला सूर्य ही है। इसी की ज्योति से जगत ज्योतिर्मय होता है अतः इसी कारण लोग उससे आंखों की रक्षा के लिए प्रार्थना करते हैं। तथा यह अधिक उचित भी था। इसी विचार से भारतीयों ने दवा का आश्रय न लेकर भस्म न खाकर पहले भगवान भास्कर से ही आंखों की रक्षा का वरदान मांगा। सूर्य की वन्दना तथा मन्त्रों का जप नेत्रों की सुरक्षा

के लिए महोषधि से तनिक भी कम नहीं है। सूर्य के मन्त्रों का जप करना मनुष्य के लिए लाभकारी ही सिद्ध होता है। क्योंकि मंत्र स्वयं भगवान का रूप है। इनको सिद्ध करने का सही सबूत हमें गीता के उस मन्त्र के श्लोक से होता है जो यह है :—

मन्त्रो अहम्···।

इसी से मन्त्र की शक्ति का पता चलता है। मन्त्र केवल दो वाक्य योजना मात्र नहीं है। इसी में बीज रूप में शक्ति विद्यमान रहती है। भारतीय ऋषियों ने इसलिए ही मन्त्रों द्वारा ही आंखों की ज्योति शक्ति सुरक्षित रखने के लिए जगज्योति भगवान भास्कर से प्रार्थना की। विशेष प्रकार की ध्वनि से विशेष प्रकार की आकृति उत्पन्न होती है।

इसका जीता-जागता उदाहरण इस बात से मिलता है कि एक बंगाली युवक ने फ्रांस में एक भैरव स्तोत्र का स्वर सहित पाठन किया तो स्थान पर आरूढ़ श्री भैरव की मूर्ति के दर्शन हुए। हमारे देश की राग-रागनियों में प्रत्येक रागिनी की अपनी एक विशेषता है तथा आकृति है।

मन्त्र जप के वर्णों का स्वर सहित उच्चारण करना ही मुख्य बात है। हमारे मन्त्र शास्त्र में भिन्न-भिन्न देवताओं को प्रसन्न करने के लिए भिन्न-भिन्न मन्त्रों का प्रयोग किया जाता है। मन्त्र के बार-बार उच्चारण करने से जिस देवता का वह मंत्र है उस देवता की मन में वह आकृति उत्पन्न हो जाती है इसी कारण कहा गया है कि मन्त्र ही देवता है।

जप से लाभ

जप से मनुष्य को बहुत लाभ है। जप से मनुष्य का मन शान्त रहता है तथा मन शुद्ध हो जाता है। जप करने से मन सात्विक विचारों से परिपूर्ण हो जाता है। मन्त्र के बार-बार रटने से उत्तम संस्कार बनते हैं तथा मनुष्य जिस तरह का चिन्तन करता है वैसा ही वह हो जाता है। यह एक मनोवैज्ञानिक नियम है। जिस-जिस मनुष्य ने अपने-अपने मन को उत्तम व पवित्र विचारों के चिंतन करने की अच्छी प्रकार से शिक्षा दी है उस का मन वैसा ही उत्तम विचारों के चिंतन का अभ्यस्त हो जाता

हैं। फिर निरन्तर इस प्रकार चिन्तन करते रहने से वैसा ही उसका स्वभाव बन जाता है। इस प्रकार इससे जप करते समय मनुष्य जिस देवता की मूर्ति का ध्यान करता है उसी देवता की आकृति उसके सम्मुख हाजिर हो जाती है। इसी प्रकार मन्त्र के द्वारा मन के विचार आदि दूर हो जाते है तथा मन को शक्ति प्राप्त होती है। श्रद्धा, भाव और अर्थ सहित मन्त्र जप करने से मन के सारे विकार दूर हो जाते हैं। भगवान नाम व इष्ट-मन्त्र का जप नित्य नियमित रूप से करना चाहिए। जप से सारे पाप नष्ट होकर शक्ति और अनन्त सुख की अनूभूति होती है।

जप तीन प्रकार का होता है

(अ) **उपाशु**—इसके अन्दर मन्त्र का उच्चारण उसे फुसफुसाते हुए किया जाता है।

(आ) **वाचिक**—इसके अन्दर मन्त्र का उच्चारण उच्च स्वर में किया जाता है।

(इ) **मानसिक**—इसके अन्दर मन्त्र का उच्चारण मन के अन्दर ही किया जाता है।

इन उपरोक्त मन्त्रों से मानसिक जप सबसे उत्तम, तथा उपाशु मध्यम श्रेणी तथा वाचिक को सबसे निम्न श्रेणी का अधम कहा गया है।

शब्द और उसके रूप

शब्द या ध्वनि एक प्रकार की कंपकंपी है। वह निश्चित आंखों को उत्पन्न करती है। हर एक शब्द आतंरिक संसार में एक आकार उत्पन्न करता है। और शब्दों के समुदाय मिलकर गहन आकृतियां उत्पन्न करते हैं।

आधुनिक युग में कुछ ऐसे प्रयोग निकले हैं जिनसे यह सिद्ध हुआ है कि स्वर किन्हीं विशेष प्रकार के यन्त्रों द्वारा उत्पन्न होते हैं।

जैसे बसंत राग को फूलों से अलंकृत एक नवयुवक कहा जाता है। इन बातों से सिद्ध होता है कि :—

(अ) शब्द की ध्वनि से आकृति उत्पन्न होती हैं।

साधक अपने इष्टदेव के साथ तादात्म्य स्थापित करता है। अन्त में जब ध्याता ध्यान और ध्येय एक हो जाता है तब साधक दिव्य आनन्द का अनुभव करता हैं। यही जप का फल है। जप से हृदय पवित्र तथा शान्त हो जाता है। जप करने से मन में एकाग्रता उत्पन्न होती है। जप से काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, मद और मात्सर्य आदि नष्ट हो जाते हैं। जप से जन्म-मरण का चक्र छूट जाता है। जप वैराग्य उत्पन्न करता है। जप से सभी प्रकार की इच्छाओं का अन्त हो जाता है। जप मनुष्य को निडर बनाता है, जप से अज्ञान का नाश हो जाता है। जप से परमानन्द की प्राप्ति होती है। जप से इष्टदेव के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है। सभी प्रकार के विकारों से छुटकारा मिलता है। जप से स्वास्थ्य बल और दीर्घायु की प्राप्ति होती है। जप से कुंडलिनी जाग्रत होतीं है। जप से मनुष्य सब रिद्धि व सिद्धियों को प्राप्त कर सकता है परन्तु इसके लिए एक शर्त है कि जप विधिपूर्वक होना चाहिए।

(iv) सम्पुटित श्री सूक्तम्

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः। ॐ दुर्गेस्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः स्वस्थै स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि। ॐ हिरण्य वर्णां हरणीं सुवर्ण रजतस्र जाम्। चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जात वेदो म आवह॥ दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्र-चिता॥ॐ श्रीं ह्रीं श्री कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्री ॐ महालक्ष्म्यै नमः॥1॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः॥ ॐ दुर्गेस्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः स्वस्थै स्मृता-मतिमतीव शुभां ददासि। ॐ ताम आवह जातवेदो लक्ष्मीमन प्रगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वंपुरुषानहम्॥ दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या सर्वोपकार करणाय सदार्द्र चित्ता। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः॥2॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः। ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः स्वथः स्मृतामतिमतीव शुभां ददासि। ॐ अश्व पूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम्। श्रियम् देवी मुपह्वये श्रीर्मादेवीर्जुषताम्। दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या सर्वोपकार करणाय सदार्द्र चित्ता॥ ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥3॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः। ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः स्वस्थैः स्मृतामतिमतीव शुभां ददासि। ॐ कांसो स्मितां हिरण्यं प्राकार-सर्माद्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् पद्मस्थितां पद्मं वर्णां तामिप-होप्ह्वेदा श्रियम्॥ दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या सर्वोप-कार करणाय सदार्द्र चित्ता॥ ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥4॥

ॐ श्रीं ह्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं ॐ महा-लक्ष्म्यै नमः। ॐ दुर्गे स्मृता हरिसि भीतिमशेष जन्तोः स्वस्थैः स्मृतामतिमतीव शुभां ददासि। चन्द्रां प्रभासां यशसाज्वलन्ती त्रियं लोके देव जुष्टामुदाराम्। तांपद्मनेमिशरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीमे नश्यतां त्वां वृणोमी। दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या सर्वोपकार करणाय सदार्द्र चित्ता। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥ 5 ॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं ॐ म लक्ष्म्यै नमः। ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः स्वस्थैः स्मृतामतिमतीव शुभां ददासि। आदित्यवर्ण तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथबिल्व तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्त-रायाश्च बाह्यलक्ष्मी॥ दारिद्रय दुःख भयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्र चित्ता। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥ 6 ॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः। ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः स्वस्थै स्मृतामतिमतीव शुभां ददासि। अपैतु मां देवसुखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धि ददातु मे। दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।। 7 ।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः । ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तो स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि । क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठांऽलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् । अभूतिमसमृद्धिं च सर्वाविणुर्द मे गृहात् ।। दारिद्रय दुःख भयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकार करणाय सदार्द्र चित्ता । श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।। 8 ।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः । ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः स्वस्थैः स्मृतामतिमतीव शुभां ददासि । गंधद्वारां दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीश्वरीम् । ईश्वरी सर्व भूतानां तामि होपह्वये श्रियं ।। दारिद्रय दुख भय हारिणि का त्वदन्या सर्वोपकार करणाय सदार्द्र चित्ता ।। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।। 9 ।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः । ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः स्वस्थैः स्मृतामतिमतीव शुभां ददासि । मनस कामनाकूतिवाचः सत्य मशीमहि । पशूनां रूप मन्तम्य मयि श्रीः श्रयतां यशः । दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता ।। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।।10।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः । ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः स्वस्थैः स्मृतामतिमतीव शुभां ददासि । कर्दमेन प्रजाभूत मयिय सम्भ्रमकर्दम श्रिय वासये मे कुले मातरं पदम् मालिनीम् ।। दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या सर्वोपकार करणाय सदार्द्र चित्ता ।। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः ।।11।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः । ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीति मशेष जन्तोः स्वस्थैः स्मृतामतिमतीव शुभां ददासि । आपस्स्रजन्तु स्निग्धानी

चिक्लित वस मे गृहे। निच देपी मातर श्रियं वासय मे कुले। दारिद्रय दुःख भयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्र चित्ता ।। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।। 12 ।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।। ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः स्वस्थैः स्मृतामतिमतीव शुभां ददासि। आर्द्रां पुष्करिणी पुष्टिं सुर्वां हेम मालिनीम्। सूर्या हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जात वेदो म आवह ।। दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकारणाय सदार्द्र चित्ता। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।। 13 ।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः। ॐ दुर्गे स्मृता हरिसि भीतिमशेष जन्तोः स्वस्थैः स्मृतामतिमतीव शुभां ददासि। आर्द्रां यः कारिणि यष्टिं पिंगलांपद्म मालिनीम्। चन्द्रां हिरण्यमयी लक्ष्मी जातवेदोम आवह। दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता ।। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।। 14 ।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्री कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्री ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः। ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः स्वस्थैः स्मृतामतिमतीव शुभां ददासि। ताम अवाह जातवेदो लक्ष्मी मन पगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्यो श्वान विन्देय पुष्पानहम्। दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्य नमः ।। 15 ।।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः। ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि। यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्य मन्वहम्। सूक्तं पञ्चदशर्चंन्च श्रीं काम ससूतं जयेत। दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या सर्वोपकार करणाय सदार्द्र चिता ।। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।। 16 ।।

(V) बीसा यंत्र

बात मार्च 1968 की है। वह घटना आज ज्यों की त्यों ही मुझे नजर आती है। अपने कार्यालय में बैठा कार्य कर ही रहा था कि यकायक टेलीफोन की घंटी टनटना उठी। अहमदाबाद के एक मिल मालिक ने कहा—"पंडित जी आप येन केन प्रकारेण यथाशीघ्र अहमदाबाद पधारें तथा हम पर जो भारी विपत्ति आई है उससे उबारें।" मैं असंमजस में पड़ गया। अगले दो दिन बम्बई से आये एक सेठ का अनुष्ठान पूर्ण करना था। मैंने अन्तत: 4 दिन बाद अहमदाबाद पहुंचने का आश्वासन दिया। सेठ ने अनमने भाव से 'हूं' कहा। खैर!

मैं नियत समय पर उक्त सेठ के यहां पहुंचा। कुछ ही देर में थकावट से निवृत्त हुआ। स्नानादि कर पूजा में बैठा। ध्यानावस्था में पाया कि सेठ के परिवार पर अलक्ष्मी की छाया मंडरा रही है। व्यापार चौपट होता जा रहा है, मित्र, सम्बन्धी, साझेदार सभी हाथ झटक चुके थे। मैं सारी बात समझ चुका था। पूजा से निवृत्त होने पर सेठ का सारा परिवार बड़े हॉल में इकट्ठा हुआ। वहीं सेठ ने अपनी समस्या मेरे सामने रखी—

"पंडितजी! ईश्वर ही जानता है मेरे उपर क्या वज्रपात हुआ है कि मैं दिवालियेपन की स्थिति पर पहुंच चुका हूं। आप उपाय सुझायें। मैं कुछ भी करने को तैयार हूं।"

मैंने कहा—"सेठजी, धैर्य धारण करें। जब आया हूं तो मैं कुछ करूंगा भी। आपके प्रश्न का उत्तर कल दूंगा। पर मैं आपका पूजा-स्थल देखना चाहता हूं।"

सेठ यकायक उठ खड़े हुए और कहा—"पधारें।"

मैंने उनके साथ चलकर पूजा-स्थल देखा और रही-सही शंका भी जाती रही। दिनभर व्यस्त रहा। ज्यों-ज्यों लोगों को मालूम होता गया आते रहे। रात के ग्यारह बज चुके थे, थक चुका था अत: शेष कल—कह लेट गया।

प्रात:काल ब्रह्म बेला में उठ नित्य कर्म से निवृत्त हो ध्यान लगाने बैठा—मन में बैचेनी भर। मन मस्तिक अस्थिर था। रह-रहकर सारा ध्यान सेठ की समस्या की ओर जाता था।

पूजन कर गणपति का स्मरण कर बाहर आया। देखा पूजा-गृह से समवेत स्वर-लहरी वेदपाठ की आ रही है। कदम यका-

यक उधर मुड़ गये। चुपचाप पूजागृह में जाकर एक रिक्त आसन पर बैठ गया। सेठ, सेठानी दोनों लड़की, पुत्र एवं पुत्रबधू सभी 'श्रीसूक्त' का पाठ कर रहे हैं। सामने 'श्री यन्त्र' एवं यंत्रराज 'वीसा' ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण किया रखा है।

मैं सुनता जा रहा हूं—'यकायक मुस्करा उठा। कुछ देर बाद फिर मुस्कराया। सेठ से नहीं रहा गया, अतः पूछ बैठे—'पंडितजी आप हंसे क्यों ?'

मैंने कहा—'यों ही, आप क्रम न तोड़ें, पाठ करते रहें। जब बार-बार मैं मुस्करा पड़ता तो सेठ ने जिद की—

'पंडितजी ! आपके मुस्कराने में कोई भेद है। कहना ही होगा। विश्वास है, निराश नहीं करेंगे।'

मैंने कहा—'आप पाट करें। स्वयं समझ जायेंगे।' पाठ का क्रम फिर चालू हुआ और पांचवे श्लोक पर आते हीं फिर हंस पड़ा।

खैर पाठ पूरा हुआ। इतने में ही सेठ की लड़की बोल उठी—'पंडितजी ! आप पांचवें श्लोक पर ही हंसते थे—क्या राज है ?'

मैंने कहा—'घर पर जो दारिद्रय के बादल छाये हैं उसका कारण भर इसी श्लोक में है।

सेठ ने स्पष्टीकरण चाहा।

मैंने कहा—आपके द्वारा किया गया पाठ ही सर्वनाश का कारण है।'

मेंने कहा—'अलक्ष्मी मे नश्यतां त्वां वृणोमी 'अर्थात् जो अलक्ष्मी अर्थात् दारिद्रय का नाश करे उस लक्ष्मी को वरण करना चाहता हूं किंवा पाना चाहता हूं अर्थात् दारिद्रय।'

सेठ परिवार को बात समझ में आ गई थी। मैंने कहा—'इतना ही नहीं आपने दक्षिण दिशा में पूजा-स्थल बना रखा है जो सर्वथा अशुभ है।'

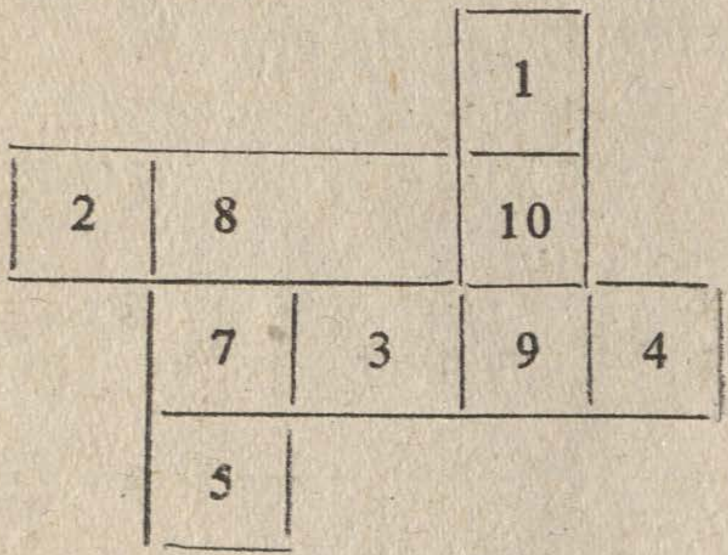
सेठ के आग्रह पर मैं एक सप्ताह तक वहां रुका रहा एवं शुभ मुहुर्त में 'वीसा यंत्र' की प्राण-प्रतिष्ठा करवाकर श्री सूक्त का भी अभ्यास करवाया। आज मां भगवती की कृपा से परिवार पूर्णतः समृद्ध है।

वाला यंत्र का स्पष्ट प्रभाव मैंने बार-बार देखा है और सच-मुच ऐश्वर्य, धन-मान-सम्मान देने में यह समर्थ है। नित्य यदि इसकी पूजा कर श्री सूक्त का 16 मंत्रों से पाठ किया जाय तो अवश्य ही जातक ऐश्वय प्राप्त करता है।

पाठकों के लिए 'श्री सूक्त' सहित यंत्र दे रहा हूं।

नाम.......................................

पिता श्री.............................गौत्र.......................



धातु—चांदी या ताम्रपत्र पर, प्रधानता चांदी को दी जानी चाहिए।

उत्कीर्ण—रवि पुष्य या गुरु पुष्य पर, प्रधानता गुरु पुष्य को दें।

प्राण-प्रतिष्ठार्थ मुहूर्त

नक्षत्र—अश्विनी, पुष्य, हस्त, उत्तरा फाल्गुनी, उतरापाढा, उतरा भाद्रपद, रोहिणी, रेवती, श्रवण, घनिष्ठा, शतभिषा, पुनर्वसु, स्वाति अनुराधा, मघा।

तिथि—4/9/14/8/15/30 इन तिथियों को छोड़कर

वार—चन्द्रवार, बुध, गुरु, शुक्रवार।

आवश्यक—प्राण-प्रतिष्ठा एवं षोड्षोचार पूजा।

नित्स—धूप-दीप एवं श्री सूक्त पाठ यथासंभव अधिक, पर न्यूनतम 21 पाठ।

बीजमंत्र—ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसरद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।।

इस बीज मन्त्र को पाठ के आरम्भ व अन्त में देना चाहिए। बहुत उत्तम हो यदि प्रत्येक मन्त्र के प्रारम्भ व अन्त में बीज मन्त्र का प्रयोग करें।

श्री सूक्त—

ॐ हिरण्यवर्णा हरिणीं सुवर्ण रजतस्रजाम्।
चन्द्रांहिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।।1।।
ॐ ताम्रआवह जातवेदो लक्ष्मीं मलयागामिनीम्।
यास्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्व पुरुषाहतम् ।।2।।
ॐ अश्वपूर्वा रथमध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मादेवी जूषताम् ।।3।।
ॐ कांसोस्मितां हिरण्यं प्रकारामार्द्रां तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वयेश्रियम् ।।4।।
ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसां ज्वलन्तीं
श्रियं लोके देव। जुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमि शरणमहं प्रपद्ये
अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ।।5।।
ॐ आदित्यवर्णे तपसोअधिजातो
वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलापि तपसानुदन्तु
मायान्तरा याश्च बाह्योऽलक्ष्मीः ।।6।।
ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्चमणिमा सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धि ददातु में ।।7।।
ॐ क्षुत्पिपासामलनां ज्येष्ठामलक्ष्मी नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धि च सर्वान्निर्णुद में गृहात् ।।8।।
ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुरूटां करीशिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्ये श्रियम् ।।9।।

ॐ मनसः कामना कूर्ति वचः सत्यमशी महि ।
पशूनां रूप मन्नस्य मयि श्री श्रयतां यशः ॥10॥

ॐ कर्दमेन प्रजा भूतां मयि सम्भव कर्दमः ।
श्रियं वासये मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥11॥

ॐ आपः स्रजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत बस मे गृहे ।
नि च देवीमातरं श्रियं वासय मे कुले ॥12॥

ॐ आर्द्रा पुष्करिणी पुष्टि सुवर्णा हेममालिनीम् ।
सूर्या हिरण्यमयी लक्ष्मी जातवेदो म आवह ॥13॥

ॐ आर्द्रा पुष्करिणी पुष्टि पिंगला पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रा हिरण्यमयी लक्ष्मी जातवेदो म आवह ॥14॥

ॐ तांम आवह जातवेदो लक्ष्मी मन पगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दस्योश्वान विन्देयं
पुरुषानहम् ॥15॥

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्य मन्त्रहम् ।
श्रियं पञ्चदशं च श्रीः कामः सततं जपेत् ॥16॥

प्रेतात्माओं के चमत्कारिक कार्य

पाण्डीचेरी में एक दिन एक साधु आया। मेरे नौकर ने मुझे सूचना दी कि एक साधु आपसे मिलना चाहता है। मैंने हिन्दू साधुओं की आश्चर्यजनक दक्षता के बारे में काफी सुन रखा था। मैंने साधु को भीतर बुला लिया। वह एक तेजस्वी मुख मण्डल वाला योगी था। मैंने खड़े होकर स्वागत किया। उसने कहा, 'महाशय ! मैं त्रिचन्नापली से आ रहा हूं, मेरा नाम गोविन्द स्वामी है। मैं प्रेतात्माओं का आह्वान कर उनसे सम्पर्क स्थापित कर सकता हूं व उनके चमत्कारिक कार्य भी प्रत्यक्ष दिखला सकता हूं।' मैंने गोविन्द स्वामी से यह कार्य प्रत्यक्ष दिखलाने के लिए कहा। वह तैयार हो गया। उसके कथनानुसार मैंने आवश्यक सामग्री मंगवा ली।

उसने कहा—'आह्वानकर्ता प्रतात्माओं के साथ बातचीत करने की शक्ति को अबोध रखना चाहता है तो कोई भी अपवित्र पदार्थ उसकी देह से छना नहीं चाहिए।' मैंने अपने मकान के सब किवाड़ बन्द कर दिए, जिससे कोई बाहर से भीतर नहीं आ सके। कमरे में एक हवनकुण्ड था। साधु ने उसमें थोड़ी सुगन्धित सामग्री डालकर जलाई। फिर वह पलथी मारकर फर्श पर बैठ गया। वह धीरे-धीरे मन्त्र पढ़ने लगा, मैंने भी उसके कथनानुसार प्रेतात्माओं का ध्यान किया। थोड़ी देर में अकस्मात् मैंने एक धक्के का अनुभव किया। मेरे कमरे के मध्य में एक हल्का चमकता हुआ बादल बना प्रतीत हुआ। उसमें से हाथों की मूर्तियां बड़ी जल्दी के साथ आती और जाती दिखाई देती थीं। कुछ ही पल में ऐसा जान पड़ा कि अनेक हाथ अपना वाष्पमय रूप खोकर मनुष्य के हाथों में परिवर्तित हो गये हैं। आश्चर्य की बात थी कि उनमें से जहां कुछ अधिक ठोस बन गए, वहां कुछ अधिक दीप्तीमान हो गए। उनमें से कुछ तो इतने पारदर्शक थे कि दीपक

के स्वच्छ प्रकाश में उनकी छाया पड़ रही थी और कुछ इतने पारदर्शक थे कि उनके पीछे रखी हुई वस्तु स्पष्ट दीख पड़ती थी। मैंने गिना तो वे बारह थे। मैंने साधु से कहा कि क्या मैं उनमें से किसी का स्पर्श कर सकता हूं? मेरी यह इच्छा प्रकट करते ही उनमें से अलग होकर एक हाथ मेरी ओर उड़ा। यह तरुणी स्त्री के हाथ के सदृश छोटा, कोमल और स्पर्श सुखद था। गोविंद स्वामी ने कहा—'यद्यपि केवल एक ही हाथ दिखाई दे रहा है, परन्तु प्रेतात्मा उपस्थित है, आप चाहें तो उससे बात कर सकते हैं।'

मैंने मुस्कुराते हुए कहा कि जब प्रेतात्मा का यह सुन्दर हाथ है, क्या वह अपनी निशानी के तौर पर मुझे कोई वस्तु देगी? इसपर मैंने देखा वह हाथ उड़कर एक गुलदस्ते के पास गया और उसमें से एक फूल तोड़कर उसने मेरे हाथ में दे दिया। इसके पश्चात् वह हाथ अन्तर्ध्यान हो गया। दो घण्टे तक यह दृश्य चलता रहा। कोई हाथ वायु में आग के अक्षरों में कुछ लिखकर गायब हो जाता। उनमें से कुछ शब्द इतने स्पष्ट थे कि मैंने शीघ्रता से पेन्सिल से उनको लिख लिया 'द्रवव्यापारे गत्वा' (अथवा मैंने तरल शरीर धारण कर लिया है।) इसके पश्चात् प्रेतात्मा ने लिखा 'आत्मानं श्रेयसा योत्पत: देहस्यास्य विमोचनम्' (अर्थात् जब आप इस मृत देह को उतार देंगे तब आपको आनन्द की प्राप्ति होगी।) क्रमश: सबके सब हाथ अन्तर्ध्यान हो गए।

इस समय हमें एक विभिन्न ध्वनि भर सुनाई पड़ी। प्रेतात्माएं जा चुकी थीं। इस सत्य चमत्कार को देखकर मुझे प्रेतात्माओं के अस्तित्व पर विश्वास हो गया। गोविन्द स्वामी दो-तीन रोज तक मेरे यहां ही रहे। उन्होंने प्रेतात्माओं के और भी चमत्कार दिखलाए यथा मनचाही वस्तुएं मंगवा देना, अचानक आकाश से पत्थर-रेत की वर्षा करना, वस्तु को अदृश्य कर देना एवं तिपाही को बिना सहारे हवा में उड़ा देना आदि। उपरोक्त घटना कपोल कल्पित नहीं है वरन् एक विदेशी विद्वान् की प्रत्यक्ष आंखों देखी है।

स्वयं इस लेखक द्वारा देखी एक घटना इस प्रकार है— लगभग दो माह पूर्व मेरे विद्यालय में एक सज्जन आए जो प्रेत विद्या

विशारद थे। उनका नाम बाबा माधवानन्द था। गृहस्थ जीवन त्याग चुके थे। तब उन्हें मामाजी (उपनाम) से ही पुकारते थे। जब हमने उनसे निवेदन किया कि हमारी व बालकों की इच्छा प्रसाद पाने की है। उन्होंने कहा कि एक थाली व दो-तीन अगरबत्तियां मंगवा लो। मैंने शीघ्र इसका प्रबन्ध कर दिया। बालक व अनेक अध्यापक तथा गणमान्य व्यक्ति एक बड़ी दरी पर बैठ गए। मामाजी ने स्नान कर थाली अपने हाथ में ले ली। उनके कथनानुसार अगरबत्तियां जला दी गईं। थाली पर कपड़ा ढक दिया। पांच मिनट मामाजी ने ध्यान किया और थाली पर से कपड़ा हटाया। आश्चर्य कई पैकेट चाकलेट, फल एवं तरह-तरह की मिठाइयां थाली में विद्यमान थीं। हम सबने वह प्रसाद ग्रहण किया, बच्चों में चाकलेट बांट दिए गये। यह कोई मदारी का इन्द्रजाल का मामूली खेल नहीं था। कोई धोखा-धड़ी इसमें नहीं पर मामाजी ने हमारे आग्रह करने पर भी कुछ पैसा नहीं लिया। सम्भव है मामाजी ने 'कर्ण पिशाचिनी या कोई प्रेत' सिद्ध कर रखा था। मामाजी ने बतलाया कि उन्होंने क्षण भर में कई बार रेलवे टिकटों का ढेर लगा दिया था, रुपयों का अम्बार लगा दिया था। जहां से उन्होंने ये वस्तुएं मंगवाई थीं, वहां ही वापस भिजवा दी थीं। उनके कथनानुसार सिद्धि का दुरुपयोग नहीं किया जाना चाहिए।

अपने अध्ययन काल में इलाहाबाद के जिस मकान में मैं रहता था उसकी मालिकन श्रीमती 'क' के पास एक प्रेत सदैव आया करता था। उनका सारा व्यवहार उस तरह का होता था, जिस तरह का पति का पत्नी के साथ होता है। वह प्रेत माध्यम के द्वारा कहता था कि वह इस स्त्री का पूर्व जन्म का पति है, इस लिए इससे मिलने आता है।

हेग के डाक्टर माल्थ और जेल्ट ने प्रेतात्माओं के साथ वार्तालाप करने के लिए 'डायनामिस्टोग्राफ' नामक एक यन्त्र का आविष्कार किया है और इसकी सहायता से उन्होंने बिना किसी मीडियम के परलोकगत जीवों के सन्देश पाए थे। इस यन्त्र के छोर पर एक अक्षर लम्बक लगा रहता है जिसके स्पर्श होने के साथ ही एक बड़े पतले कागज पर टाइप राइटर के जैसे अक्षर

उठते जाते हैं।

किसी योग्य मार्गदर्शक के निर्देशन में ही मृतात्माओं का आह्वान करना चाहिए। कभी-कभी निम्न श्रेणी की प्रेतात्माएं बिना बुलाए ही आ जाती हैं और उपद्रव करती हैं। शुभ आत्माएं सदैव मनुष्य का कल्याण करती हैं। प्रेतात्माओं के कार्य वास्तव में रहस्यमय व चमत्कारिक हैं।

धन-प्राप्ति के लिए

इस आर्थिक विषमता के युग में जीवन-यापन की मूलभूत जरूरत धन है। आये दिन 5-10 पत्र इस समय कार्यालय को प्राप्त हो जाते हैं जिनमें व्यवसाय हानि, कार्य-असफलता, ऋण ग्रस्तता, जीवन-यापन के उपाय न होने का उल्लेख रहता है। मैं तत्सम्बन्धी उपाय बताऊं उससे पूर्व एक घटना का उल्लेख करना परम आवश्यक समझता हूं।

लगभग 1973 की बात है। मैं अपने कार्यालय में बैठा पुस्तक लेखन कर रहा था। मन में एकाग्रता तो थी ही। एकाग्रता बिना लेखन नहीं हो सकता। लगभग प्रातः 9 बजे का समय था। यकायक मुझे ऐसा लगा कि कोई मुझे बुला रहा है, बार-बार आवाज दे रहा है। मन विचलित हो गया, लेखन कार्य रुक गया, मन-मस्तिष्क में हलचल मच गई। चारों ओर देखा कोई नहीं है। खैर ! दिन यों ही निकल गया। शाम से रात हुई। मन भारी था, रात गहरा गई थी, कार्य बन्द कर लेट गया। कुछ ही समय बाद नींद ने डेरा जमाया। यकायक स्वप्नावस्था थी या जाग्रतावस्था, कह नहीं सकता। पर···इतना अवश्य याद है कि कोई मुझे उठा रहा है। हड़बड़ाकर आंख खोली तो देखा मेरे सामने एक दिव्य रूप पूर्ण सुन्दर, चिर युवा पुरुष खड़ा है। सर्वांग सुन्दर, दिव्य रूप, सुन्दर नेत्र, उन्नत भाल, घुंघराले केश कन्धों तक लटकते हुए, अतीव तेजवान, तेजस्वी मुखारबिन्द,

गौरवर्ण, पीतवस्त्र, पांवों में खड़ाऊं, यकायक बालरूप दिव्य पुरुष के होंठ हिले—

'मत घबरा ! घबरा मत ! उठ और मेरे संग चल ! मैं तुझे वह दूंगा जो किसी ने नहीं दिया ! मेरे पीछे चलता चला आ !'

मैं चकित रह गया, किंकर्त्तव्यविमूढ़। तन-मन का होश नहीं। मैं अपना व्यक्तित्व खो चुका था। दूर···दूर बहुत दूर चलता चला गया। अन्ततः नदी के किनारे उनके रुकने पर मैं भी रुक गया ! दिव्य पुरुष ने कहा—'बैठ ! बैठ जा !'

मैं वहीं बालू रेत पर बैठ गया और तब उन्होंने मुझे एक विशेष यन्त्र दिया, उसकी पूजन विधि समझाई और कहा—

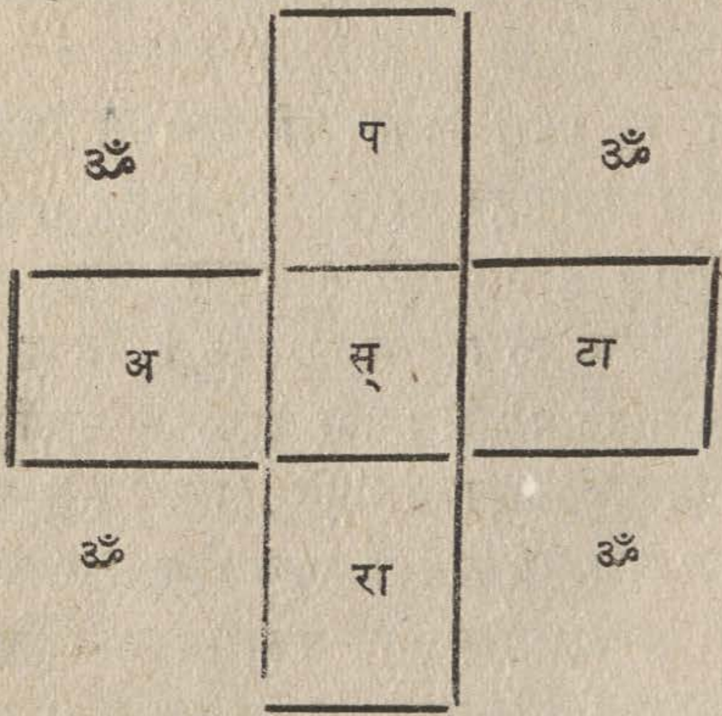
'जा, आज से तू हर कार्य में सफल होगा। अभावों से मुक्ति मिल जाएगी। इसका अधिकाधिक प्रचार-प्रसार करना। हर वह व्यक्ति जो इसका विधि-विधान से प्रयोग करेगा वह अपने हर उद्देश्य में सफल होगा। तथा इस भौतिक-जीवन में समस्त ऐश्वर्य भोगेगा तथा सुखी रहेगा। उत्तम स्वास्थ्य, ऐश्वर्य एवं श्रेष्ठ भाग्य को प्राप्त होगा।'

मैं सुनता रहा, यकायक आवाज आना बन्द होने पर नजर उठाकर देखा ! आश्चर्य ! दिव्य रूप गायब था।

मैं अनमना सा उठा और घर की ओर लौट पड़ा। वह भी दिन था और आज का दिन है मुझे कोई अभाव नहीं है। इस दिन से मैंने यह प्रयोग कम-से-कम एक हजार से अधिक लोगों पर किया है एवं मां भगवती की कृपा से सदैव सफल रहा हूं। आज वही प्रयोग मैं पाठकों को देने से पूर्व यह स्पष्ट कर दूं, यन्त्र प्राण प्रतिष्ठा की विधि अवश्य जटिल है अतः सुयोग्य कर्मकांडी विद्वान से प्राण-प्रतिष्ठा करवा कर यन्त्र पूजन व मन्त्र जाप करे। लाभ होगा ही इसमें संशय नहीं। यदि पाठकों को किसी प्रकार की

दिक्कत आये तो कार्यालय को लिखें मैं यन्त्र व्यवस्था का आश्वा-सन देता हूं।

यन्त्र—



मन्त्र ताम्र पर खुदवाया जाना चाहिए तथा प्राण-प्रतिष्ठा रवि पुष्य या गुरु पुष्य के दिन होना आवश्यक है। यन्त्र को पूजा स्थल पर रखना आवश्यक है। नित्य यन्त्र का पूजन होना चाहिए। संक्षेप में जल से स्नान करना, मोली (कलावा) चढ़ाना, रोली कुमकुम तिलक, चावल, अबीर, गुलाल चढ़ाकर मन्त्र जाप किया जाना जाहिए। मन्त्र श्रद्धानुसार, जितना समय मिले उतना जाप किया जाना चाहिए।

मन्त्र—'ॐ ऐं ह्री क्लीं मम वाञ्छित देहि मे स्वाहा।'

अनुभवसिद्ध मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र

कई बार प्रायः ऐसा देखा गया है कि किसी रुग्ण व्यक्ति का रोग निदान नहीं हो पाता और बिना रोग निदान हुए उचित चिकित्सा नहीं की जा सकती, अतः इसके लिए एक अनुभवसिद्ध

यन्त्र दिया जा रहा है। यन्त्र निम्न प्रकार से नीचे लिखे अनुसार केसर व अनार की कलम से कागज पर लिखें। इसपर धूप अगरबत्ती करे। तत्पश्चात् वह यन्त्र रोगी को दिखाएं। यन्त्र को देखते ही रोगी हंसने लगे तो देव दोष या शाकिनी दोष जानना चाहिए और न बोले तो शारीरिक रोग समझना चाहिए।

पीलिया हल्दिया (जांड़िस) रोग का अक्सीर इलाज

मन्त्र—ॐ नमो आदेश गुरु का रामचन्द्र सर सान्धा बाण काला, पीला, थोथा पीला चारों झड़ रामचन्द्रजी याके नाम मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ॥'

विधि—सात सुइयां लेकर सात बार इस मन्त्र को पढ़कर सुइयों पर फूंक लगाते रहें। फिर सुईयों को कांस्य की कटोरी में रखें। कटोरी को मिट्टी के ढक्कन से ढक दें। सायंकाल कांस्य की कटोरी में शुद्ध जल भरकर उसे ढक दें। तत्पश्चात रोगी के सिर से पैरों तक सात बार घुमा लें। घुमाने के बाद रोगी की चारपाई के नीचे सिरहाने की तरफ रख दें। प्रातःकाल सुइयां हाथ में लेकर पानी किसी दीवार पर डाल दें। रोगी के पीलिया हल्दिया (जांडिस) रोग से पीड़ित होने पर पानी का रंग लाल अथवा पीला होता रहेगा और रोगी को धीरे-धीरे आराम होने लगेगा। ऐसा 7-8 दिन करने पर रोगी का रोग पूर्ण रूप से शांत हो जायेगा और रोगी स्वस्थ हो जायेगा। यह अनुभवसिद्ध है। जब उस पानी का रंग निर्मल पानी के रंग जैसा रह जाये तो रोग पूर्ण रूप से समाप्त समझना चाहिए। तत्पश्चात् उन सुइयों को तालाब में डाल देना चाहिए।

नोट—मन्त्र पढ़ते समय अगरबत्ती धूप करनी चाहिए व दूसरे बच्चों को सीरनी (प्रसाद) देनी चाहिए। इस सम्बन्ध में विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिए पाठक लेखक से पत्र-व्यवहार कर सकते हैं।

कठिन कार्य की पूर्ति वास्त अनुष्ठान

कवन सो काज कठिन जग मांहीं। सो नहीं होत तात तुम पाहीं।
पापहि वायु जन आरत भारी। मिटहि कुसंकट होहि सुखारी॥

इन उक्त चौपाईयों का प्रत्येक दोहे के बाद चौपाई के पूर्व में सम्पुट लगा विधि-विधान के सम्पूर्ण रामायण का पाठ करें तो अवश्य संकट मिटेगा और सुख होगा, कार्य होगा। भगवान भूत-नाथ ने रामायण की प्रत्येक चौपाई में मन्त्र की शक्ति प्रदान कर दी है। मानस के ही गायक ने मानस वास्ते लिखा है—

मन्त्र महामणि विषय व्यालके। मेटल लिखत कुअंक भाल के।
जे सकाम नर सुनहि जे गावहि। सुख सम्पत्ति नाना विधि पावहि॥

बाल ज्वर नाशक सिद्ध धूप

गूगल, बच, कूठ, मैनसिल शिलाजीत, हल्दी और आम्बी-हल्दी, नीम के पत्ते और शहद इन सबको बराबर मात्रा में कूट-कर घृत में मिलाकर धूप बना लें। ज्वर होने पर वह धूप दें तो सबको खासकर बालक शिशुओं के वेग तुरन्त नष्ट होता है। और बालक निरोग हो जाता है।

एकान्तरानाशक यन्त्र

इस यन्त्र को कागज पर लिखकर कच्चे सूत के डोरे में बांध-कर, धूप देकर गले में धारण करें, अवश्य ही एकान्तरा चला

जायेगा। इस यन्त्र को 108 बार लिखकर नदी में प्रवाहित करा देवें तब सिद्ध हो जायेगा। यह यन्त्र एकान्तरा जाने पर गले से उतार करके ठंडा कर देवें। यह कम-से-कम 500 दफा अपनाया हुआ है। यन्त्र यह है—

36 सु 36

देवदत्त श्रजा	बुक 2

36 गी 36

अमोघ दुर्गेश महामन्त्र

आज के अशान्त युग में प्रायः सभी मानव मात्र अपनी अपूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने का इच्छुक है। संकल्पित कामनाएं अनेक हैं और उनकी पूर्ति के लिए इष्टोपासनार्थ मन्त्र तन्त्रादिक भी बहुत हैं। उनके सार्थक होने के निर्णय तो प्रत्यक्ष अनुभव की कसौटी पर कसकर ही किये जा सकते हैं।

लगभग 30 वर्ष हुए मुझे एक महान तपस्वी, सिद्ध शक्ति उपासक महात्मा मिले थे। कुछ समय सेवा सुश्रूषा में साथ रहने का संयोग बना, उन्होंने कृपा करके मुझे यह सभी कामनाओं में सफलता देने वाला अचूक अमोघ दिव्य महामन्त्र जो बीज पल्लवों एवं सम्पुटों से सम्पन्न सर्वांगपूर्ण हैं—प्रदान किया, जिसका मैंने स्वयं प्रयोग करके, और मेरे मिलने वालों ने भी प्रयोग करके विभिन्न कामनाओं में पूर्ण सफलता के दर्शन व अनुभव किये हैं।

अतएव सभी कामनाओं की सिद्धि के लिए यह एक ही अमोघ महामन्त्र है। इसी को आज मैं सर्वजन हितार्थ प्रकाशित कर रहा हूं।

'कलौचण्डी विनायकों' के सिद्ध वाक्य से इस युग में मुझे यह अचिन्त्य शक्ति सम्पन्न प्रतीत हुआ है। इसकी उपासना में न कोई खतरा है, न भय, न विधि जटिल है, न बहुत खर्चीली है। इसपर भी किसी साधक सज्जन को कहीं भी शंका हो तो केवल पोस्टेज भेजकर समाधान प्राप्त कर सकते हैं। जिसकी कोई भेंट व फीस नहीं होगी।

इसके व्यापारी, व्यवसायी, नौकरी चाहने वाला, शत्रुओं से पीड़ित, रोगी, राजभय और शत्रु भय से घिरा हुआ, विद्यार्थी, विवाहोत्सुक, ऋणी, धन चाहने वाला, सर्वत्र विजय की इच्छा वाला, बन्धन से मुक्ति चाहने वाला, सन्तान का इच्छुक, समानार्थी कोई भी उपासक हो सकते हैं, स्त्रियां भी कर सकती हैं। करके

देखेंगे अवश्य मनोरथों में शत-प्रतिशत सफलता मिलेगी। दृढ़ता एवं विश्वास-भक्ति श्रद्धा से किया जाये।

यह सिद्धिप्रद महामन्त्र अनुभूत है। इसका प्रयोग 55 दिन का है। जप संख्या 55 हजार है।

विधि—नित्य शौच स्नानादि से निवृत्त होकर भगवती सिंह-वाहिनी दुर्गा के चित्रपट (फोटो) पर धूप, दीप, नैपेद्य आदि से श्रद्धा भक्ति पूर्वक पूजन करके उत्तराभिमुख पवित्र आसन पर बैठ। मां सामने हो, जप स्पष्ट उच्चारण के साथ 10 माला नित्य करें। शुद्ध गौघृत का दीपक लगावें। सुगन्धित अगरबत्ती जलती रहे। नैवेध में मेवे की शुद्ध मिठाई या मिश्री मिला हुआ दूध हो। साधक एक बार केवल दूध, खीचड़ी, थूली (फीकी) का भोजन करें। भूमि में सोवें, ब्रह्मचर्य का पालन करें, पान न खावें, बीड़ी न पीयें। उपासना गृह में स्वयं के सिवाय किसी और को जाने न देवें।

महा मन्त्र

'ॐ श्रीं नमः ॐ दुग स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभांद दाति। ॐ ह्रीं बदन्तिके यच्चदूरके भयं विन्दतु मामिह पवमानाऽवतजहि। यदुत्थतं भयं भगवति दुर्गे तत्सर्वं शमय स्वाहा, दुर्गा-देवीं शरणमहं प्रपद्ये। प्रतिकूल मम नाशय अनुकूलं मेप्रयच्छः। ह्रीं ॐ दारिद्रच दुखः भयहारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता। नमः श्री ॐ हुं फट् स्वाहा।'

शिवरात्रि : उद्भव और विकास

भारतीय संस्कृति में महाशिवरात्रि एक प्रमुख एवं पुण्य पर्व है। भारतीय मान्यता के अनुसार आज ही के दिन भगवान शिवजी का प्रादुर्भाव हुआ था, अत: आशुतोष भगवान शंकर जी की जयन्ती के रूप में यह पर्व मनाया जाता है। इस अवसर पर करोड़ों भक्त भगवान शिवजी के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास व्यक्त करते हुए अपनी शारीरिक व मानसिक पवित्रता के लिए समस्त दिन उपवास रखकर सायंकाल भक्तिपूर्वक शिवजी का पूजन कर अपने को धन्य समझते हैं।

मुख्यत: शिवरात्रि शिव सम्प्रदाय का महान पर्व है, अन्य भारतीय सम्प्रदायों में भी शिवरात्रि पर्व श्रद्धा से मनाया जाता है।

मिट्टी के पार्थिव शिवलिंग बनाकर भक्ति भाव से पूजा की जाती है। विशेष भक्ति एवं नियम वालों के हेतु यह विधान है कि वे शिवरात्रि के पहले दिन ही हविष्य और एकाहार भोजन करे, शिवरात्रि के दिन और पूरी रात उपवास कर दूसरे दिन प्रात: भोजन करे। भजन-कीर्तन आदि से रात्रि भर जागरण करें और रात्रि के चार प्रहरों में चार बार पहले पहर में 'उमा' के साथ दूसरे में तीसरे पहर में 'गौरी' के साथ और चौथे पहर में 'नील लोहित 'गौरी' के साथ (इन नामों का उच्चारण कर) पूजा का विधान है।

जनसाधारण दिन में उपवास कर सांय सूर्यास्त के बाद शिव का पूजन कर फलाहार भोजन करते हैं।

अनेक भक्त विविध मनोकामनाओं के आधार पर अपने घर यथासंभव ग्यारह, एक सौ आठ, ग्यारह सौ, ग्यारह हजार या सवा लाख शिवलिंगों का निर्माण कर शिवजी का पार्थिव पूजन

करते हैं और वैदिक मन्त्रों एवं रुद्राभिषेक पाठ से भगवान शंकर का महाभिषेक करते हैं। शास्त्रीय विधानानुसार अलग-अलग कामनाओं के अनुसार विभिन्न द्रव्यों से भगवान शंकर के पार्थिव लिंग तैयार किये जाते हैं—जैसे दीर्घायु हेतु हीरे के, सौभाग्य हेतु नमक के, प्रेम हेतु गुड़ के, वंश वृद्धि हेतु बांस के अंकुरों के, रोग शान्त्यर्थ गोबर के, शत्रुनाशार्थ हड्डियों के, दूब तथा गिलोय के अपमृत्यु परिहारार्थ, शान्ति हेतु कपूर के, इत्यादि। इस प्रकार विविध मनोकामनाओं के अनुसार विविध द्रव्यों से शिवजी का महाभिषेक भी किया जाता है—जैसे वर्षा हेतु जल से, रोगशान्त्यर्थं कुशोदक से, सन्तान प्राप्ति हेतु दूध या दही से, धन प्राप्ति हेतु गन्ने के रस से, शत्रुनाशार्थ सरसों के तेल से इत्यादि। सूर्यास्त के बाद सायंकाल प्रदोष वेला में महाशिवरात्रि का मुख्य पूजन समाप्त कर भक्तगण शुद्ध सात्विक फलाहार भोजन कर भजन-कीर्तन के द्वारा रात्रि जागरण से व्यतीत करते हैं। प्रातः पुनः उतरांग पूजन करने के बाद इस व्रत की सभाप्ति होती है। लिंग महापुराण में शिवरात्रि से सम्बन्धित एक रोचक कथानक मिलता है। महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर अनजाने में ही एक भूखा भिखारी शिकार न मिलने पर किस प्रकार दिन भर का थका-हारा शिकार की ताक में सायंकाल एक बेल के पेड़ पर छुपकर बैठ गया और हिरणी को फंसाने के उद्देश्य से बेल के पत्ते तोड़कर नीचे फेंकता गया—लेकिन शिवरात्रि के दिन अनजाने भूखे रह जाने से उपवास हो जाने तथा बेल वृक्ष के नीचे स्थित भगवान शिव के लिंग के ऊपर अनजाने विल्वपत्र चढ़ाने से किस प्रकार उसकी बुद्धि शुद्ध हुई और स्वर्ग में प्रतिष्ठित हुआ। आकाश में मृग व्याधा नक्षत्र मंडल का प्रसिद्ध 'लुब्धक' अर्थात् शिकारी नामक तारा को उसी शिकारी का प्रतीक माना गया है।

भगवान शिव की स्थापना का अस्तित्व अत्यन्त प्राचीन है; यदि यह कहा जाय कि शिव की उपासना ही सबसे प्राचीन है तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी—यह इससे सिद्ध होता है कि आर्यों के प्राचीन एवं सबसे मुख्य धर्म-ग्रन्थ चारों वेदों में शिवजी की प्रशंसा एवं प्रार्थना सम्बन्धी प्रचुर साहित्य है, इतना साहित्य अन्य किसी देवी-देवता से सम्बन्धित नहीं है। विषय में अनभिज्ञ कुछ लोगों को 'लिंग' के रूप में शिवजी के पूजन तथा उनके उग्र 'भी'

'कपर्दि' आदि रूपों को लेकर यह दिग्भ्रांति है कि मूर्ति पूजा तथा लिंग पूजा वैदिक नहीं है तथा 'शिव' अवैदिक देवता थे और आर्यों ने लिंग पूजा तथा शिवोपासना अनार्यों से ग्रहण की। यह उनकी निराधार कल्पना है। ऋग्वेद में भगवान शिव के स्वरूप की अत्यन्त सजीव कल्पना मिलती है जिसमें उन्हें 'अति सुन्दर, नित्य युवक अर्थात् चिरयुवा, मनोहर ठोढी और दृढ़ मांसपेशियों से युक्त, गौर वर्ण वाले' कहा गया है। पुरातत्व की दृष्टि से भी शिवपूजा एवं लिंगपूजा की प्राचीनता सिद्ध होती है क्योंकि सिन्धु घाटी की खुदाई में भी ध्यानस्थ शिव की मूर्तियां तथा अनेकों शिवलिंग प्राप्त हुए हैं।

जहां तक लिंग पूजा का प्रश्न है—'लिंग' भगवान शिव का प्रतीक है। शैव दर्शन के अनुसार यह समस्त सृष्टि शक्ति अर्थात् मातृरूपा प्रकृति तथा पुरुष रूपी परमात्मा शिव के संयोग से हुई है, अतः शिवलिंग पुरुष अर्थात् 'पुल्लिंग' का प्रतीक है और अर्धा अथवा शक्ति 'स्त्रीलिंग' अर्थात् प्रकृति रूपा मातृ का प्रतीक है—इस प्रकार शिवलिंग तथा शिवशक्ति इस समस्त सृष्टि के उत्पत्ति के मूलाधार के प्रतीक रूप हैं, वेदों में शिव को जहां पूर्ण ब्रह्म माना है वहां उपनिषदों ने उन्हें परब्रह्म का तृतीयांश माना है। पुराणों के अनुसार जब परब्रह्म से सनकादि मानस पुत्रों ने आगे सृष्टि का विस्तार करना अस्वीकार कर दिया तो उन्होंने क्रोधपूर्वक अपनी भृकुटि से भव आदि ग्यारह रुद्रों को उत्पन्न किया, यही रूद्र ही शिव है, जो परमात्मा परब्रह्म का तामस अंश है।

यों तो शिव पूजा का प्रचार-प्रसार समस्त भारत में ही नहीं भारतेतर देशों में भी है। कुछ विद्वानों एवं दार्शनिकों का तो यह भी कहना है कि इस्लाम धर्मावलम्बियों के मुख्य तीर्थ काबा एवं मक्का में जो पत्थरों के पिंड हैं वे शिवलिंग के ही प्रतीक हैं, क्योंकि इस्लाम के जन्म के पहले वे लोग आर्य धर्मावलम्बी थे।

इतिहास इस बात को स्वीकार करते हैं कि 'काबा' पर हजरत मुहम्मद साहब के आधिपत्य के बाद वहां पर स्थित पूजा स्थान (संगे असवद) की मूर्ति तोड़ दी गई किन्तु फिर भी 'संगे असवद' जो कि हजरत इस्माइल के समय से चला आ रहा था

उसे रसूल (पैगम्बर) बनने से पहले वर्तमान स्थान पर रखा। आज भी प्रत्येक हजयात्री उसके प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हैं। उल्लेखनीय है कि हजयात्री 'काबा' की सात परिक्रमा (प्रदक्षिणा) करते हैं, विश्व में इसके अलावा और किसी भी मस्जिद में न तो इस प्रकार परिक्रमा की जाती है और न ही इस्लामी कर्मकाण्ड में परिक्रमा करने का कोई विधान ही है। यों इस्लाम धर्मावलम्बियों का यह विश्वास है कि यह पत्थर (लिंग) अल्लाह ने हजरत आदम के पास भेजा था। कुछ लोग यह भी प्रमाण देते हैं कि हजरत मौहम्मद साहब के चाचा उमरविहनश्शाम शिव भक्त थे, जिसका वर्णन प्रसिद्ध अर्बी काव्य-संग्रह 'अरल ओकुल' में मिलता है।

हिमालय के पर्वतीय अंचल में शिवरात्रि का अपना एक अलग ही महत्त्व, विशेषता है। हो भी क्यों नहीं—यह प्रदेश शिव का निवास-स्थल व उनकी ससुराल जो है। ज्योतिर्लिंगों में 'श्री केदारनाथ' तथा 'योगेश' तथा जागेश्वर इसी क्षेत्र में हैं। इन प्रदेशों में सूर्योदय से पहले ही शिव भक्तों में एक नया उत्साह एवं विश्वास दृष्टिगोचर होता है। ब्रह्म वेला में ही वृद्ध शीतल जल से स्नान एवं नित्य कर्म से निवृत्त होकर दूरस्थ शिव मन्दिरों को भगवान शंकर के गुण गाते, प्रार्थना करते, आराधना एवं दर्शन को चल देते हैं। पवित्र नदियों के संगमों, शैल शिखरों पर स्थित मन्दिर घण्टा निनाद से गूंज उठते हैं। मन्दिरों के प्रांगण वेदपाठी विद्वानों के द्वारा अपनी स्वयं तथा यजमानों की निरोगता, दीर्घायु, रोग शान्ति आदि विविध मनोकामनाओं के लिए सामूहिक वेद पाठ की सस्वर वेद-ध्वनि से गुंजायमान हो उठते हैं। मन्दिरों का आध्यात्मिक पवित्र वातावरण, अपूर्व शान्तिदायक होता है। प्रमुख मन्दिरों में मेले भी लगते हैं।

शान्तिपाठ

ॐ स्वस्तिनइन्द्रो वृद्धश्रवा: स्वस्तिन: पूषा विश्व वेदा:।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमि: स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥1॥
ॐ पय: पृथिव्याम्पय: औषधिषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधा:।
पय स्वस्ति: प्रदिश: सन्तु मह्यम् ॥2॥

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णो: श्नप्त्रेस्थो विष्णो: स्यूरसिव्विष्णो:
ध्रवोसि, वेष्णव मसि विष्णवेत्वा ॥3॥

ॐ अग्निर्देवता व्वातोर्देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो
देवता रुद्धा देवतादित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता
वृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥4॥

चत्वारि श्रृंगात्रयो अस्यपादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य ।
त्रिधाबद्धो वृषभो रोरवीति महादेवो मर्तंग आविवेश ॥5॥

नम: शम्भवाय च मयो भवाय च नम: ।
शंकराय च मयस्कराय च नम: शिवाय च शिवतराय च ॥6॥

शंन्नोमित्र: शंवरुण: शन्नोभवत्वर्यमा ।
शन्नोव्वात: पवता ᳠ शन्न स्तपतु सूर्य: ।
शन्न: कनिक्रद्र द्वे व: पर्जन्योऽभिवर्षतु ॥7॥

ॐ भद्रंकर्णेभि: श्रृणुयामदेवा भद्रम्पश्येमाक्ष भिर्यजत्रा: ।
स्थिरेरंगे स्तुष्टुवा ᳠सस्तनूभिर्व्वंयशमहि देवहितं यदायु: ॥8॥

यतोयत: समीहसे ततोनोऽभयं करूशन्न: कुरूप्प्रजाम्यो
भयन्न: पशुम्य: ॥9॥

विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव ।
यद्भद्रं तन्न आसुव ॥10॥

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ᳠शान्ति: पृथिवी शान्तिराप: शान्ति
रोषधय: शान्ति: वनस्पतय: शान्तिर्विश्वेदेवा: शान्ति ब्रह्म
शान्ति: सर्वघुं शान्ति:
शान्तिरेव शान्ति सामा शान्ति रोधि: ॥11॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति सुख शान्तिर्भवतु ॥

अब हाथ जोड़कर गणपति का ध्यान निम्न मंत्रों से करें ।

गणपति ध्यान

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गज कर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥1॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भाल चन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥2॥

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे संकटे चैव विघ्न स्तस्य न जायते ॥3॥

शुक्लांबरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्व विघ्नो पशान्तये ॥4॥

लाभस्तेषां जय स्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।
येषामिन्दीवरस्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥5॥

अभीप्सितार्थं सिध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ।
सर्वविघ्नछिदे तस्मै गणाधिपतये नमः ॥6॥

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्ये त्र्यंबके गौरी नारायणि नमोस्तु ते ॥7॥

सर्वदा सर्व कार्येषु नास्तितेषाममंगलम् ।
येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनोहरिः ॥8॥

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चंद्रबलं तदेव ।
विद्याबलं दैव बलं तदेव लक्ष्मीपते ते युगस्मरामि ॥9॥

यत्र योगीश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
यत्र श्रीविजयोर्भूति ध्रुवानीतिर्मतिर्मम ॥10॥

अनन्याश्चिन्तयंतोमां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्या युतानां योग क्षेम वहाम्यहम् ॥11॥

स्मृते सकल कल्याणं भोजनं यस्य जायते ।
पुरुषस्तं भजेन्नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ॥12॥

सर्वेष्वारम्भ कार्येषु त्रयास्त्रि भुवनेश्वरा ।
देवादिशंतु नः सिद्धि ब्रह्मज्ञान जनार्दनः ॥13॥

विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्म विष्णु महेश्वरान् ।
सरस्वती प्रणम्यादो सर्वं कार्यार्थ सिद्धये ॥14॥

ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः।

ॐ उमा महेश्वराभ्यां नमः।

ॐ वाणी हिरण्यगर्भाभ्यां नमः।

ॐ शुचिपुरन्दराभ्यां नमः।

ॐ माता पितृ चरण कमलेभ्यो नमः।

ॐ कुलदेवताभ्यो नमः।

ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः।

ॐ ग्राम देवताभ्यो नमः।

ॐ स्थान देवताभ्यो नमः।

ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।

ॐ सर्वेभ्यो वेदेभ्यो नमः।

ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।

अब पाठक को संक्षिप्त संकल्प लेना चाहिए। अपने दाहिने हाथ में या आचमनी में जल लेकर उसमें अक्षत व पुष्प डालकर संकल्प करें।

यन्त्र मन्त्र एवं तन्त्र के तत्त्व

मातु मृत्यु पितु समन समाना।
सुधा होई विष सुन हरि जाना॥
मित्र करैं शत रिपु कर करनी।
सुरसरि तासु बुधा वैतरणी॥
राखि को सकहि राम कर द्रोही।

माता मृत्युवत् कष्टदायक हो सकती ? हां !
पिता साक्षात् यमराज भी हो सकता है ? हां !
मित्र-मित्र सहस्रों शत्रु के काम करेंगें ? हां !
गंगा स्नान करने से नर्क भी हो सकता है ? हां !

फिर अमृत सदृश मन्त्रों की उपासना विष तुल्य यदि हो जाये तो आश्चर्य ही क्या। क्योंकि उपर्युक्त (तुलसीकृत) सत्य, शाश्वत्, अनुभूत सूत्र है। अतः किसी वस्तु या मनुष्य पर पूरा भरोसा कभी नहीं करना चाहिए। फिर प्रश्न उठता है कि पूरे भरोसे वाली वस्तु कौन-सी है ? ऐसे संकट में सदगुरु ही रक्षा करता है। परन्तु गुरु आपको सही मिलेगा या नहीं ? यह जरूरी नहीं है कि आपको गुरु बिलकुल शुद्ध ही मिल जाय। गुरु ठग, स्वार्थी भी मिल सकता है।

एक बार गोस्वामी तुलसीदासजी के पास एक व्यक्ति पहुंचा और वशीकरण मन्त्र पूछा। तुलसीदासजी ने कहा, बैठो। किन्तु मुझे इतना बताओ कि मन्त्र दूं या मन्त्र के तत्त्व ? अर्थात् मन्त्र बताने से वह एक ही बार काम आयेगा और उसके विपरीत तत्त्व को तुम किसी भी समय काम में ले सकते हो क्योंकि वह हर समय शाश्वत रहेगा। बीजमंत्र तो तत्त्व रूप से निहित है। गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं—

'तत्त्व से जो मुझे जानता है, वही जानता है अन्यथा नहीं

जानता।' यदि मन्त्र दूंगा तो कोई वशीकरण सिद्ध नहीं होगा परन्तु तुम मेरे वशीभूत हो जावोगे। तुम्हारे वशीभूत कोई नहीं होगा। अतः आगन्तुक ने वशीकरण के तत्त्व को प्राप्त करने की जिज्ञासा की। तुलसी सरल हृदय हो गये थे अतः सहज भाव से सही बात समझा दी जो साधारण व्यक्ति महत्वहीन समझते हैं।

तुलसी मीठे वचन से सुख उपजत चहुं ओर।
वशीकरण एक मन्त्र है तज दे वचन कठोर॥

इतने में दूसरा जिज्ञासु आया, उसने त्रिलोक वशीकरण का मन्त्र पूछा जो कि बाजारू पुस्तकों में उपलब्ध है। केवल मनोरंजक या पथभ्रष्ठ होने के लिये ही है परन्तु दयालु महापुरूषों से सत्य लिखा तो लोगों को विश्वास नहीं आया क्योंकि—'सत्य पर विश्वास नहीं और असत्य पर भरोसा यही अविद्या है।'

तत्त्वों का दिग्दर्शन महापुरूषों ने तुरन्त किया और समझा दिया जिसकी सारी विधि एक साधारण सूत्र में बांधी जा सकती है—

'जो गुरु चरण रेनु सिर धरहीं।
ते नर सकल वैभव बस करहीं॥

किन्तु लोग सुगम मार्ग तजकर दुर्गम मार्ग अपनाते हैं इसका मुख्य कारण अविद्या है।

'तजि श्रुतिपंथ वामपथ चलहीं' इत्यादि। अनेक व्यक्ति मुझ से अदृश्य होने के बारे में पूछते हैं किन्तु यह प्रश्न मात्र कौतुहल वंश पूछे जाते हैं और स्वप्न सुन्दरी के स्वप्न की कल्पना करते हैं। वे भूल जाते हैं कि अदृश्य होने में कितनी कठिनाई है। गंभीरता का लोप होना ही इस प्रश्न का उत्पादक या इस प्रश्न की जननी है। प्रश्न है पदार्थ अदृश्य कब होता है? क्रिया साधारण मनुष्य की कार्यक्षमता से बाहर है। विभुतिपाद में अदृश्य होने की दो शर्तें हैं—(1) दृश्य शक्ति का अवरोध (2) द्रष्टा शक्ति का अवरोध अर्थात् पदार्थों में दृश्या शक्ति है द्रष्टा में दृश्य शक्ति। अंधेरे में दृश्य शक्ति का लोप हो जाता है इसलिए पदार्थ काले पदार्थ नहीं दिखते। पाठक सोचें कि प्रकाश में दृश्या शक्ति का अवरोध करना साधारण बात नहीं अतः अदृश्य होने की क्रिया अतिभौतिक क्रिया है (असाधारण)। इसमें दृश्य और द्रष्टा शक्ति

का अवरोध करना पड़ता है। यह अत्यन्त दृढ़ भौतिक क्रिया से ही संभव है। यह यदि असंभव नहीं तो संभव भी नहीं है। मैंने कई तन्त्र करके देखे किन्तु तन्त्र-मन्त्र में शक्ति नहीं कि ऐसा कर सके। इसलिए खोज जारी है जिससे दूसरे जिज्ञासु को सुविधा हो, व्यर्थ समय नष्ट न करे। हिमालय की कन्दराओं में आज भी वे योगी वर्तमान हैं। किन्तु बाजार में तो कम से कम नहीं।

हठयोग एवं चौंसठ योगिनी

हठयोग के अन्दर ब्रह्मा को निराकार रूप में देखा जाता है यूं शून्य ब्रह्म के उपासक हुआ करते हैं :—

'बसती न शून्यं, शून्यं न बसती, अगम अगोचर ऐसा।
गगन सिखर पर बालक बोले, ताका नाम धरोगे कैसा।'

आराध्य देवता वही है जो कि गगन सिशर पर बालक बोलता है। यह बालक अमृत रूप होता है। निरंजन, अगम, अगोचर, निर्लिप्त होता है। उसकी अनुभूति सहज समाधि की अवस्था में ही सम्भव है। इस समाधि अवस्था में ही भक्ति अमृत रस का पान संभव है। शिव सनकादिक आदि अनादिकाल से इस अमृत का पान करते हैं या करते आये हैं और कभी तृप्त नहीं होते। यह रस उस निर्झर के तुल्य है जिसमें कभी अमृत रस नहीं सूखता और योगी शून्य समाधि लगाकर उसी का पान करते रहते हैं। इनके आराध्य की गति अज्ञात है, रूप और रंग से कोई भिन्न नहीं है। कहां उसका निवास है और क्या स्वरूप, कोई नहीं जानता। कई हठयोगियों ने उसे आकार देना चाहा पर वे असफल ही रहे। उन्हें सफलता नहीं मिल सकी—उनका व्यक्तित्व उभर नहीं सका।

इस प्रकार हठयोगियों के आराध्य अरूप, अस्पष्ट, शून्य, निर्वाण, शब्द बाह्य निरंजन आदि विभिन्न रहस्यमय स्वरूप धारण करता है। उसी प्रकार से उसे प्राप्त करने की साधना पद्धति भी रहस्यमय रही है और हठयोग की साधना को सहयोग से ही उसे प्राप्त कर सकता है। उसे प्राप्त करते ही मन का सारा सन्देह दुर हो अज्ञानाधार का नाश हो ज्ञान का अनन्त

प्रकाश विकीर्ण हो जाता है। यही निर्वाण की स्थिति मानी जाती है।

साधक जहां पहुंचकर स्वयं ब्रह्म रूप बन जाता है। और वही निर्वाण की स्थिति मानी जाती है।

हठयोग की साधना ऊपर से निर्वाण की प्राप्ति का लक्ष्य लिये दिखाई देता है परन्तु उसकी मुख्य भावना का लक्ष्य समाज कल्याण की ओर होता है साधक स्वयं भावना से मुक्त होकर संसार और स्वयं को अभिन्न समझने की स्थिति प्राप्त कर ले। ऐसी स्थिति में जीव मात्र की क्षमता, विश्व कल्याण की भावना साधक के चिन्तन और व्यवहार की मूल प्रेरक शक्ति बन जाती है। भावना को उदात्त एवं व्यापक बना देती है, चित की सिद्धि पर विशेष बल दिया जाता है, इस साधना के करने वालों में एक विशेष दृढ़ता, अखंडता और मर्म पर आघात करने की विशिष्ठ अप्रतिहत शक्ति होती है। मन्दिर, मस्जिद, धार्मिक निरर्थक बाह्याचार, आडम्बर, छूतछात, पाखण्ड आदि का उग्र कठोर एवं कटु शब्दों में तिरस्कार करते हैं—धनी-निर्धन के भेदभाव को ये स्वीकार नहीं करते।

हठयोग की साधना में प्रम की उपविष्ट साधना द्वारा ही होती है। भक्ति की प्राप्ति प्रेम द्वारा ही सम्भव है—ज्ञान के द्वारा नहीं। मन को मारना पड़ता है। चंचल मन ही मनुष्य को भटकाये फिरता है। इसलिए सर्वप्रथम इसका संयम आवश्यक है। इसे जीवत मृतक की अवस्था कहा गया है। मन जब संज्ञाहीन हो जाता है तो प्रभु स्वयं आकर दास को संभाल लेते हैं।

पर मन मारना आसान नहीं। बिरला ही मन को मार सकता है। उसे अपने सर्वस्व का बलिदान करना पड़ता है। प्रेम का घर कोई खाला का घर नहीं है जहां सरलता से प्रवेश पाया जा सके। यह तो तीखी खाण्डे की धार है जिस पर चलना प्रत्येक के बस की बात नहीं है। इसके ऊपर सामान्य मनुष्य नहीं चल सकता है। क्योंकि उससे इतना त्याग नहीं हो सकता। यह प्रेम न तो खेत में पैदा होता है और न ही हाट में बिकता है। इसका सौदा तो सिर देकर ही किया जा सकता है।

साधक की स्थिति सती नारी के सामन होती है जो अपने प्रिय का नाम स्मरण कर उसके साथ चिता में बैठकर एकाकार

हो जाती है। स्व का पूर्ण विस्मरण कर देती है। साधक को भी ऐसी ही एकाग्रता के साथ स्व को अपने प्रिय के चरणों में समर्पित कर देना पड़ता है :—

'सती जलन कूं निकली, चित धरि एकब भेख।
तन-मन सौप्या पीव कूँ, तब अन्तरि रही न रेख॥

अन्त में इस साधना की पद्धति में—

'जल में कुम्भ, कुम्भ में जल है भीतर बाहिर पानी।
फूटा कुम्भ, जल जलहि समाया, यह तथ कव्यौ गयानी।

की पद्धति श्रेष्ठ मानी गई है।'

'चौंसठ योगिनी यन्त्र'

यह यन्त्र चौंसठ कोठों से बनाया जाता है। प्रत्येक कोठे में एक-एक योगिनी की स्थापना की जाती है तथा एक से चौंसठ तक लिखे गए अंक भी योगिनीयों के सूचक हैं।

चौंसठ योगिनीयों के यन्त्र का सदुपयोग ऋद्धि-सिद्धि यश-लाभ-कीर्ति-विजय-परीक्षा में सफलता समृद्धि आदि की प्राप्ति के लिए होता है। इस यन्त्र की पूजन विधि अलग है। यह यन्त्र शुद्ध दोष तन्त्र-मन्त्र के प्रभाव को नष्ट करता है। तथा भूत पिशाच-डंकिनी-शखिनी अन्य मैली सत्ता के प्रभाव से जातक को सुरक्षित रखता है।

इसे धारण करने से ज्वर-दुर्बलता, सिर दर्द, पीलिया-आकस्मिक रोग, शरीर व्याधि आदि के निवारण नित्य एक बार प्रातः काल के समय पूर्वाभिमुख बैठ चांदी की थाली में अष्टगंध से लिखकर दो दिन तक पिलाना चाहिए।

इस यन्त्र को स्वर्ण पत्र, चांदी की पत्ते, ताम्रपत्र के ऊपर खुदवाकर घर में पूजा-स्थान पर रखना अति हितकर है। पूजा में रखने के पश्चात् प्रतिदिन धूप दीप करना आवश्यक है।

इसकी पूजा में निम्नलिखित सामग्री आवश्यक होती है :

सामग्री

कुमकुम, मोलश्री, अबीर, गुलाल, अष्टगंध, चावल, धूप, दीप, अगरबती, घी, गुड़, लाल वस्त्र, सफेद वस्त्र, चन्दन, केसर, दूध, दही, शहद, शक्कर, पुंगीफल, खोआ, नारियल, इत्र, दूब,

गुलाबजल, पाट, पंचमेवा, पताशे, ऋतुफल, पान, पंचपल्लव, पंचगव्य आदि।

इस यन्त्र को शुभ मूहूर्त के दिन बनाना चाहिए। रवि पुण्य, गुरु, पुष्य, नवरात्रि, दीपावली, विजयादशमी, स्वराशी से, श्रेष्ठ व शुभ दिन मूहूर्त देखना चाहिए।

यन्त्र बनाने की विधि

सर्वप्रथम 9 पंक्तियां पूर्व से पश्चिम की ओर और 9 ही उतर से दक्षिण की ओर खींचनी चाहिए। इस प्रकार 8 × 8 = 64 घर बन जायेंगे। अब प्रत्येक घर में निम्न के अनुसार संख्या एवं योगिनी नाम लिख ले। सबसे ऊपर लिखे '64 योगिनी यंत्र' एवं यन्त्र के नीचे नाम, पिता, गोत्र, जाति एवं तारीख स्थान एवं कार्य का विषय लिख ले।

1	2	62	61	60	59	7	8
9	10	54	53	52	51	25	16
48	47	19	20	21	22	42	41
40	39	27	28	29	30	34	33
32	31	35	36	37	38	26	25
24	23	43	44	45	46	18	17
49	50	14	13	12	11	55	56
57	58	6	5	4	3	63	64

शिव-पूजन

ध्यान

ध्याये नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीति हस्तं प्रसन्नं ।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतिममरगणैर्व्याघ्रकृतिं वसानं
विश्ववाद्यं विश्ववन्द्यं निखिल भयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ।।
स्वच्छ स्वर्णपयोदं मौतिकजपावर्णैर्मुखैः पञ्चभिः
त्र्यक्षरैंचितमीशमिन्दुमुकुटं सोमेश्वराख्यं प्रभुम् ।
शूलैटंक कृपाणवज्रदहनान्-नागेन्द्रघंटाकुशान्
पाशं भीतिहरं उधानममिताकल्पोज्ज्वलांगं भजे ।।

सद्योजात-स्थापन

पश्चिमं पूर्णचन्द्राभं जगत् सृष्टिकरोज्ज्वलम् ।
सद्योजातं यजेत् सौम्य मन्दस्मित मनोहरम् ।।

वामदेव-स्थापन

उतरं विद्रुमप्रख्य विश्वस्थितिकरं विभुम् ।
सविलासं त्रिनयनं वामदेवं प्रपूजयेत् ।।

अघोर-स्थापन

दक्षिणं नील जीमूतप्रभं संहारकारकम् ।
वक्रभ्रू कुटिलं घोरमघोराख्यं तमर्चयेत् ।।

तत्पुरुष-स्थापन

यजेत् पूर्वमुखं सौम्यं बालार्क सदृशप्रभम् ।
तिरोधानकृत्यपरं रुद्रं तत्पुरूषाभिधम् ।।

ईशान-स्थापन

ईशानं स्फटिक प्रख्य सर्वभूतानुकंपितम् ।
अतीव सौम्यमोंकार-रूपं ऊर्ध्वमुखं यजेत् ।।
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः ध्यानं समर्पयामि ।

आवाहन

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः ।
बाहुभ्यामुत ते नमः ।।
एह्ये हि गौरीश पिनाकपाणे शशांकमौलेवृषभारूढं ।
देवाधिदेवेश महेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते ।।
आवाहयामि देवेशमरादिमध्यान्तपर्तितम् ।
आधारं सर्वलोकानामाश्रिताथ प्रदासिनम् ।।
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः आवाहनं समर्पयामि ।
अक्षत् छिड़क दें ।

आसन

ॐ याते रुद्र शिवातनूरघोरा पापकाशिनी ।
तयानस्तावा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ।।
विश्वात्मने नमस्तुभ्यं चिदम्बरनिवरसिने ।
रत्नसिंहासनं चारु ददामि करुणानिधे ।।
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः आसनार्थं पुष्पं समर्पयामि ।
पुष्प चढ़ावें ।

पाद्य

ॐ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे ।
शिवांगिरिशतङ्कुरु माहि ᳕ सीः पुरूषन्जगत् ।।
नमः शर्वाय सोमाय सर्वमंगल हेतवे ।
तुभ्यं संप्रददे पाद्यं श्रीकैलास निवासिने ।।
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि ।
चरणों में जल अर्पित करें ।

अर्घ्य

ॐ शिवेन वचसात्वा गिरिशाच्छावदामसि ।
यथानः सर्वमिज्जगदयक्ष्य ᳕ सुमनाऽअसत् ।।
अनर्घफलदात्रे च शास्त्रे वैवस्वतस्य च ।
तुभ्यमर्घ्यं प्रदास्यामि द्वादशान्त निवासिने ।।
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि ।
अर्घ्यपात्रं में गन्धाक्षतपुष्प के साथ जल लेकर चढ़ावें ।

आचमन

ॐ अद्धयवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ।
अहींश्यसर्वान्जभयन्त्सर्वाश्चियातुधान्योधराची: परासुव ।
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नम: आचमनीयं जलं समर्पयामि ।
छ: बार आचमन करावें ।

स्नान

ॐ असोयस्ताम्रोऽरुण उत्तब्रभु: सुमंगल: ।
ये चेन ७ रुद्राअभितोदिक्षुश्रिता: सहस्रशोवेषस ७
हेडऽईमहे ।
गंगाक्लिन्नजटाभार सोमसोमार्धशेखर ।
नद्या मया समानीतै स्नांन कुरु महेश्वर: ॥
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नम: स्नानीयं जलं समर्पयामि ।
स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।
घण्टावादन करें व स्नान करावें ।

पयस्नान

ॐ पय: पृथिव्याम्पयऽओषपीषु पयोर्दिव्यन्तसिक्षे पयोधा: ।
पयस्वती: प्रदिश: सन्तुमह्यम् ।
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नम: पय: स्नानं समर्पयामि ।

ॐ शुद्धवाल: सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तेआश्विन: । श्वेत: श्वेताक्षौरुणस्ते रूद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा नभो-रूपा: पार्जन्या: ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नम: शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । शुद्धो-दकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

पय: स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।
पहले दूध व फिर जल से स्नान करावें ।

दधि-स्नान

ॐ दधिक्राण्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिन: । सुरभि नो मुखा करत् प्रण आयु ७ षितारिषत् ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नम: दधिस्नानं समर्पयामि ।

ॐ शुद्धवाल: सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विन: । श्वेत: श्वेताक्षौरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपा: पार्जन्या: ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नम: शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

दधिस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।

पहले दही व फिर जल से स्नान करावें ।

घृतस्नान

ॐ घृतं मतिक्षे घृतमस्य योनिर्ध्रते श्रितोघृतम्वस्य धाम । अनष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभवक्षिहव्यम् ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नम: घृतस्नानं समर्पयामि । घृत स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।

ॐ शुद्धवाल: सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विन: । श्वेत: श्वेताक्षौरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपा: पार्जन्या: ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नम: शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

पहले घी से व फिर जल से स्नान करावें ।

मधुस्नान

ॐ मधुव्वाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धव: । माध्वीर्न: सन्त्वोषधी: ।

मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ७ रज: । मधुद्यौरश्रतुन पिता । मधुमान्नो वननस्पतिर्मधमां अस्तु सूर्य: । माध्वीरर्गावोभवन्तु न: ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नम: मधुस्नानं समर्पयामि । मधुस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।

ॐ शुद्धवाल: सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विन: । श्वेत: श्वेताक्षौरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपा: पार्जन्या: ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नम: शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

पहले शहद से व फिर जल से स्नान करावें ।

शर्करास्नान

ॐ अपा ꣳ रसमुद्धयस ꣳ सूर्ये सन्त ꣳ समाहितम् । अपा ꣳ रसस्ययो रसस्तं वो गृह्णाम्युतममुपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येषते योति रिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः शर्करास्नानं समर्पयामि । शर्करा स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।

ॐ शुद्धवाल: सवशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विन: । श्वेत: श्वेताक्षौरुणस्ते रुद्रया पशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा नभो-रूपा: पाजन्या: ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नम: शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । शुद्धो-दकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

पहले चीनी व फिर जलं से स्नान करावें ।

पंचामृतस्नान

ॐ पच्चनद्य: सरस्वतीमयपिबन्ति सस्रोतस: सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेभवत्सरित् ।

ॐ उयामहेश्वराभ्यां नम: पंचामृतस्नानं समर्पयामि । पंचामृत स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।

ॐ शुद्धवाल-सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विन: श्वेत: श्वेताक्षौरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा नभो-रूपा: पाजन्या: ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नम: शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

पहले पंचामृत व फिर जल से स्नानं करावें ।

गन्धोदकस्नान

ॐ गन्धद्वारा दुराधर्षा नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सव-भूतानां तामिहोपह्व येश्रियम् ।

मलयाचलसंभूतं चन्दनागरुांभवम् ।
चन्दनं देंवदेवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नम: गन्धोदकस्नानं समर्पयामि । गन्धोदकस्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।

पहले गुलाबजल से व फिर जल से स्नान करावें ।

शुद्धोदकस्नान

ॐ शुद्धवाल: सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विन:। श्वेत: श्वेताक्षौरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा नभो-रूपा: पार्जन्या: ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नम: शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

घण्टावादन करके जल से स्नानं करावें व फिर आचमन करावें ।

वस्त्र

ॐ असौ योवसर्पति नीलग्रीवो विलोहित: । उतैंनंगोपाऽअदृश्रम् नदृश्रम् नुदहाजै: सदषटोमृडययति न: ।

दिगम्बर नमस्तुभ्यं गजाजिनधरा यच ।
व्याघ्रचर्मोतरीयाय वस्त्रयुग्मं ददाम्यहम् ।।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नम: वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि । आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

यज्ञोपवीत

ॐ नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे । अथोयेऽअस्य सत्वानो-हन्तेभ्योकरन्नम् ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नम: यज्ञोवतीतं समर्पयामि । आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

सुगन्ध द्रव्य

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नम: सुगन्ध द्रव्यं समर्पयामि ।

भगवान को इत्र लगाएं ।

भस्म

अग्निहोत्र समुद्भूतं विरजाहोमपाजितम् ।
गृहाण भस्म हे स्वामिन् भक्तानां भूतिदायक ।।

ॐ उमामहेश्वाभ्यां नमः भस्मं समर्पयामि ।
भस्म अर्पित करें ।

गन्ध

ॐ प्रमुश्चधन्वनस्त्वमुभयोरात्न्योंर्ज्याम् ।
याश्चते हस्तऽइषवः पराता भगवोवप ।
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः भस्म समर्पयामि ।
चन्दन चढ़ावें ।

अक्षत

ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्वप्रियाऽअधषत । अस्तोषतस्वभानति विप्रान्न विष्टुयामती योजान् । विन्द्रतेहरी ।

अक्षतान् धवलान् देवसिद्धगन्धर्व पूजितम् ।
सुन्दरेश नमस्तुभ्यं गृहाण वरदो भव ॥
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः अक्षतान् समर्पयामि ।
अक्षत चढ़ावें ।

पुष्प

ॐ विज्जयन्धनुः कर्पादिनो विशल्यो बाधवांऽउत । अनेकशन्नस्ययाऽइषव आभुरस्यनिषङ्गधिः ।

तुरीयवनसंभूतं परमानन्दसौरभम् ।
पुष्पं गृहाण सोमेश पुष्पचापविभंजन ॥
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः पुष्पाणि समर्पयामि ।

बिल्वपत्र

ॐ नमो बिल्विने च कवचिने च नमो वश्रिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्यरयचाहनन्यायच ।

त्रिदलं द्विगुणाकारं द्विनेत्रं च त्रिधायुधम् ।
श्रिजन्मपाप संहारमेक बिल्वं शिवार्पणम् ।
दर्शनं बिल्वपत्रस्य स्पर्शनं पापनाशनम् ।
अघोर पाप संहारं मेक बिल्वं शिवार्पणम् ॥

अंगपूजा

ॐ भवाय नमः पादौ पूजयामि । ॐ जगत्पित्रे नम जंघे पूजयामि । ॐ मृडाय नमः जानुनीं पूजयामि । ॐ रुद्राय नमः उरू पूजयामि । ॐ कालान्तकाय नमः कटिं पूजयामि । ॐ नागेन्द्राभरणाय नमः नाभिं पूजयामि । ॐ स्तव्याय नमः स्तनौ पूजयामि । ॐ भवनाशनाय नमः भुजान् पूजयामि । ॐ कालकंठाय नमः कंठं पूजयामि । ॐ महेशाय नमः मुखं पूजयामि । ॐ लास्यप्रियाय नमः ललाटं पूजयामि । ॐ शिवाय नमः शिरः पूजयामि । ॐ प्रणतार्तिहराय नमः सर्वाण्यंगानि पूजयामि ।

प्रत्येक बार गंधाक्षतपुष्प से सम्बन्धित अंग को र्षाषित करे ।

अष्ट पूजा

ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः, ॐ भवाय जलमूर्तये नमः, ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः, ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः ॐ भीमाय आकाश मूर्तये नमः ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः, ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः ॐ पशुपतये यजमान मूर्तये नमः ।

प्रत्येक बार गन्धाक्षतपुष्प, बिल्वपत्र अर्पित करें ।

परिवार पूजा

ॐ उमायै नमः, ॐ शंकरप्रियाये नमः, ॐ पार्वत्यै नमः, ॐ काल्यै नमः, ॐ कालिन्द्यै नमः, ॐ कोटिदेव्यै नमः, ॐ पिश्वधारिण्यै नमः, ॐ गंगा देव्यै नमः, नववितीन् पूजयामि सर्वोपकारायै गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयाम ।

प्रत्येक बार गन्धाक्षतपुष्प अर्पित करें ।

ॐ गणपतये नमः, ॐ कार्तिकेयाय नमः, ॐ पुष्पदन्ताय नमः, ॐ कर्पर्दिने नमः, ॐ भैरवाय नमः, ॐ भूलपाधये नमः, ॐ चण्डेशाय नमः, ॐ दण्डपाणये नमः, ॐ नन्दीश्वराय नमः, ॐ महाकालाय नमः । सर्वान् गणाधिपान् पूजयामि, सर्वोपचारार्थें गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ।

ॐ अघोराय नमः, ॐ पशुपतये नमः, ॐ शर्वाय नमः, ॐ विरूपाक्षाय नमः, ॐ विश्वरूप्ये नमः ॐ त्र्यम्बकाव नमः, ॐ कपर्दिने नमः, ॐ भैरवाय नमः, ॐ शूलपाणये नमः, ॐ ईशानाय

नमः, एकादशरूद्रान् पूजयामि, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ।

सौभाग्यद्रव्य

ॐ अहिरीव भोगैः पर्येति बाहुन्ज्यावा हेतिम्परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वावयुनानिविद्वान् पुमान् पुमा ऽ समपरिपातु-विश्वतः ॥

हरिद्रां कुंकुमं चैव सिन्दूरं कज्जलान्वितम् ।
सौभाग्यद्रव्यसंयुक्तं गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः सौभाग्यद्रव्याणि समर्पयामि ।

अबीर गुलाल आदि चढ़ावे ।

धूप

ॐ या ते हेतीर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः । तयास्मान्-विश्वस्त्व मयक्ष्मया परिभुज ॥

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः धूपं आघ्रापयामि ।

अगरबती जलायें ।

दीप

ॐ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तुविश्वतः । अथोयऽइषि-धिस्त वारेऽअस्मन्निधेहितम् ।

साज्यंवर्तियुक्तं दीपं सर्वमंगलकारम् ।
समर्पयामिप श्येदं सोमसूर्याग्निलोचनम् ॥

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः दीपं दर्शयामि ।

प्रज्ज्वलित दीपक पर घंटावादन करते हुए अक्षत छोड़ दें ।

नैवेद्य

नैवेद्य के ऊपर बिल्वपत्र या पुष्प प्रोक्षण करते हुए रूद्र गायत्री बोलें—

ॐ तत्पुरुषाय विद्यम्हे, महादेवाय धीमहि तन्नो रूद्रः प्रचोदयात् ।

फिर नैवेद्य पर धेनुमुद्रा दिखाते हुए निम्नांकित मन्त्र बोलें—

ॐ अवतत्य धनुष्टव ऽ सहस्राक्षशतेषुधे । निशीर्य शल्याना-मुख शिवो नः सुमना भव ॥

नैवेद्यं षड्रसोपेतं विषाशत् घृतान्वितम्।
मधुक्षीरापूपयुक्तं गृह्यतां सोमशेखर॥

ॐ याः फलिनीर्याऽफलाऽपुष्पा याश्चपुष्पिणिः बृहस्पति-प्रसूस्तानो मुन्चत्व ँ हसः।

यस्य स्मरण मात्रेण सफला सन्ति सत्क्रियाः।
तस्य देवस्य प्रीत्यर्थ इयं ऋतुफलार्पणम्॥

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः नैवेद्यं निवेदयामि नाना ऋतु-फलानि च समर्पयामि।

फिर ग्रामुद्रा से निम्नांकित उच्चारण करें—

ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि, पूर्जा-पोषणं समर्पयामि।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः मध्ये पानीयं समर्पयामि नेवेद्यान्ते आचमनीयं समर्पयामि, उतरापोषनं समर्पयामि, हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि, मुखप्रक्षालनं सयर्पयामि।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः करोद्वर्जनार्थे चन्दनं समर्पयामि। भगवान के हाथों में चन्दन अर्पित करें।

ताम्बूल

ॐ नमस्तुऽआयुधानाततायधृष्णवे। उमाभ्यांमुत ते नमो बाहु-भ्यान्तव धन्वने।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः मुखशुद्धयर्थे ताम्बूलं समर्पयामि,

दक्षिणा

ॐ हरिण्यगर्भः समवर्तमाग्रे भूतस्य जातः परिरेकऽआसीत्। सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमाकस्मै देवाय हविषा विधेम।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः सांगता सिद्धयर्थ हिरण्यगर्भ दक्षिणां समर्पयामि।

नीराजन

ॐ इद ँ हविः प्रजननम्मे अस्तु दशवीर ँ सर्वगण ँ स्वस्तये। आत्मसनि। प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनिः। अग्निः प्रजा बहुलां में करोत्वनं न्पयो रेतोऽस्मासु धत।

ध्यान करें—

वन्दे देवउमापतिं सुरगुरु वन्दे जगत्कारणं
वन्देपन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनांपतिम् ।
वन्दे सूर्यशशांकवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रिय:
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवंशंकरम् ॥

शान्तं पद्मासनस्थं शशिधरमुकुटं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ।
शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षिणागे वहन्तम् ।
नागं पाशं च घंटां डमरूकसहितं सांकुशं वामभागे ।
नानालंकारदीप्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि ॥

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नम: नीराजनं दर्शयामि ।

आरती

जय शिव ॐकारा, भज शिव ॐकारा ।
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव अर्द्धंगी धारा ॥1॥
ॐ हर हर०

एकानन चतुरानन पंचानन राजे ।
हंसासन गरुडासन वृषवाहन साजे ॥2॥
ॐ हर हर०

दो भुज चारु चतुर्भुज दशभुज अति सोहे ।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहे ॥3॥
ॐ हर हर०

अक्षमाला वनमाला रुंडमाला धारी ।
त्रिपुरानाथ मुरारी करमाला धारी ॥4॥
ॐ हर हर०

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे ।
सनकादिक गुरुडादिक भूतादिक संगे ॥5॥
ॐ हर हर०

कर मध्ये इक मण्डल चक्र त्रिशूल धर्ता।
सुखकर्ता दुखहर्ता, सुख में शिव रहता ॥6॥
ॐ हर हर०

काशी में विश्वनाथ विराजे नंदी ब्रह्मचारी।
नित उठ ज्योत जलावत दिन-दिन अधिकारी ॥7॥
ॐ हर हर०

ब्रह्मा विष्णु सदा शिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर ॐ मध्ये ये तीनों एका ॥8॥
ॐ हर हर०

त्रिगुणस स्वामी की आरती जो कोई नर गावे।
ज्यारां मन शुद्ध होय जावे, ज्यारां पाप परा जावे
ज्यारे सुख शंपति आवे, ज्यारां दुख दारिद्रय जावे
ज्यारे घर लक्ष्मी जावे
भणत भोलानन्द स्वामी, रटत शिवानन्द स्वामी
इच्छा फल पावे ॥9॥

ॐ हर हर०

जै शिव ॐकारा।
मन भज शिव ॐकारा।
मन रट शिव ॐकारा ॥
हो शिव भूरी जटा वाला।
हो शिव दीर्घ जटा वाला ॥
हो शिव भाल चन्द्र वाला।
हो शिव तीन नेत्र वाला ॥
हो शिव ऊपर गंगधारा।
हो शिव बरसत जलधारा ॥
हो शिव तीव्र नेत्र वाला।
हो शिव गलबिच रुण्डमाला ॥
हो शिव कम्बु ग्रीव वाला।
हो शिव भष्मी अंग वाला ॥

हो शिव फणिधर फणवाला ।
हो शिव वृषभ स्कन्ध वाला ॥
हो शिव ओढ़त मृगछाला ।
हो शिव धारण मुण्डमाला ॥
हो शिव भूत प्रेत वाला ।
हो शिव बेल चढण वाला ॥
हो शिव पार्वती प्यारा ।
हो शिव भक्तन हितकारा ॥
हो शिव दुष्ट दलन वाला ।
हो शिव पीवत भंग प्याला ॥
हो शिव मस्त रहन वाला ।
हो शिव दरसन दो भोला ॥
हो शिव परसन हो भोला ।
हो शिव बरसो जलधारा ॥
हो शिव काटो जम फांसा ।
हो शिव मेटो जमत्रासा ॥
हो शिव रहते मतवाला ।
हो शिव ऊपर जलधारा ॥
हो शिव ईश्वर ॐकारा ।
हो शिव बम बम भोला ॥

ब्रह्मा विष्णु सदा शिव, भोले भोलेनाथ महादेव
अर्धांगी धारा ॐ हर हर हर महादेव ।

जल आरती

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्ति: पृथ्वीशान्तिराप: शान्ति रोषधय: शान्ति । वनस्पतय: शान्तिर्विश्वेदेना शान्तिब्रह्म शान्ति सर्व ँ शान्ति: शान्तिरेव शान्ति: सा मा शान्तिरेधि ।

प्रदक्षिणा

ॐ मा नो महान्तमुत मा नोऽअभर्कम्मानऽउक्षन्त मुत मा नऽउक्षितम् । मा नो वधी: पिरंम्मोतमातरम्मान: प्रियास्तन्वोरुद्र-रीरिष: ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नम: प्रदक्षिणां समर्पयामि ।

पुष्पांजलि

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् । तेह ना कं महिमान: सचन्त यत्र पूर्वे साध्या: सन्ति देवा: ।

ॐ राधाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमोवयं वेश्रणाय कुर्महे समे कामान् कामकामा महम् । कामेश्वरो वेश्रवणो ददातु । कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नम: ।

ॐ स्वस्ति । सम्राज्यं भोज्यं स्वराज्यं वैराज्यं परमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्वात् सार्वभौम: सर्वायुष आन्तादा परार्धात् । पृथ्विये समुद्रपर्यन्ताय एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगितो मरुत: परिवेष्टारो मरूतस्यावसन्गृहे । आविक्षि-तस्य कामप्रेविश्वेदेवा: सभासद इति ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नम: मन्त्र-पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।

नमस्कार

ॐ नम: शम्भवाय च मयोभवाय च नम: शंकराय च मयस्क-राय च नम: शिवाय च शिवतराय च ।

तव तत्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर ।
यादृशोसि महादेव तादृशाय नमो नम: ।।
त्रिनेत्राय नमस्तुभ्यं उमादेहार्धधारिणे ।
त्रिशूलधारिणे तुभ्यं भूतानां पतये नम: ।।
गंगाधर नमस्तुभ्यं वृषभध्वज नमोस्तु ते ।
आशुतोष नमस्तुभ्यं भूयो-भूयो नमो नम: ।।

ॐ निधनपतये नम: । निधनपतान्तिकाय नम: उध्र्वाय नम: । उध्र्वलिंगाय नम: । हिरण्याय नम: । हिरण्यलिंगाय नम: दिव्याय

नमः सुवर्णाय नमः । सुवर्णलिंगाय नमः । दिव्याय नमः । दिव्य-लिंगाय नमः । भवाय नमः । भवलिंगाय नमः । शर्वाय नमः । शर्वलिंगाय नमः । शिवाय नमः । शिवलिंगाय नमः । ज्वालाय नमः ज्वर्लालिगाय नमः । आत्मरस नमः । आत्मलिंगाय नमः परमाय नमः परर्मालिगाय नमः एतत् सोमस्य सूर्यस्य सर्वलिंग ँ स्थापयसि पाणि मन्त्रं पवित्रम् ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः नमस्करोमि ।

प्रार्थनापूर्वक क्षमायापन

अवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ।।
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ।
यत पूजितं मयादेव परिपूर्ण तदस्तुमे ।
यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत् ।
तत् सर्व क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ।।
क्षमस्व देवदेवेश क्षमस्व भुवनेश्वर ।
तव पादाम्बुजे नित्यं निश्चल भक्तिरस्तु में ।
असारे संसारे निजभजन दूरे जडधिया ।
भ्रमन्तं मामन्धं परम-कृपया पातुमुचितम् ।
मदन्यः को दीन स्तव कृपण रक्षाति निपुण ।
स्त्वदन्यः को वा मे त्रिगति शरण्यः पशुपते ।।

विशेषार्घ्य

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
मस्मात् कारुण्य भावेन रक्ष मां परमेश्वर ।।
रक्ष-रक्ष महादेव रक्ष त्रैलोक्यरक्षक ।
भक्तानां अभयकर्ता त्राता भवभवार्णवात् ।।
वरद त्वं वरं देहि वांछितार्थद ।
अनेक सफलर्घ्येन फलादोस्तु सदा मम ।।

ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषिमानो गोषुमानोऽश्वेषुरीरिषः। मानो वीरान्रूद्र भामिनो बधीर्हविष्मन्तः सदमित्वाहवामहे ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

अर्घ्य-पात्र में जल, गन्धाक्षत-पुष्प, बिल्वपत्र, फल आदि मंगलद्रव्य लेकर भगवान को अर्पित करें।

समर्पण

गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च।
आगता सुख सम्पतिः पुण्याच्च तव दर्शनात्॥
दवो दाता च भोक्ता च देवरूपमिदं जगत।
देवं जपति सर्वत्र यो देवः सोहमेव हि॥
साधुवाऽसाधु वा कर्म यद्यमचारितं मया।
तत् सर्वं कृपया देव गृहाणाराधनं॥

शंख या आचमनी का जल देव के दक्ष हस्त में देते हुए समस्त पूजा फल उन्हें समर्पित करें।

अनेनकृत पूजाकर्मणा श्री संविदात्मकः साम्बसदाशिवः प्रीयन्ताम्। ॐ तत् सद् ब्रह्मार्पणमस्तु।

इसके बाद वैदिक या संस्कृत आरती कर पुष्पांजलि दें।

आरती किस प्रकार करें

शिव आरती में सबसे पहले शिव के चरणों का ध्यान करके चार बार आरती उतारे, फिर नाभि कमल का ध्यान करके दो बार, फिर मुख का स्मरण करके एक बार तथा सर्वांग की सात बार, इस प्रकार चौदह बार आरती उतारे। इसके बाद शंख में या पात्र में जल लेकर घुमाते हुए छोड़ें और निम्न मन्त्र पढ़ें—

ॐ द्यौ ँ शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्ति पृथिवी शान्ति रापः शान्तिरोषधय शांतिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवा शान्ति ब्रह्माशान्ति सर्व ँ शान्तिः शान्ति रे वशान्ति सामाशान्तिरेधि।

आरती के बाद भक्तिभाव से सिर झुकाकर स्तुति करें—

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिंधुपात्रे,
सुरतरुवरशाखा लेनी पत्रमुखी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकाल
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति॥1॥

वन्दे देवउमापति सुरगुरु पन्दे जगतकारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वंदे पशुनाम्पतिम् ।
वंदे सूर्यशशांक-वह्लिनयनं वंदे मुकुंदप्रियं,
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम् ॥2॥

शांतं पद्मासनस्थं शशधर मुकटं पंचवक्त्र त्रिनंत्रं ।
शूलवज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षिणांगे वहन्तम् ॥
नागं पाशं च घन्टा डमरूक सहितम् सांकुशं बामभागे,
नानालंकारयुक्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि ॥3॥

फिर हाथों में पुष्प लेकर पुष्पांजलि पढ़ते हुए सदाशिव को पुष्प अर्पण करें ।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
तेहनाकं महिमान: सचन्त यत्रपूर्वे साध्यां: सन्तिदेवा: ॥1॥
ॐ राजाधिराज प्रसह्य साहिने । नमो वयं वेश्रवणाय कुर्वहे ।
समे कामान् काम काकामायमहम् । कामेश्वासे वेश्रवणो ददातु ॥
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजायनम: ॥2॥
ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वराज्यं वेराज्यं
पारमेष्ठयं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं
समन्तपर्यामीस्यात्सार्वभौम: सार्वायुष
आन्तादापरार्धात्पृथिव्ये समुद्र पर्यन्तायां
मेकराडिति । तदप्येष श्लोको भीगितो
मरूत: परिवेष्टारो मरुतस्यावसन् गृहे ॥
आविक्षितस्य काम प्रेर्व्विश्वे देवा: सभासद इति ।

(इति मन्त्र पुष्पांजलि समर्प्य)

प्रदक्षिणा

यानि कानि च पापालि ज्ञाताज्ञातकृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणं पदे पदे ॥

विभिन्न प्रकार के कौतुक

इस अध्याय में विविध प्रकार के कौतुकों का वर्णन किया गया है। ये सभी कौतुक सम्बन्धित पदार्थों के रासानिक प्रभाव से परिलक्षित होते हैं। इनमें किसी भी प्रकार की साधना की आवश्यकता नहीं पड़ती है। महाइन्द्रजाल के सोलहवें खंड 'इन्द्रजाल-विद्या' में इस प्रकार के सैकड़ों कौतुकों का वर्णन किया गया है। जो पाठक इच्छुक हों उन्हें उक्त सोलहवे खंड को पढ़ना चाहिए।

अग्नि से हाथ न जले

(1) मुर्गी का अण्डा, पारा, फिटकरी, सांभर नमक, सिरका तथा अफीम इनको बराबर हिस्सों में लेकर घोट पीस लें। इस लेप को सिरके में मिलाकर हाथों पर लेप कर छाया में सुखा लें। फिर उन हाथों में अंगारे उठाने पर भी हाथ नहीं जलेंगे।

(2) नौसादर के पानी में कपूर को रगड़ कर हाथों पर चुपड़े। सूख जाने पर उनमें अग्नि उठाये तो हाथ नहीं जलेंगे।

(3) समुद्र फेन को पीस कर, पानी में मिलाकर हाथों पर लेप कर ले। उन्हें छाया में सुखा ले। उन हाथों से अंगारा उठा लेने पर भी दीपक नहीं जलते।

(4) मुलहठी और भांगरा समभाग लेकर पीस-छानकर हाथों पर लेप कर ले। फिर हाथों को छाया में सुखाकर, उनके ऊपर जलते हुए आग के अंगारे रखें तो हाथ नहीं जलेंगे।

(5) मेंढक की चरबी को हाथों पर मलकर उनसे आग के अंगारे उठाने पर हाथ नहीं जलते हैं।

(6) ग्वार पाठे के रस को हाथों पर मलकर छाया में सूखा लें। फिर अंगारे उठाने पर भी हाथ नहीं जलते हैं।

पानी में दीपक जले

(1) माजूफल और बकरी के दूध दोनों को समान भाग लेकर पीस लें। इसमें रूई को सात बार डाल कर सुखावें, फिर उसकी बत्ती बनाकर पानी में डालकर जलायें तो बिना तेल के ही बत्ती जलती रहेगी तथा बुझेगी भी नहीं।

(2) चीनिया कपूर की बत्ती बनाकर, पानी में डाल दे और उसे जलाए तो वह दीपक बिना तेल के पानी में ही जलता रहेगा।

(3) राल और कपूर को बराबर भागों में लेकर पीसकर बत्ती बना लें। इस बत्ती को पानी में डालकर जलाने से भी जलती रहेगी।

(4) रिबरनी के दूध में सात बार रूई भिगोकर सुखा लें। फिर उसकी बत्ती बनाकर पानी में डाल कर जलायें तो वह जलती रहेगी।

दो दीपक परस्पर लड़ें

एक दीपक में बकरे की चर्बी तथा दूसरे दीपक में भेड़िये की चर्बी भरकर दोनों में बत्ती जलाकर एक-दूसरे को बुझाया जायेगा तो पहला बुझा हुअ ।दीपक अपने आप जल जायेगा, दूसरा दीपक अपने आप जल जाया करेगा और एक भी दीपक नहीं बुझ सकेगा।

पीपल के वृक्ष पर रोशनी करना

दो तोला लोहे का चूर्ण, एक तोला गंधक और दस तोला राल, कपूर 6 माशा इन सभी को बारीक पीसकर कपड़े में पोटली बांध लें। फिर उस पोटली को पीपल के वृक्ष पर लटका कर अग्नि लगा दें तो पीपल के पत्ते-पत्ते पर दीपक जैसी रोशनी हो जायेगी।

कपड़े पर हवन करना

(1) एक कटोरा कांसी का (चौड़ा होना चाहिए) लेकर पेन्दी पर एक ऐसा तंग कपड़ा बिछायें जो केवल पेन्दी के बराबर

का हो। फिर हल्दी और कपूर को शराब में पीसकर गोली बनाएं। जब गोली सूख जाए तब उसे कटोरी के कपड़े पर रख कर जलायें तो कपड़ा नहीं जलेगा।

(2) ब्रह्मी और कपूर को पानी में पीसकर रख लें। इस पानी के कपड़े को सात बार भिगोकर छाया सुखाकर रख लें। अन्तिम बार कपड़ा सूख जाने पर उसके ऊपर लकड़ी चुन कर हवन करें तो कपड़ा अग्नि से नहीं जलेगा।

(3) कपूर को शुद्ध शहद में मिला दें, फिर उस शहद में कपड़े को सात बार भिगोकर छाया में सुखा लें। फिर उस कपड़े को धरती पर बिछा कर उस पर लकड़ी चुनकर हवन करें तो सब लकड़ियां जल जाएंगी परन्तु कपड़े पर धब्बा भी नहीं लगेगा।

गर्म जंजीर से हाथ न जलें

मुर्गी के अंड़े की जर्दी, ग्वारपाठे का रस अथवा मुलहठी को पानी में घिसकर खूब अच्छी तरह हाथों पर लगालें। फिर धातु की जंजीर को खूब गर्म करके किसी तरह लटका दें और उसके ऊपर थोड़ा-सा तेल छिड़ककर हल्के हाथ से उसे छुएं तो हाथ नहीं जलेगा।

अग्नि पर चलना

मेंढ़क की चर्बी, कलाकन्द तथा भांगरा इन सबको मन्दी अग्नि पर पकाकर पांवों पर लेप करके, अंगारों पर चलें तो पांव न जलेंगे।

कड़ाही में तेल न गर्म होना

(1) बैल का मूत्र डाल देने से चाहे जितनी अग्नि जलाने पर भी कड़ाही गर्म नहीं होती।

(2) तुलसी, साल की लकड़ी को जलाकर गधे के सूत्र में बुझा लें, इसे चूल्हे में डालने से उसके ऊपर लगी हुई कड़ाही नहीं गरम होगी।

दीपक आंधी तथा पानी से न बुझना

गंधक और समुद्रफेन को पीसकर रूई में मिलाकर बत्ती बनावें। इस बत्ती को दीपक में डालकर जलाने से वह दीपक आंधी और पानी में भी नहीं बुझेगा।

बिजली जैसी चमक दिखाना

टीन का ऐसा नल बनाएं, जिसका एक मुंह चौड़ा हो। उसे एक बहुत से छेदों वाले टीक के टुकड़े से बन्द करके पीसी हुई राख भर दें। इसके पश्चात् मसाल की लौ से जलाकर नल को इधर उधर कर लें तो बिजली-सी चमकने लगती है।

गरम लोहे से हाथ न जले

पुष्य नक्षत्र में सिरस की जड़ को लाकर पानी में पीसकर सिर पर तिलक करने से गरम लोहे पर हाथ लगाने से हाथ नहीं जलता। इस तिलक को सर्प द्वारा कटे हुए व्यक्ति के सिर पर लगा देने से उसे विष भी नहीं चढ़ता है।

अग्नि से भी न जलना

(1) घी, भांग की जड़ तथा गोरोचन को हाथ में लेप करके तिलक करने पर अग्नि का भय दूर हो जाता है।

(2) रविवार के दिन सफेद कनेर की जड़ लाकर दायीं भुजा में बांधने से अग्नि का भय नहीं रहता।

(3) सफेद घूंघची की जड़ को उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में उत्तर दिशा की ओर मुंह करके ले आएं तथा मस्तक पर धारण करें तो जलने का भय दूर हो जाता है।

कच्चे सूत से आग बन्दी लिखना

सूत के एक सिरे में थोड़ा-सा गुड़ लगाकर अंगारे पर रख दें तो वह गुड़ पिघलकर जल जाएगा और कच्चे सूत का डोरा अंगारे पर चिपका रहेगा। फिर उसे कहीं लटका दो तो देखने वाले को कच्चे सूत में अग्नि बन्दी हुई दिखाई देगी।

हाथों से आग की लौ निकलना

सूत की रस्सी के टुकड़े को तेल में भिगोकर लटकाए और नीचे के सिरे को जला दें। जब उसमें से गरम-गरम तेल की बूंदें टपकने लगें उस समय पीसे हुए नमक को पानी के साथ हाथों में खूब चुपड़कर, उन तेजों की बूंदों को हाथों के ऊपर गिरने दें तथा हाथों को उलट-पुलट कर खूब मलते रहें ताकि हाथ ठंडा होता रहे। इस क्रिया के समय उन तेल की बूंदों द्वारा हाथ से अग्नि की लौ सी निकलती हुई दिखाई देगी।

कपड़े का अग्नि से न जलना

(1) बढ़िया शराब में कपड़ा भिगोकर रख लें और उसमें अग्नि लगा दें। जब तक वह वस्त्र गीला रहेगा तब तक जलता रहने पर भी नहीं जलेगा। शराब के सूख जाने पर अग्नि अपने आप बुझ जाएगी।

(2) अण्डे की सफेदी और फिटकरी को नमक के पानी में डालकर उसमें कपड़े को खूब भिगोकर सुखा दें। यह कपड़ा अग्नि में डालने से नहीं जलेगा।

(3) ज्वारभाटे के रस में वस्त्र को भिगोकर छाया में सुखा दें। ऐसा सात बार करें। यह वस्त्र अग्नि में नहीं जलेगा।

(4) ऊंट कटेरी की जड़ के रस में कपड़े को भिगोकर छाया में सुखा दें। यह कपड़ा अग्नि में नहीं जलेगा।

बिना आग से ज्वार के फूले बनाना

(1) ज्वार के दानों पर अंकोल का तेल लगाकर धूप में रखकर हिलाने से ही उनके फूले बन जाते हैं। अग्नि में भूनने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

(2) थुहर के दूध में ज्वार के दानों को भिगोकर छाया में सुखा दें फिर उन्हें धूप में रखें। जब कुछ गरम हो जाए तब हाथ से हिलाने पर बिना अग्नि में डालने से ही उसके फूले बन जायेंगे।

(3) ज्वार के दानों को तीन दिन तक पानी में भिगोकर छाया में सुखा दें। फिर उन्हें एक-एक दिन आक और थुहर के दूध

में भिगोकर छाया में सुखा द । यह दाने एक घड़ी मुट्ठी में दबाए रखें तो बिना आग के फूले बन जाएंगे ।

अंधेरे में दीपक-सा चमकना

लोहे के प्याले में गंधक लगाकर उसमें तांबे का चूर्ण बुरक देने से वह गंधक अंधेरे में दीपक-सा चमकने लगता है ।

नोट का अग्नि से न जलना

नोट को बढ़िया सिरके में भिगोकर जलाना आरम्भ करें जब तक नोट भीगा रहेगा नहीं जलेगा । सुख जाने पर अग्नि बुझ जाएगी । और नोट ज्यों का त्यों बना रहेगा ।

अग्नि की छोटी-छोटी लपटें निकलना

20 मासे स्प्रिट को एक पात्र में रखकर उसमें एक मासा स्कोरट तथा पोटास मिला लें फिर उसमें 28 मासा सरफ्यूरिक ऐसिड डालते ही बहुत छोटी-छोटी नीले रंग की गोल बत्तियां अग्नि की लपटों की तरह बाहर निकलेंगी ।

अंधेरे में उजाला दिखना

फासफोरस को रात्रि के समय अंधेरे स्थान में रखने से दीपक की भांति उजाला हो जाता है ।

बिना आग से भात तैयार करना

एक मिट्टी की हांडी में बिना बुझा चूना भरकर उसमें सौंधी चावल डालकर पानी भर देने से वह थोड़ी देर में खदक उठेगा तथा भात रंध जाएगा । हांडी के नीचे अग्नि जलाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी ।

गोली में से आग की लपटें निकलना

खैर का कोयला लेकर उसे खूब पीस ल । फिर उसमें गंधक; शोरा और राल—इनमें से प्रत्येक को समभाग मिलाकर चार टंक की एक गोली बनाएं और गोली के बीच में एक छेद कर दें ।

इसके पश्चात् मुलहटी के फूल चबाकर मुंह में रख लें। फूंक मारे तो उसमें से अग्नि भभककर निकलने लगती है और मुंह भी नहीं जलता।

अग्नि का अपने आप जल उठना

(1) ऊंट की लीद जलाएं। जब वह निर्धूम अंगार हो जाय, तब शहद में बुझाकर डिब्बी में रख लें। आवश्यकता के समय उसे फोड़कर रखते ही हवा लगने से उससे स्वत: ही आग जल उठेगा।

(2) बिना बुझे चूने में फासफोरस मिलाकर उसे कपड़े में भरकर पीतल के बर्तन में रख लें। फिर उसके ऊपर थोड़ा सा पानी डालते ही अग्नि अपने आप जल उठेगी।

(3) नौसादर को तथा नोनी गंधक तथा तवाको पोटली में बांधकर, उस पर पानी डालकर मसलने से ही अपने आप अग्नि जल उठती है।

अग्नि से शैया न जले

चीनिया कपूर और हल्दी को पान के रस में घोटकर छोटी-छोटी बत्तियां बनाकर छाया में सुखाकर रख लें। इन बत्तियों को आग लगाकर शैया पर डालने से शैया नहीं जलेगी।

बिना आग से पानी उबलना

दो गिलास लेकर पानी से भर दें। फिर एक में सोड़ा और दूसरे में नींबू का सत डाल दें। इन दोनों गिलासों के पानी को जब मिलाया जाएगा तब वह बिना आग पर तपाये ही उबलने लगेगा।

जलते हुए रूमाल को सिर पर रखना

पहले सिर पर उत्तम तेल लगाये फिर ग्वारपाठे का रस निकालकर सिर पर मलें। पश्चात् रूमाल को तेल में भिगोकर जलाएं और उस जलते हुए रूमाल को सिर पर रख लें तो सिर के बाल नहीं जलेंगे।

बिना दीपक के उजाला

स्वच्छ सिरके को सीसी में भरकर रख लें। उसमें तबकिसर

हरताल डालने पर शीशी में ऐसी रोशनी लगेगी कि बिना दीपक के ही उजाला हो जाएगा।

दीपक में रत्नों सी ज्योति दिखाई देना

काले सर्प की चर्बी को दीये में जलाने से उसमें से रत्नों जैसी ज्योति निकलती हुई दिखाई देती है।

अग्नि सम्बन्धी विभिन्न प्रकार के कौतुकों का ऊपर वर्णन किया गया है, अब हम अन्य प्रकार के कौतुकों का वर्णन करते हैं; इन कौतुकों को दिखाकर दर्शकों को आश्चर्यचकित किया जा सकता है।

कांटे चबाना

(1) द्रोणपुष्पी के पत्तों को चबाकर उनका रस मुंह में रखें। पश्चात् बबूल के कांटे चबाएं तो कोई हानि न होगी।

(2) बड़ पत्तियां नामक जंगली बूटी को चबाकर बाद में कटेली चबाने से न तो कांटे चुभते हैं व न ही कड़वी ही लगती है।

भूमिगत खजाने से सर्प को हटाना

गिरकरनी, सफेद चमेली, सफेद आक, मूली वच और कटेली इन सबको पीसकर पांव में लेप करके भूमिगत खजाने के पास जाने से सर्प और यक्ष दूर हट जाते हैं।

बिच्छू उत्पन्न करना

(1) मिट्टी के एक कुल्हड़ में भैंस का गोबर भरकर ऊपर से गधे का मूत्र डाल दें। फिर उसीमें थोड़ा-सा दही और बूरा डालकर किसी कूड़े-करकट वाली जगह में गाड़ दें। आठ दिन बाद निकालकर देखें तो उसमें बड़े-बड़े बिच्छु पैदा हुए मिलेंगे।

(2) निरगुंडी के बीच में अकोल का तेल लगाकर भूमि में डाल दें तो कुछ ही समय में वहां पर असंख्य बिच्छु पैदा हो जायेंगे।

मुर्गें लड़ते हुए न हटें

चकमक पत्थर और लोहे के चूर्ण को अलग-अलग पीसकर रख लें। एक मुर्गे की आंख में चकमक पत्थर का चूण और दूसरे मुर्गे की आंख में लोहे के चूर्ण को डाल दें तो वे दोनों आपस में कट-कट कर मरना शुरू कर देगें। जब तक अलग नहीं किए जायेंगे लड़ते ही रहेगे।

पानी के अन्दर से हाथ सूखा निकलना

एक घड़े में पानी भरकर उसमें गेरू का चूर्ण डाल दें। फिर उसमें से हाथ बाहर निकालें तो हाथ सूखा निकलेगा।

बैंगन का उछलना

वर्षाकालीन समय में मंगलवार या रविवार को एक नर मेंढ़क को मारकर ले आवें। उसके मुंह में मिट्टी भरकर दो-चार उर्द के दाने डाल दें फिर उसका मुंह ऊपर की ओर रखकर पृथ्वी में गाड़ दें तथा पानी से सिंचाई करते रहें। जब बेल निकलकर फली लगे और दाने पक जाऐं तब उसमें से उर्द निकाल कर रख दें। इस उर्द को बगनों से भरी टोकरी में डालने से सब बैंगन उलट-पुलट होने तथा उछलने लगेंगे।

शराब को दूध बनाना

शराब के अन्दर आम का सूखा बोर डाल देने से वह दूध जैसी हो जाती है।

पानी को दूध जैसा करना

मदार तथा बड़ और गूलर के दूध को एक पात्र में रखकर उसमें पानी भरने से पानी दूध जैसा हो जाता है।

नींबू को उछालना

कागजी नींबू की दो फांकें करके, उनमें पारा और हल्दी भरकर दोनों का मुंह बन्द करके ऊपर से डोरा लपेट दें। इस नींबू को जब तेज धूप में रखा जाएगा अथवा अग्नि का ताप दिया जाएगा तो वह उछलने-कूदने लगेगा।

बिगड़े घी को सुधारना

बिगड़े घी को सुधारने के लिए कड़ाही में भरकर अग्नि पर चढ़ाएं। जब वह खूब गर्म हो जाए तब उसमें प्याज की एक गांठ डाल दें तो घी सुधर जाता है।

नगाड़ा फूटे जैसा बोले

अगर सीसार की खाल को किसी नगाड़े के पास जलाया जाय तथा नगाड़ा बजाया जाय तो फूटा नगाड़ा की तरह आवाज निकलेगी।

अण्डे का नचाना

अण्डे में छेद करके उसमें एक अंक पारा भरकर मोम लगा कर मुंह बन्द कर दें, फिर बालू धूप में बिछा दें। जब बालू गर्म हो जाय तब उसके ऊपर अण्डा रख दें तो वह उंछलने लगेगा।

अण्डे से आज्ञा पालन करवाना

कांच के पात्र में नमक का तेजाब भरकर उसमें अण्डा डाल दें और उसे डूबने-उछलने के लिए कहें, तो अण्डा उसमें डूबने-उछलने लगता है।

तन्दूर से रोटियों का बाहर उछलना

एक अखरोट या बादाम लेकर उसकी मींगी निकाल दें और खोल में पारा, गंधक तथा शोरा तीनों को समभाग भरकर खोल को बन्द कर दें। उस खोल को जैसे ही तन्दूर में डाला जाएगा वैसे ही उसकी सभी रोटियां उछलकर बाहर आ पड़ेंगी।

अण्डे का फव्वारे पर नाचना

अण्डे को खाली करके पानी के फव्वारे पर छोड़ देने से वह उसमें ऊपर उछलता रहता है। जहां हवा न चल रही हो वहीं पर यह तमाशा चल सकता है।

दर्पण में भिन्न-भिन्न सूरतें दिखाई देना

लाल कनेर और अम्लवेद को मिलाकर पीस लें और उसे

दर्पण पर लगाकर अपनी शक्ल देखें तो भिन्न प्रकार की शक्ल दिखाई देगी।

भोजन करते हुए वमन हो

बगुले की बीठ का मस्तक पर तिलक करने से उसे भोजन करने वाला जो व्यक्ति देखता है वह वमन कर बैठता है।

चित्र का हंसना

बीख हुटी को गंधक के चूर्ण में सानकर अग्नि पर डालकर चित्र के सामने धुंआ दें तो चित्र हंसता हुआ सा मालूम होता है।

लाल फूल को सफेद करना

नोनी गंधक की धूनी कनेर के लाल फूल को देने से वह सफेद हो जाता है।

आयुर्वेदीय ग्रन्थों में यत्र-तत्र इनके प्रयोग आज भी मिलते हैं जिनके कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं :—

अष्टांग संग्रह में लिखा है :—

अथ योगा प्रवश्यन्ते वृहस्पतिकृता: शिवा: ।
यान सेव्यमानो नृपति शत्रुभ्यो नेति जघ्नताम् ॥

निम्नलिखित योगों का आविष्कार बृहस्पति ने किया और जिनके सेवन से राजा को शत्रु कभी नहीं मार सकता है।

सविष पदार्थ को निर्विष करना

(1) **सामग्री**—बेलगिरी, आठकी यवक्षार, पाटला हींग, काली मिर्च, काश्मरी और पल्लकी।

विधि :—इन सब वस्तुओं को कूट कर अष्टगुण जल में क्वाथ करें। चतुर्थांश रहने पर छान लें, फिर इस क्वाथ को लकड़ी, जल, घास, शस्त्र, शय्या, कुर्सी, मेज, आभूषण और घर में छिड़क दें तो इसके फलस्वरूप विषयुक्त पदार्थ विषहीन हो जाते हैं।

(2) **सामग्री** :—लिसोड़ा, पाटला, अतिविषा, मजीठा, सहजने की छाल, सारिवा पूनर्नवा, वासा की जड़ को

छाल, केथ, जंबीरा, नींबू और वृषभ तथा बैल का रक्त ।

विधि :—इसको मिलाकर काढ़ा कर ले लें। फिर इसमें थोड़ा-सा बैल का रक्त मिलाकर शय्या आदि काम में आने वाली वस्तुओं पर छिड़क दें। इसके प्रभाव से विषयुक्त पदार्थ विषहीन हो जाते हैं।

गरदोष दूर करना तथा काम-शक्ति में वृद्धि करना

सामग्री :—चार प्रकार के लोहों का चूर्ण या भस्म 1-1 पल, त्रिफला, उटंगन के बीज, अजमोद, क्षीरकाकोली, पिप्ली, विदारी कन्द, मुलेठी आदि ।

विधि :—उपरोक्त वस्तुओं को पीसकर चूर्ण बना लें, फिर 1 पल सुवर्ण पत्र अथवा भस्म 1 पल। यह बृहस्पति का आनिष्कृत योग है, इसके सेवन करने से मनुष्य की काम-शक्ति में वृद्धि होती है, गरदोष दूर हो जाता है।

वशीकरण मन्त्र और तन्त्र

बचपन से ही मेरी रुचि यन्त्र-मन्त्र और तन्त्र सम्बन्धी रही है। मूलभूत कारण पैतृक रूप से इन विद्याओं की ओर रुझान भी है। किसी भी धर्म या किसी भी सम्प्रदाय अथवा किसी भी विषय के अन्तर्गत ज्ञान का मुझे आभास हुआ है मैंने उसे प्राप्त करने और सीखने का पूरा-पूरा प्रयास किया है और धीरे-धीरे सफलता की एक-एक सीढ़ी चढ़ता रहा हूं। मैंने कई मन्त्रों-यन्त्रों तथा तन्त्रों की साधना की तथा उनकी गहराई तक तैरकर इच्छा-नुसार सफलता प्राप्त की है। किसी यन्त्र के बारे में या मन्त्रों के बारे में जैसा भी बताया गया है, मैंने ठीक वैसा ही उसका प्रभाव पाया है।

ऐसा कहा जाता रहा है कि मुसलमानी मन्त्र तथा तन्त्र ऐसे अचूक हैं कि जिनका प्रभाव अचूक और त्वरित गति से होता है। मन्त्र या तन्त्र किसी भी धर्म या सम्प्रदाय का क्यों न हो उसे यदि अटूट श्रद्धा, पूर्ण विश्वास और आदर रूप लेकर किया जाय तथा क्रियाकाल में विधि-विधान का विशेष ध्यान रखा जाय तो उसका प्रभाव अवश्यम्भावी होता है। साधक की सिद्धि को देख कर जन सामान्य चमत्कृत रह जाता है। तन्त्रों के प्रयोग करने और उसका फल प्राप्त करने में तो कोई विशेष बाधा अथवा अड़चन नहीं आती है। परन्तु मन्त्र-साधना और फल प्राप्त करने में अज्ञानता के कारण अनेक रुकावटें और मुश्किलें आती हैं। मन्त्रों में विशेष शक्ति या यों कह लीजिए कि उसकी मूलभूत शक्ति या कुल शक्ति केवल उसके उच्चारण, स्वर और लय के साथ-साथ यति पर आती है। किस मन्त्र का उच्चारण किस प्रकार किया जाय यह भली प्रकार जानना और समझना आवश्यक है, उसके बाद उसकी साधना की जाय तो सफलता असंदिग्ध हो जाती है।

इसीलिए कहा जाता है कि गुरु के बिना गति नही होती। ध्यान रहे किसी भी विद्या को जानने वाला व्यक्ति ही गुरु है। गुरु ही आपको बताएगा कि इस मन्त्र में दिए गए शब्दों में से किस शब्द का उच्चारण किस प्रकार किया जाना चाहिए अन्यथा भार्यां रक्षतु भैरवी की जगह भार्यां भक्षतु भैरवी हो जाएगा। यहीं पर मैं ऐसी ही एक छोटी-सी भूल के द्वारा कैसा अनथ हो जाता है इससे सम्बन्धित एक घटना का उल्लेख करना आवश्यक समझता हूं······बात मार्च 1973 की है। वह घटना आज ज्यों की त्यों ही मुझे भली प्रकार स्मरण है। मैं अपने कार्यालय में बैठा कार्य कर ही रहा था कि यकायक टेलीफोन की घंटी टनटना उठी। अहमदाबाद के एक मिल मालिक ने कहा—"पंडित जी ! आप येन-केन प्रकारेण यथाशीघ्र अहमदाबाद पधारें तथा हम पर जो भारी विपत्ति आई है उससे उबारें।' मैं असमंजस में पड़ गया। अगले दो दिन बम्बई से आये हुए एक सेठ को अनुष्ठान पूर्ण करवाना था, मैंने अन्ततः चार दिन बाद अहमदाबाद पहुंचने का आश्वासन दिया, सेठ ने अनमने भाव से हूं कहा। खैर !

मैं नियत समय पर उक्त सेठ के यहां पहुंचा। कुछ ही देर में थकावट से निवृत्त हुआ। स्नान इत्यादि कर पूजा में बैठा। ध्यान की अवस्था में पाया कि सेठ के परिवार पर अलक्ष्मी की छाया अर्थात् दरिद्रता की छाया मंडरा रही है। व्यापार चौपट होता जा रहा था, मित्र और सगे-सम्बन्धी तथा साझेदार सभी हाथ झटक चुके थे। मैं सारी बात समझ चुका था। पूजा से निवृत्त होने पर सेठ का सारा परिवार बड़े हॉल में इकट्ठा हुआ। वहीं सेठ ने अपनी समस्या मेरे सामने रखी।

'पण्डितजी ! ईश्वर ही जानता है मेरे ऊपर क्या वज्रपात हुआ है कि मैं दिवालियेपन की स्थिति पर पहुंच गया हूं। आप ही कोई उपाय सुझावें। मैं कुछ भी करने को तैयार हूं। मैंने कहा—'सेठजी, धैर्य धारण करें। जब आया हूं तो मैं कुछ करूंगा भी। आपके प्रश्न का उत्तर कल दूंगा। पर मैं अभी आपका पूजा स्थान देखना चाहता हूं।'

सेठ यकायक उठ तथा कहा—'आइए !' मैंने उनके साथ

चलकर पूजा-स्थान देखा और रही-सही शंका भी जाती रही। दिन भर व्यस्त रहा। ज्यों-ज्यों लोगों को मालूम होता गया, आते रहे। रात के 11 बज चुके थे, पूरी तरह से थक चुका था अतः शेष कल कहकर लेट गया।

प्रातःकाल ब्रह्म वेला में उठा, नित्य कर्म से निवृत्त हो ध्यान लगाने बैठा। मन में बेचैनी थी। मन-मस्तिष्क अस्थिर था। रह-रहकर सारा ध्यान सेठ की समस्या की ओर ही जाता था।

पूजन कर गणपति का स्मरण कर बाहर आया। देखा पूजा-गृह से समवेत स्वर-लहरी वेदपाठ की जा रही है। कदम यकायक उधर ही मुड़ गए। चुपचाप पूजागृह में जाकर एक रिक्त आसन पर बैठ गया। सेठ, सेठानी, दोनों लड़कियां, पुत्र एवं पुत्र-वधू सभी 'श्री सूक्त' का पाठ कर रहे थे। सामने ताम्रपत्र पर श्री यन्त्र एवं यन्त्रराज वीसा उत्कीर्ण किए हुए रखे थे। मैं सुनता जा रहा था—यकायक मुस्कुरा उठा। कुछ देर बाद बरबस फिर मुस्कुरा उठा। सेठ से रहा नहीं गया, अतः पूछ बैठे—'पण्डितजी आप हंसे क्यों?'

मैंने कहा—यों ही, आप अपना क्रम न तोड़े, पाठ करते रहें।'

जब बार-बार मैं मुस्कुरा पड़ता तो सेठ ने जिद की—'पण्डितजी! आपके मुस्कुराने में जरूर कोई भेद है। कहना ही होगा। विश्वास है निराश नहीं करेंगे।'

मैंने कहा—'आप पाठ करें! स्वयं समझ आ जायेगी।' पाठ का क्रम फिर चालू हुआ और पांचवें श्लोक पर आते ही बरबस मैं फिर हंस पड़ा।

खैर पाठ पूरा हुआ। इतने में सेठ की लड़की बोल पड़ी—'पण्डितजी! आप पांचवें श्लोक पर ही बार-बार हंसते थे, क्या राज है?'

मैंने कहा—'इस घर पर जो दरिद्रता के बादल छाए हैं उसका कारण भी यही श्लोक है।'

सेठ ने स्पष्टीकरण चाहा।

मैंने कहा—'आपके द्वारा किया गया पाठ ही सर्वनाश का कारण है।'

'कैसे ?'

मैंने कहा—'अलक्ष्मीर्मे नयश्तां त्वां वृणोमी' अर्थात् जो अलक्ष्मी अर्थात् दारिद्रय का नाश करे, उस लक्ष्मी को वरण करना चाहता हूं किंवा पाना चाहता हूं के स्थान पर आप कहते हैं—'लक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमी'—अर्थात् जो लक्ष्मी का नाश करे उसे वरण करना चाहता हूं अर्थात् दरिद्रता।'

सेठ के परिवार को बात समझ में आ गई। मैंने कहा—यही नहीं आपके दक्षिण दिशा में पूजा स्थल बना रखा है जो सर्वथा अशुभ है।'

सेठ के आग्रह पर मैं एक सप्ताह तक वहां रुका रहा एवं शुभ मुहुर्त में पुनः श्री यन्त्र की प्राण-प्रतिष्ठा करवाकर उन्हें श्री सूक्त का अभ्यास भी करवाया। आज मां भगवती की कृपा से वह परिवार लाखों में खेल रहा है।

इसीलिए कहा है गुरु बिना ज्ञान नहीं। जैसे संगीत में शब्दों में जादू होता है परन्तु उन शब्दों के जादू को जगाया केवल स्वर, लय और उच्चारण से जा सकता है। उसी प्रकार मन्त्र के शब्दों में जादू एवं शक्ति तो है परन्तु इस जादू को जगाकर अपने अनुकूल करके इच्छापूर्ति के लिए उसके उच्चारण का ज्ञान होना जरूरी है। इसीलिए मेरी विनम्र प्रार्थना है कि आप यदि अधिक परिश्रम और निराशा से बचना चाहते हैं तो सद्गुरु प्राप्त करके निम्न प्रयोग को करें। सफलता आपके कदम चूमेगी—आज मैं आपको मुसलमानी इल्म के कुछ अचूक और सरल तन्त्र-मन्त्र दे रहा हूं जिसको करके इच्छानुसार फल प्राप्ति आप कर सकते हैं। हां, चाहिए तो केवल श्रद्धा, विश्वास और पूर्ण निष्ठा।

वशीकरण पुतलियां

मुसलमानी इल्म में वशीकरण का बहुत जबरदस्त प्रभावशाली और अचूक तन्त्र है। 1967 में एक मुसलमान तांत्रिक ने

इससे सम्बन्धित जानकारी मुझे दी थी और बताया था कि इस प्रभावशाली तन्त्र का उपयोग किसी भी परिस्थिति में भूलकर भी वासना पूर्ति के लिए नहीं किया जाना चाहिए। इसका प्रयोग केवल तभी किया जाना चाहिए जब आपका किसी से सच्चा प्रेम है और आप उसके बिना रह ही नहीं सकते। इतना ही नहीं आप उसे हर हालत में प्राप्त करना चाहते हैं यहां तक कि उससे शादी करने को तत्पर हैं। तब इस प्रयोग का प्रभाव चमत्कारिक रूप से स्पष्ट दृष्टिगोचर होगा। मैंने इस प्रभाव का प्रयोग अनेक जगह देखा है और इस अचूक, चमत्कारिक और प्रभावशाली तन्त्र को इसी वादे पर लिया था कि अपने जीवन में मैं इसका प्रयोग भूलकर भी निजी स्वार्थ के लिए नहीं करूंगा और न ही किसी ऐसे व्यक्ति को बताऊंगा जो इसे वासना पूर्ति के लिए उपयोग में लेना चाहे। पाठकों से मेरी प्रार्थना है कि इसका प्रयोग पूर्ण सावधानी और उचित इच्छा के लिए ही करें, वासना-पूर्ति के लिए नहीं। यदि आप ऐसा करेंगे तो उससे हानि वाले अहित के लिए आप स्वयं भागी होंगे।

यदि आप इसका प्रयोग अपनी प्रेमिका के लिए करना चाहते हैं तो शुक्रवार के दिन शुद्ध मोम लेकर एक स्त्री की और दूसरी पुरुष की पुतली बनायें (यदि आप वशीकरण किसी मित्र पुरुष के लिए करना चाहते हैं तो मोम से दोनों पुतलियां पुरुष ही बनायें।) इसके बाद स्त्री पुतली पर अपनी प्रेमिका का नाम लिख दें और पुरष वाली पर अपना लिख दें। इसके बाद इन दोनों पुतलियों को एक साफ शुद्ध ऐसे कमरे में रख दें जहां किसी का आना-जाना न हो। अपनी पुतली इस शुद्ध कमरे की पश्चिमी दीवार के साथ लगाकर खड़ी करे और अपनी प्रेमिका की पुतली कमरे की पूर्वी दीवार के साथ खड़ी करें, जिससे दोनों पुतलियां एक-दूसरे के आमने-सामने हों। इसके बाद शुक्ल पक्ष की प्रति-पदा तिथि को आधी रात के 12 बजे कमरे में धूप-दीप लोबान जलाकर इन दोनों पुतलियों के बीच नेत्र मूंदकर निम्न मन्त्र को एक हजार बार पढ़ें।

'युनब्बूनहुम कहवअल्ला वलज्जीना आमनु अशद हूब्बार'

जब तक मन्त्र समाप्त न हो जाय आंख नहीं खोलना चाहिए।

इसी बीच यदि कोई आवाज दे या बुलावे तो बोलना नहीं चाहिए, मन्त्र समाप्त होने पर पुतलियों को थोड़ा और खिसका दे। 40 दिन तक यही क्रम रहे तथा मन्त्र जाप करके उन तुतलियों को हर रोज इतना आगे बढ़ायें कि 40वें दिन दोनों एक-दूसरे से लिपट या मिल जायें। चालीसवें दिन सात फूल चमेली के और सात सफेद इलायची हिना के इत्तर में भिगोकर अपने पास रख दें। जब 40वें दिन भी रात में मन्त्र पूरा कर लें उस रात्रि को यह मन्त्र ऊंची आवाज में पढ़ना चाहिए। मन्त्र पूर्ण होने पर दोनों पुतलियों को लेकर एक-दूसरे से छाती से लड़ाकर लिपटा दें। फिर उस समय वहां गड्ढा खोदकर पुतलियों को उसी प्रकार लिपटी हुई अवस्था में गड्ढे में लिटाकर उसके चारों ओर और उसके ऊपर फूल और इलायची रखकर ढक दें और गड्ढे को भर दें। उसके बाद इसी स्थान पर नारियल के तेल का दीपक जलाकर रख दें। यह दीप जलता रहना चाहिए अर्थात् हर रोज वहां पर नारियल के तेल का दीपक जलना चाहिए। मन्त्र पूर्ण होने के कुछ ही दिनों में आपकी प्रेमिका या प्रेमी स्वयं ही आपकी ओर इस प्रकार खिंच जाएगा जैसे चुम्बक की ओर लोहा खिंचकर चला आता है अर्थात् आप दोनों का मिलन पूर्ण रूप से हो जाएगा।

इस तन्त्र के रहस्य के बाद उसने प्रेम में पूर्णरूप से और सहज में सफलता प्राप्ति के लिए एक और मन्त्र बताया। जो नितान्त अचूक सिद्ध मात्र 21 से 30 दिन के भीतर प्रभाव करने वाला है। इस मन्त्र को हमारे जानने वाले ने पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से किया और उसे सौ प्रतिशत सफलता प्राप्त हुई।

अपनी प्रेमिका के सिर के कुछ बाल प्राप्त करें। इसके बाद इन बालों को कैंची से बारीक-बारीक काटकर उन्हें मिट्टी के पात्र में डालकर रुई की बत्ती डालकर दीये को रोगनेचातुन से भरकर रख दें और दीपक जलाकर इस दीप का मुख अर्थात् लौ अपनी प्रेमिका के घर की ओर कर दें। यह बात याद रखनी चाहिए कि यह अमल एक साफ-सुथरे कमरे में धूप-दीप जलाकर शुक्रवार की रात्रि को 12 बजे करना चाहिए।

दीपक जलाकर और उसकी लौ का मुख अपनी प्रेमिका के

मकान की ओर करके एक टांग पर खड़े होकर मन-ही-मन अपनी प्रेमिका की शक्ल का ध्यान करके उसका नाम लें। और साथ-ही-साथ यह मन्त्र पढ़ें—'......अशुद्ध हवातन' यह मन्त्र 21 रात तक हर रोज एक हजार बार करना चाहिए। मन्त्र से पहले खाली स्थान पर अपनी प्रेमिका का नाम ले अर्थात् अशुद्ध हवातन से पहले प्रेमिका का नाम ले। इस मन्त्र के चमत्कारिक शक्ति के प्रभाव से महीने भर में ही आपको अपने लक्ष्य में सफलता मिलेगी और इसी बीच उसका पत्थर हृदय भी मोम होकर पिघलता जाएगा तथा वह स्वयं आपसे आकर मिलेगी।

यहां मैं एक शत्रुदमन सम्बन्धी तन्त्र दे रहा हूं जो मुझे मेरे एक मौलवी मित्र से बहुत समय पहले मिला था। इतना स्पष्ट कर दूं कि इसका प्रयोग छोटी-छोटी बात या छोटे-छोटे झगड़ों पर नहीं किया जाना चाहिए। इसका प्रयोग तब करें जब कोई बिना बात ही आपसे शत्रुता पर उतर आए और आपको हानि पहुंचाने की चेष्टा करे अथवा आपके सम्मान या मान-मर्यादा को हानि पहुंचाने या मिटाने पर तुला हो।

किसी प्रकार चील का एक अण्डा प्राप्त करें। इसके बाद सात रोज तक सात बार पानी में गोता लगाएं। गोता देते समय अपने शत्रु का ध्यान करके 'तबाह हो, बर्बाद हो।' सात दिन करने के बाद आठवें दिन काली स्याही से बारीक कलम से यह मन्त्र उस चील के अण्डे पर इस प्रकार लिखें कि वह पूरा आ जाये और उसका कोई भी भाग शेष न रह जाये। इसके बाद उस अण्डे को लोबान की धूप देकर धरती में गड्ढा खोदकर उसमें रख दें और उसके ऊपर कीकर अर्थात् केर के कोयले की आग सुलगा दे और साथ ही ऊंची तेज आवाज में बैठकर शत्रु का नाम लेकर या उसका ध्यान करके कहें—'तबाह हो, बर्बाद हो।' कुछ देर बाद अण्डा फूट जाएगा और तभी उसका प्रभाव आपके शत्रु पर आरम्भ हो जाएगा और कुछ ही दिनों में आप स्वयं अपनी आंखों से शत्रु को तबाह और बर्बाद होते हुए देखेंगे। यन्त्र इस प्रकार है—

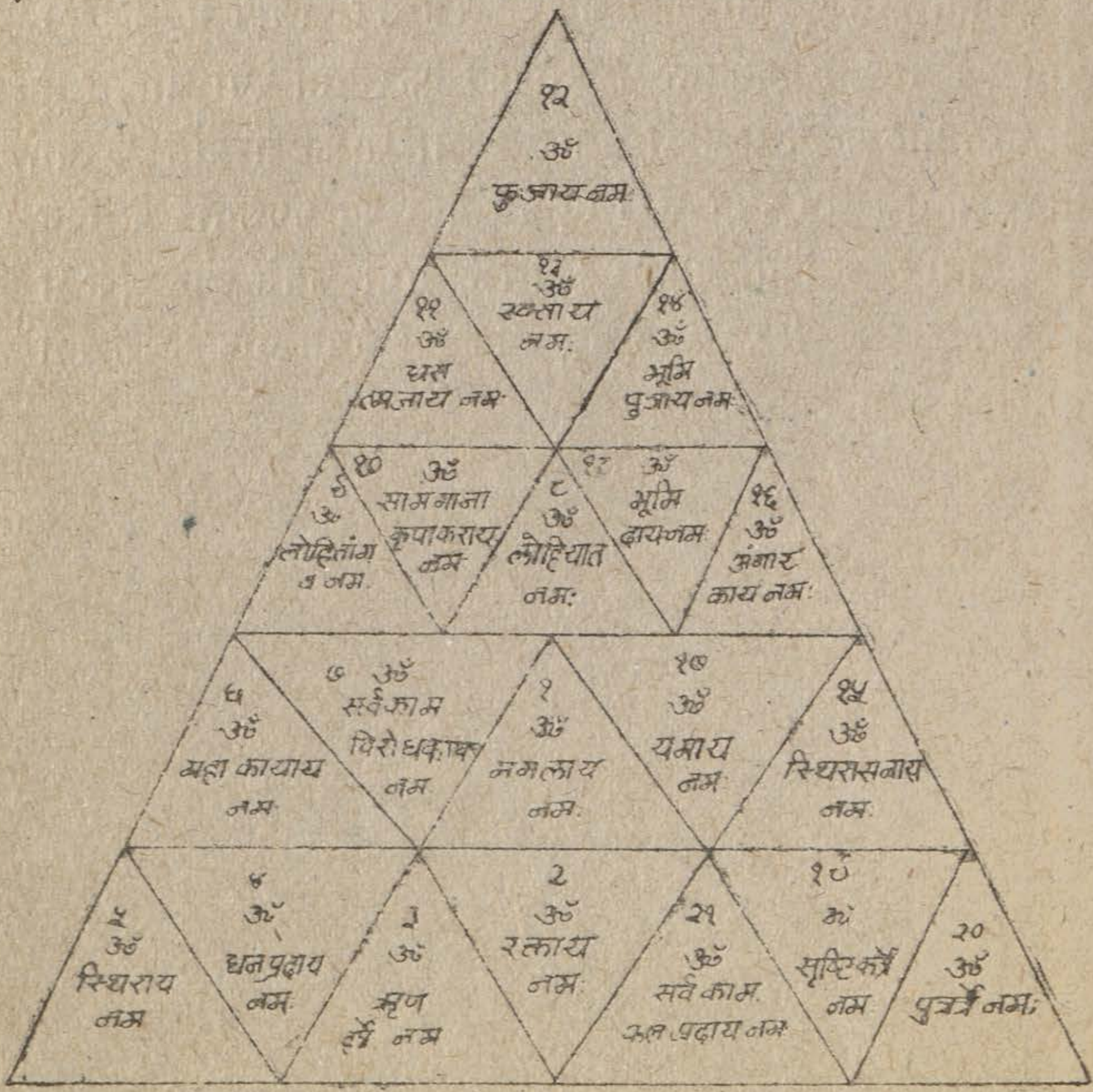
117	111	795 अली	
1919	9999	714	
721	512		
313			

ध्यान रहे इस यन्त्र में अक्षर अंक उर्दू लिपि में लिखने चाहिए। अन्त में एक बात मैं आपको फिर बता देना चाहता हूं कि मन्त्र पाठ करने से पहले उसके उच्चारण का अभ्यास करना आवश्यक है। शत्रु दमन के लिए इस यन्त्र को मंगलवार के दिन या शनिवार के दिन दोपहर में लिखें तथा सबसे छोटे अंक से लिखना आरम्भ कर सबसे बड़े अंक को सबसे बाद में लिखना चाहिए।

मंगल शांति प्रयोग

प्राय: लोग मंगल से भयभीत रहते हैं तथा उसकी अशुभता एवं अमंगल एवं प्रतिकूलता की निवृत्ति तथा शुभता, अनुकूलता, मांगलिकता के लिए यहां-वहां ज्योतिषियों, पंडितों, कर्मकांडियों मंत्रज्ञों, तांत्रिकों के पास जाते हैं और प्राय: विफलता का दामन थाम लेते हैं। ऐसे सज्जनों के लिए मंगल यन्त्र दे रहा हूं। इसका प्रयोग करने पर 100 प्रतिशत सफलता निश्चित है।

यन्त्र



सर्वप्रथम दोहरी लाइन से एक त्रिकोण बनायें तथा उसमें 21 त्रिकोण चित्रानुसार बनायें एवं नामांकन करें। यन्त्र बनाते समय 21 से आरम्भ करना चाहिए।

(1) ॐ मङ्गलाय नमः
(2) ॐ रक्ताय नमः
(3) ॐ ऋणहर्त्रे नमः
(4) ॐ धनप्रदाय नमः
(5) ॐ स्थिरासनाय नमः
(6) ॐ महाकायाय नमः
(7) ॐ सर्वकाम विरोधकाय नमः
(8) ॐ लोहिताय नमः
(9) ॐ लोहितांगाय नमः
(10) ॐ सामगानां कृपाकराय नमः
(11) ॐ धरात्मजाय नमः
(12) ॐ कुजाय नमः
(13) ॐ रक्ताय नमः
(14) ॐ भूमिपुत्राय नमः
(15) ॐ भूमिदाय नमः
(16) ॐ अंगारकाय नमः
(17) ॐ यमाय नमः
(18) ॐ सर्वरोग प्रहारिणे नमः
(19) ॐ सृष्टिकर्त्रे नमः
(20) ॐ प्रहर्त्रे नमः
(21) ॐ सर्वं काम फलप्रदाय नमः

अंकों का क्रम सुविधार्थ त्रिभुजानुसार निम्न प्रकार है—

12
11 13 14
9 10 8 18 16
6 7 1 17 15
5 4 3 2 21 19 20

मन्त्र—'ॐ ह्लां ह्लूं सः खं खः'

यह षडाक्षर मन्त्र अपने आप में सर्वथा फलदायक है।

विनियोग—ॐ मंगलमन्त्रस्य विरूपाक्ष ऋषिः गायत्री छन्दः मंगल देवता, सर्वेष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः' ऐसा कह जल छोड़े।

अंगन्यास

ॐ विरूपाक्ष ऋषये नमः शिरसि

ॐ गायत्री छन्दसे नमो मुखे

ॐ मंगल देवतायै नमो हृदये

करन्यास

ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः

ॐ ह्लां तर्जनीभ्यां नमः

ॐ ह्लूं मध्यमाभ्यां नमः

ॐ सः अनामिकाभ्यां नमः

ॐ खं कनिष्ठिकाभ्यां नमः

ॐ खः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः

ध्यान

जपाभं शिव स्वेदजं हस्तपद्मै र्गदा शूल शनीर्वरं धारयन्तम् ।
अवन्ती समुत्थं सुमेषासनस्थं धरा नन्दनं रक्त वक्त्रं समीडे ॥1॥

ध्यानोपरांत शिव पीठ की मूल मूर्ति की कामना करते हुए अथवा त्रिकोण ताम्रयन्त्र की स्थापना कर प्राण-प्रतिष्ठा आवाहन और उपचार कर मंगल की पूजा कर पूजा आवरण करें।

रक्तमाल्यांबरधरः शक्ति शूल गदाधरः ।
चतुर्भुजो मेषगमो वरदः स्याद्धरासुतः ॥1॥

ध्यानोपरांत इस प्रकार आह्वान, स्थापन, आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, स्थान, वस्त्र, गंध, पुष्प समर्पित करें।

अंग पूजा

ॐ हृदयाय नमः

ॐ ह्लां सिरसेस्वाहा

ॐ ह्लं शिखायै वषट्

ॐ सः कवचाय हुम्

ॐ खं नेत्र त्रयाय वौषट्

ॐ खः अस्त्राय फट्

भौम पूजा

यन्त्र में स्थापित कोष्ठों में निम्न मन्त्रों से पूजन करें—

(1) ॐ मङ्गलाय नमः

(2) ॐ भूमिपुत्राय नमः

(3) ॐ ऋण हर्त्रे नमः

(4) ॐ धनप्रदाय नमः

(5) ॐ स्थिरासनाय नमः

(6) ॐ महाकायाय नमः

(7) ॐ सर्वकाम विरोधकाय नमः

(8) ॐ लोहिताय नमः

(9) ॐ लोहिताक्षाय नमः

(10) ॐ सामगानां कृपाकराय नमः

(11) ॐ धरात्मजाय नमः

(12) ॐ कुजाय नमः

(13) ॐ भौमाय नमः

(14) ॐ भूतिदाय नमः

(15) ॐ भूमिनंदनाय नमः

(16) ॐ अंगारकाय नमः

(17) ॐ यमाय नमः

(18) ॐ सर्वरोगापहारकाय नमः

(19) ॐ स्टष्टिकर्त्रे नमः
(20) ॐ प्रहर्त्रे नमः
(21) ॐ सर्वकाम फल प्रदाय नमः

दस दिक्पाल पूजा

(1) ॐ इं इन्द्राय नमः
(2) ॐ अं अग्नये नमः
(3) ॐ यं यमाय नमः
(4) ॐ नं त्रिनेत्रये नमः
(5) ॐ वं वरुणाय नमः
(6) ॐ वां वायवे नमः
(7) ॐ कुं कुबेराय नमः
(8) ॐ ईं ईशानाय नमः
(9) ॐ ब्रं ब्रह्मणे नमः (ऊर्ध्व)
(10) ॐ अं अनन्ताय नमः (अधः)

शस्त्र/आयुध पूजा

ॐ वज्राय नमः
ॐ शक्तये नमः
ॐ दण्डाय नमः
ॐ खड्गाय नमः
ॐ पाशाय नमः
ॐ अंकुशाय नमः
ॐ गदायै नमः
ॐ त्रिशूलाय नमः
ॐ पद्माय नमः
ॐ चक्राय नमः

अब आवरण पूजा कर धूप-दीप-नैवेद्यादि से पूजन करें, अर्घ्यं दें, प्रणाम करें।

छः लाख जप होने पर भगवान मंगल प्रसन्न होते हैं। छः लाख जप होने पर 1/10 आहुति हवन अनिवार्य है।

दारिद्रय निवारणार्थ लक्ष्मी प्रयोग

प्रिय पाठक !

इस छोटी-सी पुस्तक में मैं साधकों और पाठकों के लिए महालक्ष्मी से सम्बन्धित एक अत्यंत दुर्लभ प्रयोग दे रहा हूं। इन मंत्रों के प्रयोग से कोई भी सद्गृहस्थ, स्त्री या पुरुष साधक प्रयोग कर सकता है। ये मन्त्र अत्यंत प्रभावशाली तुरन्त फल-दायक, ऐश्वर्य, धन, वैभव देने वाला है। सभी मन्त्र गोपनीय होने के साथ-साथ पूर्ण प्रभावशाली हैं। इन यंत्रों के सिद्ध करने में यदि कहीं त्रुटि भी रह जाय तो भी कम-से-कम हानि नहीं होती।

लक्ष्मी बीज मन्त्र प्रयोग

'श्रीं'

यह एक अक्षर का महालक्ष्मी बीज मन्त्र है। अतः साधक चाहे तो इस बीज मन्त्र का मानसिक जाप निरंतर कर सकता है। चलते-फिरते, उठते-बैठते, यहां तक कि सोते समय भी उपरोक्त मन्त्र का जाप मन-ही-मन नियमित रूप से किया जाता रहना चाहिए। इससे निश्चय ही उसे आर्थिक उन्नति की तथा व्यापारिक सफलता की प्राप्ति होती है। इस मन्त्र जाप के लिए किसी भी प्रकार के यन्त्र या विधि-विधान अथवा पूजा की आवश्यकता नहीं है। इतना ही नहीं, मंत्र को सिद्ध करने की भी आवश्यकता नहीं है। सामान्यतः पांच लाख जप होने पर सफलता स्पष्ट दिखाई देने लगती है। इस मन्त्र के लिए गणना की भी आवश्यकता नहीं है।

व्यापार लक्ष्मी मन्त्र

मन्त्र :—ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद-प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

यह मन्त्र अत्यन्त महत्वपूर्ण माना गया है और सोलह लाख मन्त्र जाप होने पर इसे सिद्ध माना गया है। इस मन्त्र का ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण श्री यन्त्र के सामने जप किया जाय तो विशेष सफलता प्राप्त होती है। श्री यन्त्र के सामने अगरबत्ती व घी का दीपक जलाकर नित्य पांच माला या सात माला कमलगट्टे की माला पर फेरना चाहिए। जब सोलह लाख मन्त्र जाप हो जाय तब वह यन्त्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठा युक्त करके दुकान में या व्यापारिक स्थल पर स्थापित कर लेना चाहिए। इस आर्थिक विषमता के युग में व्यापारी बंधु इस यन्त्र और मन्त्र का चमत्कार अनुभव कर सकते हैं।

चतुराक्षरी लक्ष्मी मन्त्र

यह मन्त्र भी अत्यन्त सुख व धन-धान्य देने वाला तथा वैभव पूर्ण जीवन देने वाला मन्त्र है। साधक को या गृहस्थ को प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होकर एक माला इस मन्त्र की अवश्य जपनी चाहिए। सवा लाख मन्त्र जाप होने पर यह मन्त्र सिद्ध होकर सफलता देने लगता है। साधना काल में साधक के सामने विष्णु युक्त लक्ष्मी का चित्र रख कर नित्य 1/3/5 या 7 मालाएं नियमित रूप से फेरनी चाहिए। ध्यान रहे लक्ष्मी-साधना में कमल गट्टे की माला का ही उपयोग होता है। सवा लाख जाप होने पर भी साधक चाहे तो और अधिक जाप कर सकता है। इस मन्त्र जाप के लिए किसी विशेष विधि-विधान की आवश्यकता नहीं है। हां माला अवश्य चैतन्य, मन्त्र सिद्ध और प्राण प्रतिष्ठा युक्त होनी चाहिए।

मन्त्र :—ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं......

दारिद्रय नाशक लक्ष्मी मंत्र

जिसके भाग्य में दरिद्रता लिखी हो और हर संभव असंभव प्रयास करने पर भी जीवन में आर्थिक उन्नति न हो सकती हो उसके लिए यह मन्त्र रामबाण की तरह कार्य करता है।

मन्त्र :—ॐ ऐं ह्री श्रीं क्लीं दारिद्रय विनाशै के जगत्प्रसूत्यै नमः।

नित्य प्रातः 1, 3, 5 मालाएं उपरोक्त मन्त्र की फेरनी चाहिए। माला जाप के समय दृष्टि के समक्ष लक्ष्मी जी का चित्र हो तथा शुद्ध घी का दीपक जलता रहना चाहिए। 12 लाख मंत्र जाप होने पर लक्ष्मी निश्चय ही सिद्ध हो जाती है।

दसाक्षर लक्ष्मी मन्त्र

7 लाख मंत्र जाप होने पर यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। नित्य तीन मालाएं नियमित रूप से प्राण-प्रतिष्ठायुक्त माला पर जाप होना चाहिए। जब 7 लाख मन्त्र का जाप पूर्ण हो जाए तब एक कुंआरी कन्या को खीर का भोजन कराकर पांचों वस्त्र दान देना चाहिए। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध हो जाता है और उसके जीवन में किसी भी प्रकार का अभाव नहीं रहता।

मन्त्र :—ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं।

सिद्ध लक्ष्मी मन्त्र

मन्त्र :—ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध लक्ष्म्यै नमः।

जीवन में सभी प्रकार की उन्नति, सम्पूर्ण ऐश्वर्य और भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति करने के लिए यह मन्त्र सिद्ध करना चाहिए। इसकी साधना कोई भी स्त्री या पुरुष कर सकता है। इस मन्त्र जाप के लिए किसी भी प्रकार की विशेष साधना या विधि-विधान की आवश्यकता नहीं है। सोलह लाख जाप पूरा होने पर साक्षात् लक्ष्मी वरदान देती है।

साधक को चाहिए कि जाप के समय अपने समक्ष विष्णुयुक्त लक्ष्मी का सौम्य चित्र रखे तथा धूप दीप अगरवत्ती जलाकर कमलगट्टे की माला से जितना अधिक हो सके अधिक-से-अधिकतम ध्यान व जाप करे। जब सोलह लाख मन्त्र जप पूर्ण हो जायें तो सोलह कुंआरी कन्याओं को भोजन कराकर उन्हें वस्त्र और दान दे। इस प्रकार लक्ष्मी सिद्ध होने पर धन-धान्य, ऐश्वर्य, वैभव, भूमि-भवन, यश-कीर्ति, स्वास्थ्य, आयु, यश, बल, प्रसिद्धि, वाहन, पुत्र सभी कुछ प्राप्त होने लगता है।

कुछ विशिष्ट सावर मंत्र

(1) मृत संजीवनी विद्या मंत्र

हों ओं जों सा ॐ भूर्भुवः स्वाहाः। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टि वर्धनम्। उर्वारुक मिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् हों ओं जू सः ओं भूर्भुव स्वाहा।

108 बार अर्थात् एक माला नित्य फेरने से समस्त कार्यों में साधक को सफलता प्राप्त होती है। 'अधिकस्य अधिकम् फलम्' के मूल भाग को ध्यान में रखना चाहिए। स्वास्थ्य-रक्षा एवं रोग निवारण के लिए यह अचूक उपाय है।

(2) देह रक्षार्थ

ॐ नमो परमात्मने परब्रह्म मम शरीरे पाहि पाहि कुरु-कुरु स्वाहा।

किसी भी शुभ तिथि को 11 हजार मन्त्र जाप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। फिर 108 बार नित्य जपने से शरीर की पूर्ण रक्षा होती है।

(3) देह रक्षार्थ

ॐ नमः वज्रकाकोण जिसमें पिण्ड हमारा पैण ईश्वर कुंजी ब्रह्मा का ताला मेरे आठों याम का यति हनुमंत रखवाला।

प्रयोग विधि उपरोक्त मंत्र के सामान है।

(4) रोग हरण

ॐ सं सां सिं सीं सुं सूं सें सैं सों सौं सुं सं सः वं वां विं वीं वुं वूं वें वैं वों वौं वं वः सः अमृत वरचे स्वाहा।

एक बर्तन में थोड़ा जल लेकर उसे इस मन्त्र से 21 बार अभिमंत्रित करे व रोगी को पिला दे या रोगी स्वयं पी ले तो रोग निवृति में सहायता मिलती है।

दस हजार मन्त्र जाप से जप सिद्ध करने के बाद मात्र तीन बार मंत्रोचारण करने पर कार्य सिद्ध हो जाता है।

(5) पेचिश के लिए

ॐ नमो कामरूदेश कामाक्षी देवी जहां क्षीर सागर के बीच उपजा पानी। अरे रक्त पेचिश तौर कौन ठिकाना। अमुक (नाम) के अक्षर खोंचा जो रहा उपजाय। नरसिंह बरसे क्षण में चल जाय। 'अमुक' अंग नहीं रोगपीर गुरू ने बांध दिया जंजीर। आज्ञा हाड़ी दासी चंडी की।

पीतल के किसी बर्तन में जल को उपरोक्त मन्त्र से ग्यारह बार अभिमंत्रित कर रोगी को पिलाने पर पेचिश से छुटकारा मिल जाता है।

(6) संतान-प्राप्ति

ॐ ह्रीं लज्जा जल्यं ठः ठः लः ॐ ह्रीं स्वाहा ।

स्त्री जब रजोदर्शन से शुद्ध हो जाय तो मृगशिरा नक्षत्र में कृष्ण मृगचर्म पर बैठ कर वह स्त्री उपरोक्त मन्त्र का 108 बार स्वयं जप करे या अन्य कोई उसे सुना दे । साथ ही पंचमुखी हनुमानजी का पूजन करे, सवाया भोग लगाकर बन्दरों को खिलाए तो गर्भ धारण में सहायता मिलती है ।

(7) सर्वकार्य सिद्धि

ॐ परब्रह्म परमात्मने नमः उत्पत्ति स्थितः प्रलय कराय ब्रह्म हरिहराय त्रिगुणात्मने सर्वकौतुक निदय दर्शयदप्तयाय नमः मंत्र, तंत्र सिद्धि कुरु-कुरु स्वाहा ।

मन्त्र प्रयोग से पूर्व इसे सिद्ध कर लेना चाहिए । सिद्धि 21 दिन में सवा लाख जप पूर्ण करने से होती है । यह सिद्धि साधना दीपावली या होली को आरम्भ करें । इसके बाद कभी भी 108 बार जप करने से कार्य में सफलता मिलती है ।

(8) भूत प्रेत रोग आदि दूर करने का साबर मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरू को घोर-घोर इनघोर काजी की किताब घोर मुल्ला की बांग घोर रेगर की कुंड घोर धोबी की कुंड घोर पीपल का पान घोर देव की दिवाल घोर आपकी घोर बिखेरता चल पर घोर बिठाता चल वज्र का किंवाड़ तोड़ता चल सार का किंवाड़ तोड़ता चल कुन-कुन सो बन्द करता चल भूत को पलीत को देव को दानव को दुष्ट को मुष्ट को चोट को पेट को मेले को घरेले को उलके को बुलके को, हिडके को भीड़के को, ओपरी को पराई को, भूतनी को पलेतनी को, डंकनी को, स्यारी को, भूचरी को खेचरी को कलुवे को, मलवे को, उनको मघबायके ताप को, तिजारी को, माथा को, मतबाय को, मगरा की पीड़ा को, पेट की पीड़ा को शांस को, कांस को मरे को मुसाण को कुण-कुण सा

मुसाण कचीया मुसाण भूकीया मुसाण कीटिया मुसाण चीड़ी चोपटा का मुसाण नुईया मुसाण इन्हें को वन्द करी ऐड़ी की एड़ी बन्द करी पीड़ा की पीड़ी बन्द करी, जांघ की झाड़ी बन्द करी, कटिया की कड़ी बध करी, पेट की पीड़ा बन्द करी, छाती की शल बंद करी, शरीर की शीत बंध करी, चोटी बंद करी, नोनाड़ी बहतर कोटा रोम-रोम में घर पिण्ड में दखल कर, देश बंगाल का मनसारा मसेवड़ा आकर मेरा कारज सिद्ध न वरे तो गुरू उस्ताद से लाजे शव्द साचा पींड काचा फूरो मंत्र ईश्वरी वाचा।

यह मंत्र इसलिए महत्वपूर्ण है कि अभी तक यह गोपनीय रहा है तथा सरल और सफलता मूलक है इससे सभी प्रकार के ज्वर ग्रह दोष भूत-प्रेत पिसाच आदि के उपद्रव आदि को समाप्त करने तथा ग्रह बाधा दूर करने में पूर्णरूप से सहायक है।

रविवार को साधक कपड़े पहन कर जंगल में या घर में एकान्त में दक्षिण की तरफ मुंह करके बैठ जाय। सामने लोबान का धूप लगा दे अपने शरीर पर इत्र लगाए तथा तेल का दीपक जला दे, इस प्रकार यह मंत्र 11 रविवार तक करने पर सिद्ध होता है तथा प्रत्येक रविवार को 101 माला इत्र मंत्र की फेरना चाहिए। जब 11 रविवार पूर्ण हो जायें तो साधक उस दिन जंगल में जाकर कुछ भांग, सुलफ या अफीम छोड़ दे।

मन्त्र सिद्ध होने पर सात बार इस मन्त्र को पढ़े तो सभी प्रकार की बाधायें भूत-प्रेत आदि को दूर कर सकता है।

मन्त्र सिद्ध होने पर साधक को चाहिए कि वह सामने उपद्रव ग्रस्त व्यक्ति को बिटाकर हाथ में कोई लोहे की चीज या झाड़ू लेकर मन्त्र को सात बार पढ़े तो निश्चय ही भूत-प्रेत चिल्लाता हुवा भाग जाता है।

(9) सर्प झाड़ने का मंत्र

इस मंत्र को शिवरात्रि से आरम्भ करके दूसरे दिन शाम तक इस मंत्र का लगातार जाप करने पर यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। इसमें गणना की आवश्यकता नहीं है। मात्र शिवरात्रि के आरम्भ से दूसरे दिन सूर्यास्त तक जितना भी मन्त्र जाप हो जाये वह सही है पर आसन से उठना नहीं चाहिए।

जब मंत्र सिद्ध हो जाए तो जिस व्यक्ति को सर्प ने काटा हो व्यक्ति के स्थान पर इस मंत्र को तीन बार लोहे की चीज से या झाड़ू से झाड़ दे तो अवश्य ही सर्प-विष उतर जाता है।

मन्त्र :—ॐ नमो सर्परि तू थूलममूला मुख तेरा बना कमल का फूला रे सर्पा बांधू तेरी दादी भुआ जिनको तोको गोद खिलाया सर्पा रे सर्पा बांधू तेरा रतन कटोरा जामे तो कू दूध पिलाया सर्प्पा बीज कीलनी बीज पान मेरा कीला करे जो घाव तेरी दाढ भस्म हो जाय गुरू गोरख भी जाय जलाय ॐ नमो आदेश गुरू को मेरी भक्ति गुरू की शक्ति कुरवो मंत्र ईश्वरी वाचा।

(10) बिच्छू झाड़ने का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरू की कालो विच्छु कंकर वालों उतर बिच्छु न कर टालो उतरे तो उतारूं चढे तो मारूं गुरूड़ मोर पंख हंकालुं शब्द सांचा पींड कांचा कुरूवों मंत्र ईश्वरी वाचा।

एक लाख मंत्र जाप करने पर यह मंत्र सिद्ध हो जाता है जब यह मंत्र सिद्ध हो जाय तो जिस व्यक्ति को बिच्छु ने काटा है उसे सामने बिठाकर उस स्थान पर दोनों हाथों से तेजी से हाथ फेरते हुए मात्र तीन बार इस मंत्र को पढ़ने से बिच्छू उतर जाता है।

(11) बिक्री बढ़ाने का मंत्र

भंवरवीर तू चेला मेरा, खोल दुकान कहा कर मेरा, उठे जो डंडी, बिके ज़ो माल, भवरवीर सोखे नाही जाय।

रविवार के दिन एक कीलो काले उड़द अपने सामने रख कर सूर्योदय से सूर्यास्त तक इस मन्त्र का नियमित रूप से जप करने पर यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

जब यह मंत्र सिद्ध हो जाय तब उन काले उड़दों में से कुछ उड़द लेकर 21 बार मन्त्र पढ़ कर दुकान में बिखेर देवे, इस प्रकार तीन रविवार तक करने पर दुकान की बिक्री दुगनी-तिगुनी हो जाती है, यह निश्चित है।

जैसाकि मैंने बताया है, साबर मंत्र सरल भाषा में होते हैं और आज के अनास्था तथा वैज्ञानिक युग में विश्वास नहीं होता कि ये मन्त्र इतने शक्तिशाली है और इस मन्त्रों से कार्य सिद्ध किए जा सकते है।

परन्तु साधकों ने इन मन्त्रों को सिद्ध किया है और पूरी तरह से लाभ उठाया है, आप भी चाहे तो इन सत्यता को परख सकते है।

●●●